ज्योतिष सार — Compiled and edited with a commentary in Hindi by पं० रमानाथ भट्ट and पं० बालशास्त्री प्रभुणे — Edited and published by बाबू वाराणसी प्रसाद at काशी संस्कृत प्रेस — very brittle condition so the total pages are tissued, last page partly ~~damaged in one side~~ torned in one side damaging few words and neatly repaired. Lithoprint edn., Benares, 1938 Vikram era.

1353

55

Bill No. 3/07-08

32 —

2008-0183

ज्योतिषसार

श्रीयुत३बाबूवाराणसीप्रसादजीकीआज्ञासे
श्रीरमानाथभट्ट औरबालशास्त्रीप्रभुणे इ
न्होनेभाषाटीकासहितबनाया
सोबहुतशोधके जोजोप्रकरण इस्मेनहीरहेसो
वर्षफलइत्यादिसबमिलायकेतीसरीबार
छापा इसग्रंथको लोभबसकोई छापेनहीछापेगा
तोकानूनमुताबिकसरकारसे सजा पावेगा·

वाराणसीप्रसादस्यनियोगेनप्रयत्नतः॥
काशीसंस्कृतमुद्रायामंकितोयंशिलाक्षरैः १
श्रीकाशीजीमे ज्ञानवापीकेपूर्वफाटकपर
श्रीविश्वनाथजीकेपास श्रीयुत३महाराज शि
वलालदुबेजीकेमकानमे काशीसंस्कृतमुद्राय
न्त्रमेछपी जिनकोलेनाहोयउनको इसकार्यके
सम्पादक श्रीबाबूवाराणसीप्रसादजीके
पास या कचौरीगलीमे भाई प्रताप
सिंहजीकेदुकानपरमिलैगी·
मितिआषाढशुक्ल१५चंद्रवारसंवत्१९३८
ताः११माहेजुलाईसन्१८८१ ई०

श्रीविश्वेश्वरोजयतितराम्

ज्योतिषसार

श्रीयुत३बाबूवाराणसीप्रसादजीकी आज्ञासे
श्रीरमानाथभट्ट औरबालशास्त्री प्रभृणे इ
न्होंनेभाषाटीकासहित बनाया
सोबहुत शोधके जोजोप्रकरण इसमेनहीरहेसो
वर्षफलइत्यादि सबमिलायको तीसरीबार॰
छापा इसग्रंथकोलोभबसकोईछापेनहीछापेगा
तोकानूनमुताबिकसरकारसे सजा पावेगा॰

वाराणसीप्रसादस्यनियोगेनप्रयत्नतः॥
काशीसंस्कृतमुद्रायामंकितोयंशिलाक्षरैः १

श्रीकाशीजीमे ज्ञानवापीकेपूर्वफाटकपर
श्रीविश्वनाथजीकेपास श्रीयुत३महाराज शि
वलालदुबेजीकेमकानमेकाशीसंस्कृतमुद्राय
न्त्रमेछपी जिनकोलेनाहोयउनको इसकार्यके
सम्पादक श्रीबाबूवाराणसीप्रसादजीके
पास या कचौडीगलीमे भाईप्रताप
सिंहजीके दुकानपरमिलैगी॰
मिति आषाढशु कृ १५ चंद्रवारसंवत् १९३८
ता॰ ११ माहेजुलाईसन् १८८१ ई॰

श्रीविश्वेश्वरोजयतितराम्

अथज्योतिषसारस्यसूचीपत्रम्

इति सूचीपत्रम्
समाप्तं

अथज्योतिषसारःप्रारभ्यते

श्रीगणेशायनमः

अथज्योतिःसारस्यपूर्वपीठिका॥श्रीगुरुंज्ञानदातारंनत्वा गर्गादिकान्मुनीन्॥ज्योतिःसारस्यव्याख्यानंतन्यतेभाषयास्फुटम् ॥१॥कल्पकेआदिमेंपरमेश्वरने पूर्वकल्पीयजनोंकेकर्मानुसार चतुर्विधसृष्टिरचनाकरकेउनकेनिमित्त वेदादिचतुर्दशविद्याप्रगटकिया उनचौदह १४ विद्यामे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यह चारो वर्णोके धर्मऔरब्रह्मचर्य ग्रहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी ये चारोंआश्रमोंकेधर्म्मकहेहैं जिस्मे अपाने२ स्वधर्ममेसम्पूर्ण लोकरहें।और उत्तमगतीकोप्राप्त होवें सोप्रसंगसे चतुर्दशविद्याकानामभी लिखतेहैं ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्वणवेद ये४ वेदऔरउन्हीचारोंवेदोंके ६ अंगहोतेहैं शिक्षा·कल्पसूत्र· व्याकरण· निरुक्त· ज्योतिष·छंद· ये६अंगऔर चार वेद मिलकर १० हुवे मीमांसा ओन्याय वोपुराण वोधर्मशास्त्र ये चारों मिलकर १४ विद्या हुई और जोकोई आयुर्वेद धनुर्वेद गांधर्व अर्थशासन येचार उपवेदको जुदागिनतेहैं सो अष्टादशविद्यामानतेहैं जोचौदही विद्या सिद्धरखते हैं सो येचारो उपवेदकोक्रमसे चार ४ वेदहीमे अंतरभावकरतेहैं सो वेद त्रिकांडविषयहै कहिये कर्मउपासना ज्ञान ये३विषयहैं तीनोंमेकर्मकांडजोहै उस्मे यज्ञ यागादिककहेहैं॥❋॥ ॥ वेदाहियज्ञार्थमभिप्रवृत्ताःकालानुपूर्वाविहिताश्चयज्ञाः॥तस्मादिदंकालविधानशास्त्रं योज्योतिषंवेदसवेदयज्ञानिति॥❋॥ इस्का अर्थ·वेदजोहै सो यज्ञकेलियेप्रवृत्तहै वह यज्ञ कालज्ञानविनाहोनेनहीसकता इसलियेजोतिषशास्त्रको अवश्यजानना चाहिये जोकोईप्रश्नकरे कि यज्ञयागादिकोमेकालज्ञानका क्याजरूरहै तो उस्को कहना कि अष्ट वर्ष ब्राह्मण मुपनयीत वसंतेब्राह्मणो ग्नीनादधीत दर्शपौर्ण·

मासाभ्यां यजेत इत्यादिक श्रुतियोंमे वर्ष ऋतु दर्शादिक ज्ञानके विना
यज्ञादिक होने नही सकते तस्मात् यज्ञादिकोंमे कालका ज्ञान अ
त्यावश्यक है इसलिये ज्योतिषशास्त्रको अवश्य जानना चाहिये
वह ज्योतिषशास्त्र सिद्धांत संहिता होरा इस भेदसे स्कंधत्रया
त्मक वेदका निर्मल चक्षु है जिसके जाननेसे सम्पूर्ण श्रौत स्मा
र्तादि कर्म सिद्ध होता है ऐसा जो ज्योतिषशास्त्र है उसके अधिका
री ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ये तीनों ही है शूद्रको तो अध्ययनकर्ने
मे महान् दोष लिखा है ॥ श्लो० स्नेहाल्लोभाच्च मोहाच्च यो विप्रोऽज्ञान
तोपि वा । शूद्राणामुपदेशं तु दद्यात्स नरकं व्रजेदिति ॥ अर्थ जो विप्र
स्नेहसे वा लोभसे वा मोहसे शूद्रोंको ज्योतिषशास्त्रादिकोंका उपदे
श करता है सो नरकका भागी होता है ऐसा गर्गऋषीने लिखा है तस्मा
त् शूद्रोंने अध्ययन अध्यापन कभी नही करना और क्षत्रिय वैश्यों
को अध्ययनमात्रका अधिकार है अध्यापनका उनको भी निषेध
है अध्ययन अध्यापनका अधिकारी ब्राह्मण ही है तस्मात् जो ब्रा
ह्मण ज्योतिषशास्त्रका अध्ययन अध्यापन करता है उसको भी पु
ण्य लिखा है ॥ निहंत्यशेषं कलुषं जनानां षडब्दजं धर्मसुखास्पदं स्या
दिति ॥ अर्थ जो विप्र इस शास्त्रको गुरुमुख श्रवणद्वारा सम्यक् प्रका
रसे जानता है और अधिकारी शिष्योंको पढावता है सो मनुष्योंके
अशेष पापको नाश करता है और धर्मशास्त्रोक्त षडब्दज धर्मसुख
का पात्र होता है और सिद्धांतमे भी लिखा है ॥ यो ज्योतिषं वेत्ति नर
स्स सम्यक् धर्मार्थमोक्षाल्लभते यशश्चेति ॥ अर्थ जो विप्र गुरुमुख
से उत्तमप्रकारसे ज्योतिषशास्त्रको जानता है सो धर्म अर्थ काम
मोक्ष यह चतुर्विध पुरुषार्थको प्राप्त होता है और यश भी प्राप्त होता है ।
और गर्गऋषीने लिखा है ॥ ग्रंथतश्चार्थतश्चैतत्कृत्स्नं जानाति यो द्वि
जः ॥ अग्रभुक् स भवेच्छ्राद्धे पूजितः पंक्तिपावन इति ॥ अर्थ ग्रंथसे अ
र्थसे जो द्विज यह सम्पूर्ण ज्योतिषशास्त्रके तत्वको जानता है सो श्रा
द्धादिकमे अग्रभुक् होता है और पूजना है पंक्तिपावन होता है ऐसे
नाना प्रकारके फल अध्ययन अध्यापन करनेवालेको कहे है सिद्धांतादि

कोंमेलिखेहैं इस्से यहस्पष्टहोताहै कि इसशास्त्रकेजाननेका परम फल निरतिशयानंदावाप्तिलक्षण मोक्ष प्राप्त होताहै अबजोकोई कहे किधर्मशास्त्रमेज्योतिषीको औरवैद्यको श्राद्धभोजन करवावनेमेम हान्दोषलिखाहै औरधर्म कार्यमे महान् निंदालिखी है तो श्राद्धा दिकोंमे ज्योतिषियोको निमंत्रण करना नचाहिये तबपूर्ववचनमे श्राद्धमो भोजन करवावनेको गर्ग ऋषीने किस्तरहसे लिखाहै तो प्रश्नकर्त्ताकोकहनाकि तुमने गर्गऋषीके अभिप्रायको न जा नके प्रश्नकिया उनका अभिप्राय यहहै कि जोबिना गुरुमुखसे शा स्त्रकोनजानके दैवज्ञताकोप्राप्तहोताहै सोही पंक्तिदूषक पापी न क्षत्रसूचककहलाताहै उसीकोधर्मशास्त्रमे श्राद्धभोजनकरवाव नेको निषेधलिखाहै यह अभिप्राय अपनेवचनका आपही गर्गऋ षी स्पष्टलिखतेहैं॥ श्लो॰ अविदित्वैव यः शास्त्रं दैवज्ञत्वंप्रप द्यते॥ सपंक्तिदूषकः पापो ज्ञेयोनक्षत्रसूचकइति॥ अर्थ॰ जोगु रुमुखसेशास्त्रनेजानको दैवज्ञताको प्राप्त होताहै सोही पंक्तिदू षकपापी नक्षत्रसूचक कहलाताहै ऐसेजो नक्षत्रसूचकहैं उन्ही कोश्राद्धादिकमेनिषेधधर्मशास्त्रमेलिखाहै औरजोगुरुमुखश्र वणद्वारासिद्धांतग्रंथोंको जानताहै उस्कोतो अवश्यश्राद्धादिक मेनिमंत्रणकरनाचाहिये तस्मात्पूर्वोक्तवचन विरोधहै नही य हजानना औरभीविषयलिखनारहासो ग्रंथविस्तारभयेसे न हीलिखने पीयूषधारादिकग्रंथोमे देखलेना ऐसाजो सर्वोपयोगी ज्योतिष शास्त्रसो संस्कृतकेपरिज्ञान विना उस्कामतलब जान ने नही सक्ते क्योंकि थोडेदिनोसे संस्कृतकापठनपाठन न्यून होनेसे किसीको संस्कृतका अभ्यास रहताहै किसीको नही रहता इसलिये श्री काशी क्षेत्राधिवासी श्री ५ युत बाबूवारा णसी प्रसाद् जीने ज्योतिषसार नामकजो ग्रन्थहै उसका ख ड़ी बोलीमो भाषाटीका करवाया जिस्मे प्रायः सर्वदेशके लो गदेखको उसका मतलब समझे और अतिप्रसन्नहोवें॥ ❋।

तत्रादौ मङ्गलाचरणम्

गणाधीशं नमस्कृत्य शारदां चित्स्वरूपिणीम् ॥
अज्ञानगजगंडघ्नीं गर्गरुल्लादिकान् मुनीन् ॥ १ ॥

टी० ग्रंथकेनिर्विघ्नपरिसमाप्तिकेलिये प्रथम मलःगणेशजीकोनमस्कारकरकों और चैतन्यस्वरूपिणी अज्ञानकोनाशकरनेहारी ऐसीजोसरस्वतीजीताकोनमस्कारकरको औरगर्गाचार्यलल्ल० वसिष्ठ० नारद इत्यादिकजोज्योतिशशास्त्रके प्रवर्त्तक आचार्य हैं उनकोनमस्कारकरको

श्लो० नाना ग्रंथान्समालोक्य दैवज्ञानां चतुष्टये ॥
कुरुतेबालबोधाय ज्योतिःसारमनुत्तमम् ॥ २ ॥

टी० औरसूर्यसिद्धांतादिक नाना प्रकारकेग्रन्थ अवलोकनकरको ज्योतिर्वित्केसंतोषकेलिये औरबालकों कोथोडेमे मुहूर्त्तादिकज्ञान होय इसलिये अत्युत्तमज्योतिस्सारनामकग्रंथकोकरते भये—

तत्रादौसंवत्सरनामपरिज्ञानमाह

टी० अबउसग्रंथमे पहिले संवत्कानामजाननेकाउपायकहते हैं—

श्लो० शकेन्द्रकालोर्कयुतःकृत्वाशून्यरसैर्हृतः ॥
शेषाःसंवत्सराज्ञेयाःप्रभवाद्याबुधैःक्रमात् ३

टी० जिसवर्षमेजोशालिवाहनकाशकहोय उसमे १२ मिलायको ६० सेभागदेकोजोशेषबचे सोउसवर्षकासंवत्जानना उदाहरण जैसाशके १७९० उसमे १२ मिलावनेसे १८०२ भये उसमे ६० साठकेभाग लेनेसे २ शेषरहा इससे उसवर्षमे विभवनाम संवत्होगा—

श्लोकः। सप्तवपंचाग्निकुभिर्युक्तःस्याद्विक्रमस्यहि ॥
रेवायाउत्तरेतीरे संवत्सराख्यातिविश्रुतः ॥ २ ॥

टी० जोशालीवाहनकाशाक है उसमे १३५ मिलावनेसेविक्रमका शकहोताहै ॥ उसीकोनर्मदाकेउत्तरतीरवासीजन संवत् कहते हैं।

श्लो० ॥ संवत्कालोग्रहयुतःकृत्वाशून्यरसैर्हृतः ॥ ॥
शेषाःसंवत्सराज्ञेयाःप्रभवाद्याबुधैःक्रमात् ॥ ३ ॥

टी० संवत्कालमे ९ मिश्रितकरको ६० सेभागलेनेसेजोशेषरहेसो संवत्सरजानना जैसासंवत्१९२५ इसमे ९ मिलावनेसे १९३४ भयेउ

स्मे ६० सेभागलेनेसे १४ शेषरहातोसंवत् १९२५ केवर्षमेचौदहवाँ विक्रमनामकसंवत्सररेवाकेउत्तरतटमेजानना—

अथसंवत्सरनामानि

प्रभवोविभवःशुक्लःप्रमोदोथप्रजापतिः॥ अंगिराःश्रीमुखो भावोयुवाधातातथैवच॥४॥ ईश्वरोबहुधान्यश्चप्रमाथी विक्रमोवृषः॥चित्रभानुःसुभानुश्चतारणःपार्थिवोव्ययः ५ सर्वजित्सर्वधारीचविरोधीविकृतिःखरः॥ नन्दनोविजयश्चै वजयोमन्मथदुर्मुखौ॥६॥ हेमलंबीविलंबीचविकारीशार्व रीप्लवः॥ शुभकृच्छोभनःक्रोधीविश्वावसुपराभवौ॥७॥ प्लु वंगःकीलकःसौम्यःसाधारणविरोधिकृत्॥ परिधावीप्रमा थीचआनन्दोराक्षसोनलः॥८॥ पिंगलःकालयुक्तश्चसि द्धार्थीरौद्रदुर्मतिः॥ दुंदुभीरुधिरोद्गारीरक्ताक्षीक्रोधनःक्षयः९

टी॰ प्रभवादिक६० संवत्सरकेनामनीचेकोष्ठकमेस्पष्टहै- कोष्ठकम्।

१	प्रभव	१३	प्रमाथी	२५	खर	३७	शोभन	४९	राक्षस
२	विभव	१४	विक्रम	२६	नन्दन	३८	क्रोधी	५०	अनल
३	शुक्ल	१५	वृष	२७	विजय	३९	विश्वावसु	५१	पिंगल
४	प्रमोद	१६	चित्रभानु	२८	जय	४०	पराभव	५२	कालयुक्त
५	प्रजापति	१७	सुभानू	२९	मन्मथ	४१	प्लवंग	५३	सिद्धार्थी
६	अंगिरा	१८	तारण	३०	दुर्मुख	४२	कीलक	५४	रौद्र
७	श्रीमुख	१९	पार्थिव	३१	हेमलंब	४३	सौम्य	५५	दुर्मती
८	भाव	२०	व्यय	३२	विलंबी	४४	साधारण	५६	दुन्दुभी
९	युवा	२१	सर्वजित	३३	विकारी	४५	विरोधकृत	५७	रुधिरोद्गा
१०	धाता	२२	सर्वधारी	३४	शार्वरी	४६	परिधावी	५८	रक्ताक्षी
११	ईश्वर	२३	विरोधी	३५	प्लव	४७	प्रमादी	५९	क्रोधन
१२	बहुधान्य	२४	विकृती	३६	शुभकृत	४८	आनन्द	६०	क्षय

अथसंवत्सरफलम्

प्रभवाद्दिगुणंकृत्वात्रिभिर्न्यूनंचकारयेत्॥ सप्तभिस्तुहरे द्भागंशेषंज्ञेयंशुभाशुभं॥१०॥ एकंचत्वारिदुर्भिक्षंपंचद्वा भ्यांसुभिक्षकं॥ त्रिषष्ठेतुसमंज्ञेयंशून्यंपीडानसंशयः॥११

टी॰ प्रभवसंवत्सरसेवर्त्तमानसंवत्सरतकगिनको जोअंकहोउसको

दूना करना उसमेसे तीन कम करके जो बाकी रहे उस्को ७ से भाग लेना जो बचे उस्का शुभाशुभ फल कहना जो १ अथवा ४ शेष रहे तो दुर्भिक्ष कहना ५ वा २ रहे तो सुभिक्ष कहना ३ या ६ रहे तो सम फल कहना शून्य रहे तो उस वर्षमे जनको पीड़ा कहना जैसा कि कोई पूछे संवत् १९२५ मे विक्रम नाम संवत्सर है उस्का फल कैसा तो उस्का क्रम यह है कि विक्रम संवत्सर प्रभवसे गिननेसे चौदह १४ होता है उस्को दूना करनेसे २८ हुवे उसमे तीन कम करनेसे २५ बचे उसमेसा ७ से भाग लेनेसे शेष ४ रहा तो वर्षमे दुर्भिक्ष फल कहना—

संवत्सराधिपमाह

युगं भवेद्वत्सरपंचकेन युगानि च द्वादश वर्षषष्ट्या ॥ भवंति तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ १२ ॥ विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टा अहिर्बुध्न्यः ॥ पितरो विश्वेदेवाश्चंद्राग्नी नासत्यौ च भगः ॥ १३ ॥

टी० ५ वर्षका १ युग होता है ६० वर्षमे १२ युग भये तब बारह १२ युगके १२ अधिपति होते हैं उनके नाम विष्णु १ बृहस्पति २ इंद्र ३ अग्नि ४ त्वष्टा ५ अहिर्बुध्न्य ६ पितर ७ विश्वेदेव ८ चंद्र ९ अग्नि १० अश्विनीकुमार ११ भग १२

अन्यमतेतु

आनंदादिर्भवेद्ब्रह्मा भावादिर्विष्णुरेव च ॥ जयादिः शंकरः प्रोक्तः सृष्टिपालननाशकाः ॥ १४ ॥

टी० आनन्द आदिलेके २० संवत्सरका स्वामी ब्रह्मा है भावादिक २० का स्वामी विष्णु है और जयादिक २० का स्वामी शिव है इनका क्रमसे उत्पत्ति स्थिति संहार फल जानना—॥ अथायनप्रकरणं ॥

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्च तदामरं ॥ भवति दक्षिणमन्यदृतुत्रयं निगदिता रजनी मरुतां हि सा ॥ १५

टी० शिशिर बसंत ग्रीष्म इस ३ ऋतुमे उत्तर तरफ गती सूर्यकी होती है इसलिये इस्को उत्तरायण कहते हैं और वर्षा शरद हेमंत इन तीनोमे सूर्यकी गति दक्षिण तरफ होती है इसलिये इस्को दक्षिणायन कहते हैं उत्तरायण मे देवता ओंका दिन होता है और दक्षिणायनमे देवता ओंकी

रात्रिहोतीहै—

अयनमेंशुभाशुभकर्मकहतेहैं

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठाविवाहचौलव्रतबंधदीक्षाः॥सौ
म्यायनेकर्मशुभंविधेयंयद्गर्हितंतत्खलुदक्षिणेच॥१६॥

टी० गृहप्रवेशदेवप्रतिष्ठा विवाह चौल व्रतबंध मंत्रग्रहणादि दीक्षाइत्या दिशुभकर्मउत्तरायनमे करना औरजोनिंद्यकर्महैं अभिचारादिकसोद क्षिणायनमेकरना— संक्रांतिपरत्वेऋतु॥

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्षट्चर्त्तवः स्युःशिशिरोवसं
तः॥ग्रीष्मश्चवर्षाचशरच्चतद्वद्धेमंतनामाकथितश्चषष्ठः१७

टी० मकरादि २ राशि सूर्यकेभोगनेसेशिशिरादिक६ऋतूहोतेहैं—

१ मकर २ कुंभ	शिशिरऋतु १	७ कर्क ८ सिंह	वर्षाऋतु ४
३ मीन ४ मेष	वसन्तऋतु २	९ कंन्या १० तुला	शरदृतु ५
५ वृषभ ६ मिथुन	ग्रीष्मऋतु ३	११ वृश्चिक १२ धन	हेमंतऋतु ६

मतांतरं॥मेषादितोद्विद्विभभानुभोगाद्वसंतपूर्वाऋतवःषडुक्ताः

टी० मेषादिकदो राशि सूर्यके भोगनेसे वसंतादिक ६ ऋतूहोतेहैं—

१ मेष २ वृषभ	वसंतऋतु १	७ तुला ८ वृश्चिक	शरदृतु ४
३ मिथुन ४ कर्क	ग्रीष्मऋतु २	९ धन १० मकर	हेमंतऋतु ५
५ सिंह ६ कन्या	वर्षाऋतु ३	११ कुंभ १२ मीन	शिशिरऋतु ६

मतांतरम्

चैत्रादिद्विद्विमासाभ्यांवसंताद्यृतवश्चषट्॥दा
क्षिणात्याःप्रगृण्हन्तिदैवेपित्र्येचकर्मणि॥१८॥

टी० चैत्रादिक २ मासमे १ ऋतु इसतरहसे १२ मासमे ६ ऋतू होते हैं सोदक्षिणदेशमे देवपितृकार्यमे प्रसिद्ध हैं—

१ चैत्र २ वैशाख	वसन्तऋतु	३ ज्येष्ठ ४ आषाढ	ग्रीष्मऋतु

५ श्रावण	वर्षाऋतु ३	९ मार्गशीर्ष	हेमंतऋतु ५
६ भाद्रपद		१० पौष	
७ आश्विन	शरदृतु ४	११ माघ	शिशिरऋतु ६
८ कार्त्तिक		१२ फाल्गुन	

मासप्रकरणं॥ पूर्वराशिंपरित्यज्य उत्तरांयातिभास्करः॥
साराशिःसंक्रमास्यास्या न्मासस्त्वेवनहायने॥१९॥॥

टी० पूर्वराशिको छोडके उत्तरराशिमें सूर्यकाआना उस्कानाम संक्रांतीहै सोसंक्रांति मेषादि १२ होतीहै उसीको सौरमास कहतेहैं २ मासका १ ऋतु ३ ऋतूका १ अयन २ अयनका १ वर्षहोताहै—

श्लो० दर्शावधिंमासमुपैतिचांद्रं सौरंतथा भास्कर राशि भोगा
त्त्रिंशद्दिनंसावनसंज्ञमाद्यो नाक्षत्रमिंदोर्भगणाश्रयाच्च २०

टी० शुक्लप्रतिपदासे अमावास्यापर्यंत जोमास उस्को चान्द्र कहतेहैं और सूर्य १ राशिके ११ भोगको २राशिमे जानेसे सौर मास कहते हैं और ३० दिनकामास जोहै उस्कोसावन कहतेहैं और २७ नक्षत्रको चन्द्रके भोगनेसे नाक्षत्र मास जानना—

मासोंके नाम वो देवता

मधुस्तथामाधवसंज्ञकश्च शुक्रःशुचिश्चाथनभोन भस्यः।तथैव ऊर्जश्च सहा सहस्यस्तपस्तपस्यश्च यथाक्रमेण॥२१॥ अरुणोमाघमासेतुसूर्योवैफाल्गुने तथा॥चैत्रमासेतुवेदांगो भानुर्वैशाखसंज्ञकः॥२२॥ज्येष्ठ मासेतथाचेंद्रआषाढेतपतेरविः॥गभस्तिःश्रावणमासे यमोभाद्रपदेतथा॥२३॥सुवर्णरेताश्वयुजिकार्त्तिकेच दिवाकरः॥मार्गशीर्षेतपेन्मित्रः पौषेविष्णुःसनातनः ॥२४॥इत्येतेद्वादशादित्यामासनामान्यनुक्रमात्॥केशवंमार्गशीर्षेतु पौषेनारायणंविदुः॥२५॥माधवंमाघमासेतुगोविंदंचयफाल्गुने॥चैत्रेविष्णुंतथाविंद्याद्वैशाखे मधुसूदनं॥२६॥त्रिविक्रमंतथाज्येष्ठे आषाढेवामनंविदुः ॥श्रावणेश्रीधरंविद्याद्धृषीकेशंतुभाद्रके॥२७॥आश्विने पद्मनाभंच ऊर्जेदामोदरंविदुः॥मार्गशीर्षे वि ११

शालसी पौषे लक्ष्मीश्च देवता ॥ २८ ॥ माघे तु रुक्मिणी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रिनामिका ॥ चैत्रे मासि रमा देवी वैशाखे मोहिनी तथा ॥ २९ ॥ पद्माक्षी ज्येष्ठमासे तु आषाढे कमलेति च ॥ कांतिमती श्रावणे च भाद्रे तु अपराजिता ॥ ३० ॥ पद्मावती आश्विने तु राधा देवी निकार्तिके

टी० द्वादश मासके नाम और बार मासके १२ आदित्य और १२ मासके १२ देवता और १२ मासके १२ देवी के नाम नीचे कोष्टकमे देखनेसे स्पष्ट होंगे —

	मासनाम	मासनाम	सूर्य	देवता	देवी
१	चैत्र	मधु	वेदांग	विष्णु	रमा
२	वैशाख	माधव	भानु	मधुसूदन	मोहिनी
३	ज्येष्ठ	शुक्र	इन्द्र	त्रिविक्रम	पद्माक्षी
४	आषाढ	शुची	रवि	वामन	कमला
५	श्रावण	नभ	गभस्ति	श्रीधर	कांतिमती
६	भाद्रपद	नभस्य	यम	हृषीकेश	अपराजिता
७	आश्विन	इष	सुवर्णरेता	पद्मनाभ	पद्मावती
८	कार्तिक	ऊर्ज	दिवाकर	दामोदर	राधा
९	मार्गशीर्ष	सह	मित्र	केशव	विशालाक्षी
१०	पौषमाघ	सहस्य	विष्णु	नारायण	लक्ष्मी
११	माघ	तप	अरुण	माधव	रुक्मिणी
१२	फाल्गुन	तपस्य	सूर्य	गोविंद	धात्री

वारपरत्वे मासफलम् ॥ ॥ पंचार्कवासरे रोगाः पंचभौमे महद्भयम् ॥ पंचार्किवाराद्दुर्भिक्षं शेषा वाराः शुभप्रदाः ३२

टी० एक मासमे ५ रविवार होय तो जनको रोग होय और ५ मंगल पडे तो महान् भय प्राप्त होय और ५ शनि पडे तो दुर्भिक्ष होय शेष रहे जो बार सो ५ पडे तो शुभ जानना.

पक्ष ॥ ॥ पूर्वापरौ मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ सितनीलसंज्ञौ ॥ पूर्वस्तु देवस्त्वपरश्च पैत्र्यः केचित्तु कृष्णो सितपंचमीतः ॥ ३३ ॥ आरंभशुक्लः प्रवक्तव्यः केचित्कृष्णादिमासके ॥ ३४

टी० मासमे पूर्वदल और परदल इसको पक्ष कहते हैं उसमे पूर्वदलको शुक्लपक्ष और परदलको कृष्णपक्ष कहते हैं अर्थात् शुक्लप्रतिपदा से पौर्णिमा पर्यंत शुक्लपक्ष और कृष्णप्रतिपदा से अमावास्या पर्यंत कृष्णपक्ष होता है उसमे पूर्वपक्ष माने शुक्लपक्ष जो है सो देवताका है और परपक्ष माने कृष्णपक्ष जो है

सोपितरोंकाहै किसी आचार्यकेमतसेशुक्लपंचमीसेकृष्णपंचमीतकशुक्ल
पक्षऔर कृष्णपंचमीसेशुक्लपंचमीतक कृष्णपक्ष होताहै उसमेंप्रथम
शुक्लपक्ष नन्तर कृष्णपक्ष उसको अमांतमास कहना किसीकेमतसे
कृष्णपक्षके नन्तर शुक्लपक्ष सोपौर्णिमांतमासजानना ॥ ॥

अधिकमास ॥ द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्त
था॥ घटिकानांचतुष्केनपतत्यधिकमासकः॥ ३५॥

टी० ॥ ३२ मास १६ दिन ४ घड़ीकेनन्तर अधिकमासका संभव होता
है ऐसा वसिष्ठऋषी कहतेहैं॥

क्षयमास॥ ॥ असंक्रांतिमासोधिमासः स्फुटंस्याद्वि
संक्रांतिमासःक्षयाख्यः कदाचित्॥ क्षयः कार्तिका
दित्रयेनान्यतःस्यात्तदावर्षमध्येधिमासद्वयंच॥ ३६

टी० जोसंक्रांतिरहितमासहै सोअधिकमासजानना औरजो २ सं
क्रांतिकरकेयुक्तमासहैसोक्षयमासजानना सोक्षयमासकदाचित्
आवताहैसोक्षयमासकार्तिक मार्गशीर्ष पौष इनसे अतिरिक्त नही हो
ता और जिसवर्षमे क्षयमासहोताहै उसवर्षमेअधिकमास २ होताहै

तिथिप्रकरणम्॥ ॥ मासभाच्चांद्रभं यावद्गणयेत्तावदे
वतु॥ यावंतिगणनाङ्कानितावत्यस्तिथयःक्रमात्॥ ३७॥

टी० मासनक्षत्रसेदिननक्षत्रतकगिनकोजोसंख्याहोयवहीसंख्यातिथी
कीजानना परंतु पौर्णिमांतमाससेभिन्नना मासनक्षत्र चैत्रादिक्रमसेचित्रा
विशाखा ज्येष्ठा पूर्वाषाढा श्रवण पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी कृत्तिका मृगशिर
पुष्य मघा पूर्वाफाल्गुनीये १२ नक्षत्रहैं॥ ॥ अथतिथिफलानि॥ ॥

प्रतिपत्सिद्धिदाप्रोक्ताद्वितीयाकार्यसाधिनी॥ तृतीयारोग्यदात्रीच
हानिदाचचतुर्थिका॥ ३८॥ शुभातुपंचमीज्ञेयाषष्ठिकात्वशुभामता
॥ सप्तमीतुशुभाज्ञेयाअष्टमीव्याधिनाशिनी॥ ३९॥ मृत्युदात्रीतुनवमी
द्रव्यदादशमीतथा॥ एकादशीतुशुभदाद्वादशी सर्वसिद्धिदा॥
॥ ४०॥ त्रयोदशी सर्वसिद्धाज्ञेयाचोग्राचतुर्दशी॥ पुष्टिदापौर्णि
मास्तेपात्वमावास्याशुभातिथिः॥ ४१॥ ॥ टी० प्रतिपदा दिपो
डशतिथीका शुभाशुभफल अधस्थितचक्र देखनेसे मालूमहोगा —

स्वामी ॥ वन्हिर्विरिंचो गिरिजा गणेशः फणिर्विशाखो दिनकृन्म
हेशः ॥ दुर्गोतको विष्णुहरिः स्मरश्च शर्वः शशी चेति पुराणदृष्टाः
॥४२॥ अमायाः पितरः प्रोक्तास्तिथीनामधिपाः क्रमात् ॥४३॥
टी० ॥ पूर्वोक्त षोडश तिथी के १६ देवता भी चक्र मे स्पष्ट होंगे—
संज्ञा ॥ नंदा च भद्रा च जया च रिक्ताः पूर्णेति सर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः
॥ कनिष्ठमध्येष्टफलाश्च शुक्ले कृष्णे भवंत्युत्तममध्यहीनाः ॥४४॥
टी० अब तिथी की संज्ञा और शुक्ल कृष्ण भेद सो फलभेद भी चक्र मे देखने से मालूम (होगा॰
पालन ॥ ॥ कूष्माण्डं बृहती फलानि लवणं वर्ज्यं तिलाम्लं त
था तैलं चामलकं दिवं प्रसवताशीर्षकपालांत्रकम् ॥
निष्पावांश्च मसूरिका फल मथो वृंताकसंज्ञं मधुद्यूतं
स्त्रीगमनं क्रमात्प्रतिपदादिष्वेवमाषोडश ॥४५॥ ॥
टी० ॥ षोडश तिथी मे जो जो पदार्थ वर्ज्य करना सो भी चक्र मे स्पष्ट हो
गा॰ इसी को तिथिपालन कहते हैं ॥

	तिथिफल	स्वामी	संज्ञा	शुक्ल	कृष्ण	तिथिपाल
१	सिद्धि	अग्नी	नंदा	अशुभ	शुभ	कोहड़ा
२	कार्यसाधन	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	बनभंटा
३	आरोग्य	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	नोन
४	हानि	गणेश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	तिल
५	शुभ	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	खट्टा
६	अशुभ	स्कन्द	नन्दा	मध्यम	मध्य	तैल
७	शुभा	सूर्य	भद्रा	मध्यम	मध्य	आंवला
८	व्याधिना	शिव	जया	मध्यम	मध्य	नारियल
९	मृत्युदा	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्य	लउआ
१०	धनदा	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्य	चिचेंडा
११	शुभा	विश्वेदेव	नंदा	शुभ	अशुभ	सिमकादाना
१२	सर्वसिद्धि	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	सर्वसिद्धी	मदन	जया	शुभ	अशुभ	भंटा
१४	उग्रा॰	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	सहत
१५	पुष्टिदा	चन्द्र	पूर्णा	शुभ	अशुभ॰	जुवा
३०	अशुभ	पितर	०	०	०	मैथुन

तिथिकार्याणि ॥ ॥ नंदासु चित्रोत्सववास्तुतंत्रक्षेत्रादि
कुर्वीत तथैव नृत्यम् ॥ विवाहभूषाशकटाध्वयाने भद्रा +

रू कार्याण्यपि पौष्टिकानि ॥ ४६ ॥ जयासु संग्राम बलोप
योगी कार्याणि सिद्ध्यंत्यपि निर्मितानि ॥ रिक्तासु विद्विद्वध
घातसिद्धिर्विषादिशस्त्रादिचपानिसिद्धिं ॥ ४७ ॥ पूर्णासु मां
गल्यविवाहयात्रासपौष्टिकं शांतिककर्मकार्यं ॥ सदैव द
र्शे पितृकर्मचोक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभमङ्गलानि ॥ ४८ ॥
टी० ॥ नंदा तिथी मे १।६।११ आनन्दादिकर्म देवता ओंकार उत्साह कर्म गृह
संबन्धी कर्म क्षेत्र संबन्धी लेनदेन गाना बजावना इत्यादिकृत्य करना २
और भद्रा तिथी मे २।७।१२ विवाह आभूषण गाड़ी रथादिक करना बढना
मार्ग बनावना पौष्टिक कृत्य करना · और जया तिथी मे ३।८।१३ युद्ध से
नाके उपयोगी तलवार बंदूक वगैरे बनावने से कार्य सिद्ध होता है · और
रिक्ता तिथी मे ४।९।१४ किसीका नाश करना अथवा अभिचारादि सि
द्धि विषशस्त्रादि कर्म करने से सिद्धि होगी · पूर्णा तिथी मे ५।१०।१५ मंगल
कार्य विवाह यात्रा माने प्रवासादिक जाना पौष्टिक शांतिक कर्म कर
ना और अमावास्या मे सदा पितृकार्य करना मंगल कार्य करना नही · —
अमावास्यायोगः ॥ ॥ अमावास्यां भवेद्वारो यदा भूमि
सुतस्य वै ॥ जान्हवी स्नानमात्रेण गोसहस्रफलं लभेत् ४९
अमावा सोमवारेण रविवारेण सप्तमी ॥ चतुर्थी भौमवा
रेण विषुवत्सदृशं फलम् ॥ ५० ॥ सिनीवाली कुहूर्वापि यदि सो
मदिने भवेत् ॥ गोसहस्रफलं दद्यात्स्नानं चेन्मौनिना कृतम्
॥ ५१ ॥ दृष्टचन्द्रा सिनीवाली नष्टचंद्रा कुहूस्मृता ॥
टी० ॥ अमावास्या को भौमवार होय उस दिन गंगास्नानमात्र से सहस्र गो
दान का फल प्राप्त होता है · ॥ ४९ ॥ अमावास्या सोमवार को · रविवार को स
प्तमी · और चतुर्थी भौमवार को होय तो विषुवत् संक्रांति का फल होता है
५० ॥ अमावास्या दृष्टचंद्र होय तो · सिनीवाली और नष्टचंद्र होय तो कुहू संज्ञा ·
उस दिन सोमवार होय · उसमे मौन होयके स्नान करे तो · सहस्र गोदान का फल होता
अमायां व्यतीपातयोगः ॥ श्रवणाश्विधनिष्ठार्द्रानागदैवत (है ५१
मस्तकैः ॥ यद्यमा रविवारेण व्यतीपातः स उच्यते ॥ ५२ ॥
टी० ॥ श्रवण · अश्विनी · धनिष्ठा · आर्द्रा · आश्लेषा · मृग · इस नक्षत्र मे ·

अमावास्या रविवारयुक्त होय तो व्यतीपात योग होता है॥

अर्द्धोदययोगः॥ माघमासि रवौ दर्शे व्यतीपाते श्रवणान्विते॥ अर्द्धोदयाभिधो योगः सूर्यपर्वशताधिकः॥ ॥
अयमुक्तो दिवा योगः किंचिन्न्यूनं महोदयः॥ ॥

टी॰ माघमासमे रविवारको अमावास्या व्यतीपात श्रवणनक्षत्रयुक्त होय तो अर्द्धोदय योग होता है॰ वह १०० सूर्यग्रहणसे अधिक जानना॰ यह दिनमे योग कहा इस्से किंचितू न्यून होय तो महोदय योग जानना॰

अथ कपिलाषष्ठी॥ ॥आश्विने कृष्णपक्षे च षष्ठ्यां भौमोऽथ रोहिणी॥ व्यतीपातस्तदा षष्ठी कपिलानंतपुण्यदा॥

टी॰ आस्विनकृष्णपक्षमे षष्ठी भौमवार॰ रोहिणी नक्षत्र॰ व्यतीपात योग॰ उस दिन कपिलाषष्ठी योग अनंतपुण्यदायक होताहै

अथ वारुणी योगः॥ वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी॥ गंगायां यदि लभ्येत सूर्यग्रहशतैः समा॥ शनिवारसमायुक्ता सा महावारुणी स्मृता॥ शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतभिषा यदि॥ महामहेति विख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत्॥ ॥ ॥ ॥

टी॰ शततारका युक्त चैत्र कृष्णा त्रयोदशी होय॰ उस दिन गंगाप्राप्त होय तो १०० सूर्यग्रहणके समान फल होताहै॰ शनिवारयुक्त होय तो महावारुणी जानना॰ शुभ योगयुक्त शनिवार शतभिषा होय तो महामहावारुणी जानना॰ सो तीन कोटी कुलका उद्धार करती है॥ ॥

युगादयः॥ नवमी कार्त्तिके शुक्ला वैशाखे च तृतीयका॥
त्रयोदश्याश्विने कृष्णा तथा दर्शश्च फाल्गुने॥ ॥
कार्त्तिके भूत्कृतारम्भस्त्रेतारम्भस्तु माधवे॥ ॥
फाल्गुने द्वापरारंभ आरंभश्चाश्विने कलेः॥ ॥

टी॰ कार्त्तिक शुक्ल नवमी॰ वैशाख शुद्ध तृतीया॰ आश्विन कृष्णा त्रयोदशी॰ फाल्गुनकी अमावास्या यह तिथी युगादि जानना॰ कार्त्तिकमे कृतयुगप्रारंभ वैशाखमे त्रेतायुगप्रारंभ॰ फाल्गुनमे द्वापरयुगप्रारंभ॰ आश्विनमे कलियुगप्रारंभ होता है॥

युगादिस्वामी॥ क्रमाच्छंभुर्हरिर्ब्रह्मा पितरस्तत्रदेवता॥ तिलान्लवणसौवर्णगोधान्यं दद्याद्युगादिषु॥ एता युगाद्यः पुण्याः शुभेवर्ज्या मनीषिभिः॥ तत्राक्षय्यतृतीया तु सर्वकार्येषु शोभना॥ ॥ छ॥ छ॥ छ॥ छ॥ ॥

टी॰ चारयुगके देवता क्रमसे शंभु॰ हरि॰ ब्रह्मा॰ पितर यह जानना॰ चारो युगादिमे तिल लवण सुवर्ण गौ॰ यह दानकरना यह युगादि पुण्यमे शुभ॰ पंडितवे शुभकार्यमे वर्जकरना॰ परंतु उसमे अक्षयतृतीया सर्वकार्यमे शुभजानना॥

मन्वादयः॥ आश्विनेनवमी शुक्ला माघमासे तु सप्तमी॥ भाद्रे चैत्रे तृतीया च कार्तिके द्वादशी तथा॥ आषाढे दशमी प्रोक्ता ज्येष्ठमासे तु पौर्णिमा॥ आषाढी फाल्गुनी चैत्री कार्त्तिकी पौर्णिमा तथा॥ भाद्रे कृष्णाष्टमी प्रोक्ता पौषे चैकादशी सिता॥ अमा भाद्रपदे मासि मन्वाद्यास्तिथयस्त्विमाः॥ अमा मासास्तु करा कांताः विज्ञेयाः परिकीर्त्तिताः॥

टी॰ आश्विन की शुक्ल नवमी॰ माघ शुक्ल सप्तमी॰ भाद्रपद और चैत्र शुक्ल तृतीया॰ कार्त्तिक शुक्ल द्वादशी आषाढ शुक्ल दशमी ज्येष्ठ की पौर्णिमा॰ आषाढी॰ फाल्गुनी॰ चैत्री॰ कार्त्तिकी पौर्णिमा॰ भाद्रपद कृष्ण अष्टमी पौष शुक्ल एकादशी भाद्रपद की अमावास्या यह मन्वादि तिथि जानना इसमे पौर्णिमांत मास करके ग्रहण किया है ॥ छ॥

८ दिशाके स्वामी कहते हैं॥ रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः॥ बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां स्वामी शास्तथा ग्रहाः

टी॰ पूर्वदिशा का स्वामी रवि कहिये सूर्य है आग्नेयी दिशा का शुक्र दक्षिणा का मंगल नैर्ऋत का राहु पश्चिम दिशा का शनी वायव्य दिशा का चंद्र उत्तर दिशा का बुध ईशान्य दिशा का स्वामी बृहस्पती ये आठो दिशा के स्वामी हैं

ग्रहों की जाती कहते हैं॥ ब्राह्मणौ जीवशुक्रौ च क्षत्रियौ भौमभास्करौ॥ सोमसौम्यौ विशौ ज्ञेयौ राहुमंदौ नृपांत्यजौ

टी॰ नवग्रहोंमे बृहस्पति शुक्र ये ब्राह्मण हैं और मंगल सूर्य क्षत्रिय हैं

औरचंद्रबुध वैश्यहैं औरराहुशनिपेअंत्यजहै राहूकेतुल्यकेतूभीअंत्यजजान
नवग्रहोंकेरक्तपीतादिवर्णकहतेहैं॥ रक्तावंगारकादित्यौश्वे
तौशुक्रनिशाकरौ॥ गुरुसौम्यौपीतवर्णौशनिराहूसितौशुभौ॥
टी० मंगलसूर्ययेलालवर्णहैं शुक्रचंद्र श्वेतवर्ण है बृहस्पतीबुधपीत
वर्णहैं शनिराहू असित मानेश्यामवर्णहैं केतूका श्यामहीवर्णजानना.
वारमेजोजोकामकरनेकोसोकहतेहैं
राज्याभिषेकोत्सवयानसेवागोवन्हिमंत्रौषधशस्त्रकर्म॥ सु
वर्णताम्रोर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादिरवौविदध्यात्॥॥
टी० राज्याभिषेक नानाप्रकारकेमहोत्सव असवारीपरबैठना अथवा
यात्राकरना राजसेवा गौ बैल इत्यादिकोंका लेना देना वन्हिकर्महव
नादिमंत्रशास्त्रकाअध्ययन प्रयोगादिक औषधदेना शस्त्रकर्मकहि
ये तलवारकटारइत्यादिकोंकाधारणकरना सोनेकाअलंकारबनाव
नावाधारणकरना तांबेकीवस्तूकालेनाऔरदेना ऊनकीवस्तू चर्म
कीवस्तू काष्ठादिवस्तू सिंहासनपादुकावगेरेकाधारणकरना युद्ध
संग रोजगारइत्यादियेसबकर्मरविवारकोकरनेसेसिद्धहोतेहैं॥
सोमवार॥ शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्यस्त्रीवृक्षकृष्यांबुवि
भूषणाद्याः॥ गीतंक्रतुंसीरविकारशृंगीपुष्पांबरारंभणमिंदुवारे॥
टी० शंख कमल मोती चांदी ऊख भोज्यपदार्थ स्त्री भोग वृक्ष तृण
जल अलंकारादि गाना बजावना यज्ञदधिघृतादि गौमहिष्यादि
पुष्प वस्त्र इत्यादिकर्म सोमवारमेकरना.॥
मंगलवार॥ ॥भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवध्या
भिघाताहवशाठ्यदंभान्॥ सेनानिवेशाकरधा
तुहेमप्रवालरक्तानिकुजेविदध्यात्॥ ॥ ॥
टी० बिगाडकरना असत्यसंबंधीकर्म चोरी विषादिकर्म अग्निक
र्म शस्त्रकर्म वध नाश युद्ध कपट दंभ सेनारखना खानखोदना
धातु सुवर्ण मूंगा इत्यादिककृत्य मंगलवारकोकरना.॥ ॥
बुधवार॥ ॥ नैपुण्यपुण्याध्ययनंकलाश्च शि
ल्पादिसेवालिपिलेखनानि॥ धातुक्रियाकांच

नयुक्तिसंधिव्यायामवादाश्चबुधेविधेयाः॥

टी॰ चातुर्य पुण्य अध्ययन इष्ट कला शिल्पशास्त्र सेवा लिखना त सवीर खींचना धातुसंबंधी क्रिया सुवर्णसंबंधीकर्म मित्रताकर्म मल्लविद्या वाद येकर्म बुधवारको करना॥

गुरुवार॥ धर्मक्रियापौष्टिकयज्ञविद्यामांगल्यहेमांबरवेश्मयात्राः॥ रथाश्वभैषज्यविभूषणादिकार्यंविदध्यात्सुरमंत्रिवारे॥

टी॰ धर्मकरना पौष्टिक यज्ञयागादि विद्याभ्यास मंगलकार्य सुवर्ण वस्त्र गृहसंबंधीकर्म यात्रा रथ अश्व औषध अलंकारादि ये कर्म बृहस्पतवारकोकरना॥

शुक्रवार॥ स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगंधवस्त्रोत्सवालंकरणादिकर्म॥ भूपण्यगोकोशकृषिक्रियाश्च सिध्यंतिमुक्रस्यदिनेसमस्ताः

टी॰ स्त्री गायन शय्या हीरा मणी गंध वस्त्र उत्सव अलंकारादि पृथ्वी संबंधिकर्म गोबैल खजाना खेती इत्यादिकर्मजोहैसोशुक्रवारकोकरना

शनिवार॥ लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्रदासपापानृतस्तेयविषासविधं॥ गृहप्रवेशद्विपबंधदीक्षास्थिरंचकर्मार्कसुतेन्दिकुर्यात्॥

टी॰ लोहा पत्थर सीसा रांगा तलवार भाला इत्यादि दास पाप असत्यचोरी विष अर्कनिकालना गृहप्रवेश हात्तिबंधन उपदेश स्थिरकर्म इत्यादिकर्मशनिवारकोकरना॥

वारकेदेवताअधिदेवता॥ सूर्यादितः शिवशिवागुहविष्णुकेन्द्रकालाःक्रमेणपतयःकथितायहाणां॥ वन्ह्यंबुभूमिहरिशक्रशचीविरिंचिस्तेषांपुनर्मुनिवरैरधिदेवताश्च॥ ॥

टी॰ शिवपार्वती षडानन विष्णु ब्रह्मा इंद्र काल ये ७ क्रमसे सूर्यादि वारोंके देवता जानना और अग्नि जल भूमि हरि इंद्र इंद्राणी ब्रह्मा ये ७ सूर्यादिवारकी क्रमसे अधिदेवता ७ जानना॥

वारदोषाः॥ नवारदोषाःप्रभवंतिरात्रौदेवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणां॥ दिवाशशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्रनिंद्योबुधवारदोषः॥

टी॰ गुरुवार शुक्रवार रविवार इनके वारोंका रात्रिमेंदोषनहीहै और सोम शनि मंगल इनतीनोंकादिनकेदोषनहीमानना और बुधवारकोसर्वत्रनिंद्य जानना॥

सामान्यवारकृत्यं॥ ॥सोमसौम्यगुरुशुक्रवास
राः सर्वकर्मसु भवंतिसिद्धिदाः॥भानुभौमशनि
वासरेषुचप्रोक्तमेवखलुकर्मसिध्यति॥ ॥ ॥

टी॰ सोमबुध गुरु शुक्र इनवारोंमे सर्वकर्म सिद्धिजानना रवि मंगल शनि इनवारोंमे उक्तकार्यमात्रकी सिद्धिजानना॰

तैलाभ्यंगः॥ ॥रविस्तापंकांतिवितरतिशशीभूमि
तनयोमृतिंलक्ष्मींसौम्यःसुरपतिगुरुर्वित्तहरणं॥
विपत्तिंदैत्यानांगुरुरखिलभोगानुगमनंनृणां
तैलाभ्यंगात्संपदिकुरुतेसूर्यतनयः॥ ॥२॥

टी॰ रविवारको तैलाभ्यंग संतापप्रदहोताहै सोमकोकांतिप्रद मंगलकोमृत्युप्रद बुधकोलक्ष्मीप्रद गुरुवारकोवित्तनाशक शुक्रकोतैललगानेसेविपत्तिआतीहै शनिवारकोतेललगानासंपत्तिकारकहोताहै॰

वस्त्रपरिधानम्॥ ॥जीर्णरवौसततमंबुभिरार्द्रमिन्दौ
भौमेशुचेबुधदिनेचभवेद्धनाय॥ज्ञानायमंत्रिणिभृगो
प्रियसंगमायमंदेमलायचनवांबरधारणंस्यात्॥ ॥

टी॰ रविवारको नूतनवस्त्र परिधानकरनेसेजल्दीजीर्णहोगा सोमवारकोनूतनवस्त्रपरिधानकरनेसेअशौचनिमित्तस्नानकेजलसेसदाआर्द्रहीरहेगा॰ मंगलकेरोजपरिधानकरनेसेशोकप्रदहोगा॰ बुधवारकोधनप्राप्ति॰ गुरुवारकोज्ञानप्राप्ति॰ शुक्रवारकोमित्रप्राप्ति॰ शनिवारकोपरिधानकरनेसेमलिनरहेगा॰

क्षुरकर्म॥ भानुर्मासंक्षपयतितथासप्तमार्तंडसुनुर्भौ
मश्चाष्टौवितरतिशुभंबोधनःपंचमासान्॥सप्तैवेंदुर्दशसु
रगुरुःशुक्रएकादशेतिप्राहुर्गर्गप्रभृतिमुनयःक्षौरकार्येषुनून॥

टी॰ रविवारकोक्षौरकरनेसे१महिनाआयुष्यनाशजानना॰ सोमवारकोक्षौरकरनेसे७महिनाआयुष्यवृद्धिजानना॰ मंगलकोआठमहिनाआयुष्यनाश॰ बुधवारको ५महिनाआयुष्यवृद्धि गुरुवारको१॰ महिनाआयुष्यवृद्धि शुक्रवारको११महिनाआयुष्यवृद्धि शनिवारको७महिनाआयुष्यनाशजानना॰ यहगर्ग लल्ल नारद प्रभृतिमुनियोंनेक्षौरकार्यमेलिखाहै—

विद्यारंभः॥विद्यारंभःसुरगुरुसितज्ञेष्वभीष्टार्थदायी

कर्त्तुश्चाशुश्चिरमपिकरोत्यंशुमान्मध्यमोत्र॥ नीहारांशोर्भव
तिजडताप्चताभूमिपुत्रेच्छायासूनावपिचमुनयःकीर्त्तयंत्येवमाद्याः

टी० गुरु शुक्र बुध इनवारोंमे विद्यारंभकरनेसेउत्तमविद्याप्राप्तहोती
है औरचिरंजीवीहोताहै रविवारमध्यमहै सोमवारकोकरनेसेबुद्धीज
डहोतीहै मंगल शनीको मृत्युहोताहै यहनारदगर्गादिमुनियोंनेकहाहै-

अथनक्षत्रप्रकरणम्॥ ॥नक्षत्रानयनप्रकारमाह॥

द्विनिघ्नमासस्तिथियुक्विधूनोभशेषितःस्याद्डुशेषसंख्या
॥मासस्तुशुक्लादिनएवबोध्यःकृष्णेद्विहीनंमुनयोवदंति॥१॥

टी० चैत्रादिगतमास दूनाकरको उसमेशुक्लादिमानसेतिथि मिलावना
फेर१कमकरको २७ काभागलेना जोशेषबचे वह नक्षत्रजानना·
परंतुकृष्णपक्षमे २कमकरको २७ काभागलेको शेषबचेवहनक्षत्र
जानना यहविशेषवसिष्ठादि मुनियोंनेकहाहै·-

अथशुभाशुभनक्षत्राण्याह॥ अश्विनीतुशुभाप्रोक्ताभ
रणीनाशकारिणी॥कार्यघ्नीकृत्तिकाचोक्तारोहिणीसिद्धिदा
बुधैः॥मृगःशुभःशुभश्चार्द्रामध्यमस्तुपुनर्वसुः॥पुष्यःशुभः
सार्पमघापूर्वाःशुक्नाशमृत्युदाः॥३॥उत्तराहस्तचित्राःस्तु
विद्यालक्ष्मीशुभप्रदाः॥स्वातीविशाखेचस्तशुभेमैत्रंसर्वार्थ
सिद्धिदं॥ज्येष्ठामूलंक्रमात्तोयंक्षयनाशार्थहानिदं॥विश्वब्र
ह्मावैष्णवश्चबुद्धिवृद्धिसुखप्रदाः॥५॥वासवंवारुणंशैवंशु
भंभद्रंमृत्युप्रदं॥उत्तराभाद्रकंश्रीदंरेवतीकामदायिनी॥६॥

टी० अश्विनीआदिसे रेवती पर्यंत २८ नक्षत्रका सामान्यशुभाशु
भफल नीचेलिखेकोष्टकमेहै -

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि
शुभ	नाश	कार्यनाश	सिद्धिदा	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शोक	नाश	मृत्यु	विद्या	लक्ष्मी	शुभ
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे
अशुभ	अशुभ	सिद्धि	क्षय	नाश	अर्थहा	वृद्धि	वृद्धि	सुख	शुभ	कल्याण	मृत्यु	लक्ष्मी	कामदा

नक्षत्रपतयः॥ ॥भेशा दस्रयमाग्निकेन्दुगिरिशाः प्रोक्ता
ह्यदितिस्त्वंगिराः सर्पाः कव्यभुजो भगोर्यमरवित्वष्टा वह्याः
मारुतः॥ इंद्राग्नित्वथमित्रइंद्रनिर्ऋतिनीरंचविश्वेविधिर्वै
कुंठोवसुपाशयजैकचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः॥७॥

टी० अश्विन्यादि देवत्यन्न २८ नक्षत्रके २८ स्वामी नीचे कोष्टक मे देखनेसे स्पष्ट होंगे—

नक्षत्र		स्वामी	नक्षत्र		स्वामी	नक्षत्र		स्वामी
१	अ	अश्विनीकुमार	१०	म	पितर	१९	मू	निर्ऋति
२	भ	यम	११	पू	भग	२०	पू	जल
३	कृ	वन्हि	१२	उ	अर्यमा	२१	उ	विश्वेदेव
४	रो	ब्रह्मा	१३	ह	रवि	२२	अ	विधि
५	मृ	चंद्र	१४	चि	त्वष्टा	२३	श्र	विष्णु
६	आ	शिव	१५	स्वा	वायु	२४	ध	वसू
७	पु	अदिति	१६	वि	इंद्राग्नी	२५	श	वरुण
८	पु	अंगिरा	१७	अ	मित्र	२६	पू	अजैकपात्
९	श्ले	सर्प	१८	ज्ये	इंद्र	२७ २८	उ रे	अहिर्बुध्न्य पूषा

अधोमुखनक्षत्राणि॥ ॥मूलाग्नेयमघाद्विदैवभरणी
सर्पाणिपूर्वात्रयंज्योतिर्विद्भिरधोमुखंह्निनवकंभानामि
दंकीर्त्तितं॥ वापीकूपतडागगर्तपरिखाखातौ निधेरु
द्धृतिक्षेपोद्यूतबिलप्रवेशगणितारंभाःप्रसिध्यंतिच ८

टी० मूलकृत्तिका मघा विशाखा भरणी आश्लेषा तीनो पूर्वा ये ९ नक्षत्र अधोमुखसंज्ञकहोनेहैं इननक्षत्रोंमेबावली कूपतलावगढा परिखा धनगाडना और निकालना द्यूत बिलप्रवेश गणितारंभ इत्यादि अधोमुखकार्य जोहैं सो सबकरना·

उर्ध्वमुखनक्षत्राणि॥ ॥पुष्यार्द्राश्रवणोत्तराशतभिषक्
ब्राह्मश्रविष्ठाह्वयान्यूर्ध्वास्यानिनवोदितानिमुनिभिर्धि
ष्ण्यान्यथैतेषुतु॥ प्रासादध्वजघर्मवारणगृहप्राकारस
त्तोरणोच्छ्रायारामविधिर्हितोनरपतेःपट्टाभिषेकादिच॥९॥

टी० पुष्य आर्द्रा श्रवण तीनोउत्तरा शततारका रोहिणी धनिष्टा ये ९ नक्षत्र ऊर्ध्वमुखहोतेहैं इननक्षत्रोंमे देवालय ध्वज मंडपादि गृहकोटतो

रण चंदवा बगीचा राज्याभिषेक इत्यादिक ऊर्ध्वमुख कार्य सब करना॰

तिर्यङ्मुखनक्षत्राणि॥ ॥ज्येष्ठादित्यकराश्विनी मृगशिरः
पौष्णानुराधानिलत्वष्टाख्यानिवदंति भानि मुनयस्तिर्य
ङ्मुखान्येषुतु॥ अश्वेभोष्ट्रतुलायशासभवृषोरश्चादि दं
त्यश्विनौगंत्रीयंत्र हलप्रवाहगमना रंभाः प्रसिध्यंति च॥ १०

टी॰ ज्येष्ठा पुनर्वसु हस्त अश्विनी मृग रेवती अनुराधा स्वाती चित्रा ये ९ नक्षत्र तिर्यङ्मुख होतेहैं इन नक्षत्रोंमें घोडा हाथी ऊंट महिष खर बैल मेढा सूअर श्वान इनकी जोंको लेना और नौका पानी मे डालना हल चलावना यात्रा इत्यादि तिर्यङ्मुख नक्षत्रोंमे तिर्यङ्मुख कर्म करना—

ध्रुवसंज्ञकनक्षत्राण्याह॥ ॥रोहिणीसहितमुत्तरा
त्रयं कीर्तयंति मुनयो ध्रुवाह्वयं॥ बीजहर्म्यनगराभि
षेचनारामशांतिषु हितं स्थिरेषु च॥ ११ ॥ श्री ॥ ॥

टी॰ रोहिणी तीनो उत्तरा ये ४ नक्षत्र ध्रुवसंज्ञक होतेहैं इसीको स्थिर भी कहतेहैं इन नक्षत्रोंमें खेतमो बीज बोना गृह प्रवेश नगरमे प्रवेश॰ राज्याभिषेक॰ बागबगीचा लगावना॰ शांतिकर्म ये सब स्थिरकर्म करना॰—

मृदुनक्षत्राणि तत्कार्यंचाह॥ ॥त्वाष्ट्रमित्रशशि
पूषदैवतान्यामनंति मुनयो मृदून्यथ॥ मित्रकार्य
रतिभूषणांबरो क्रीतिमंगलविधानमेषुतु॥ १२

टी॰ चित्रा अनुराधा मृगशिर रेवती ये ४ नक्षत्र मृदुसंज्ञक होतेहैं॰ इन्हीको मैत्र भी कहतेहैं इन नक्षत्रोंमे मैत्रकार्य स्त्रीसंग अलंकार धारण वस्त्र परिधान गाना बजावना मंगलकार्य इत्यादि कर्म करना—

लघुनक्षत्राणि तत्कार्यंचाह॥ अश्विनीगुरुभक
मैदैवतं साभिजिल्लघुचतुष्टयं मतं॥ पण्यभूष
णकलारतौषधज्ञानशिल्पगमनेषु सिद्धिदम्॥ १३

टी॰ अश्विनी पुष्य हस्त अभिजित् ये ४ नक्षत्र लघुसंज्ञक हैं इन्हीको क्षिप्र भी कहतेहैं इन नक्षत्रोंमे दुकान करना अलंकार धारण करना क्रीडा करना औषध लेना ज्ञान सीखना शिल्पक हिये कारीगरी यात्रा प्रस्थानादि ये काम करनेसे सिद्ध होतेहैं—

तीक्ष्ण नक्षत्राणितत्कार्यंचाह॥ मूलशक्रशिव
सार्पदैवतान्युल्लपंत्यथचतीक्ष्णसंज्ञया॥ भूत
यक्षनिधिमंत्रसाधनंभेदबंधवधकर्मचात्रतु॥१४

टी० मूल ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा ये ४ नक्षत्र तीक्ष्णसंज्ञकहैं इन्हीको दारुणभीकहतेहैं इननक्षत्रोंमे भूतसाधन यक्षसाधन द्रव्यनिकालनेकानिधिमंत्रकासाधन विद्वेषण किसीकोफसावना मारण इत्यादिकर्मकरनेसे तत्कालसिद्धहोतेहैं—

चरनक्षत्राणितत्कार्यंचाह॥ ॥वैष्णवत्रयपुतः
पुनर्वसूमारुतंचचरपंचकमीरितं॥दंतिवाजिकरभै
षवाहनारामयानविधिषुप्रशस्यते॥१५॥ ॥

टी० श्रवणधनिष्ठा शततारका पुनर्वसू स्वाती ये ५ नक्षत्रचरसंज्ञक होतेहैं इन्हीकोचलभीकहतेहैं इननक्षत्रोंमे हाती घोडा वाहनना नाविध बगीचा रथ इत्यादिकोंकाखरीदना अथवा असवारी करना बगीचा वगैरेका लगावना येसबकामकरनेसे शुभहोताहैं—

उग्रनक्षत्राणितत्कार्यंचाह॥ ॥पूर्विकात्रितयमं
तकंमघेत्युग्रपंचकमिदंजगुर्बुधाः॥शाठ्यनाश
विषघातबंधनोत्साहशस्त्रदहनादिषुस्मृतम् १६

टी० पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा भरणी मघा ये ५ नक्षत्र उग्रसंज्ञकहोतेहैं इन्हीकोक्रूरभीकहतेहैं इननक्षत्रोंमेशठताकरना नाश किसीकोविषदेना मारण बंधन उत्साह शस्त्र दहनादि ये सबकर्म करनेसेत्वरित सिद्धहोतेहैं—

मिश्रनक्षत्राणितत्कार्यंचाह॥ ॥हव्यवाहभयु
गंद्विदैवतंमिश्रसंज्ञमथमिश्रकर्मसु॥स्वाभिधा
नसमकर्मसाधनेकीर्तितानिसकलानिसूरिभिः १७

टी० कृत्तिका विशाखा ये २ नक्षत्र मिश्रसंज्ञक होतेहैं इन्हीको साधारणभीकहतेहैं इननक्षत्रोंमेनानाप्रकारमिश्रितकार्यकरनेसे सिद्धहोतेहैं—

अंधादिनक्षत्राण्याह॥ ॥अंधकंतदनुमंदलो
चनंमध्यलोचनमतःसुलोचनं॥रोहिणीप्रभृति

मंदतुष्टयेसाभिजिन्क्रमगणयेत्पुनःपुनः ॥१८॥

टी० रोहिणीसे अंध मंदलोचन मध्यमलोचन सुलोचन ये ४संज्ञा २८ नक्षत्रौंकीक्रमसे जानना उदा० रोहिणी अंधमृग मंदलोचन आर्द्रा मध्यलोचन पुनर्वसू सुलोचन पुष्य पुनः अंध आश्लेषा मंदलोचन मघा मध्यलोचन पूर्वा सुलोचन इसीरीतिसे २८ नक्षत्रौंकी अंधादि संज्ञा जानना—

नष्टवस्तुपरिज्ञानमाह॥ अंधकेलभतेशीघ्रं मंदकेचदिनत्रयात्॥ मध्यकेचचतुःषष्ट्यानप्राप्नोतिसुलोचने ॥१९॥

टी० किसीपृछककने प्रश्नकियाकिहेपंडितजी हमारीहतवस्तूकबमिलेगीतो विचारकरना जोअंधनक्षत्रमेवस्तू गईहोय अथवा अंधनक्षत्रमेपृछककने प्रश्नकियाहोयतोकहनाकिवस्तूजल्दीमिलेगी जोमंदलोचनहोयतो३दिनमेमिलेगी जोमध्यलोचननक्षत्रहोयतो ६४दिनमेमिलेगी सुलोचननक्षत्रहोयतो कहनाप्राप्तीनहीहोगी—

अथदिक्ज्ञानमाह॥ ॥ अंधकेपूर्वतोवस्तुमंदकेदक्षिणेतथा॥ पश्चिमेमध्यनेत्रेच उत्तरेचसुलोचने॥२०

टी० जोपृछककपूछेकिवस्तू किसदिशामेहै अंधनक्षत्रमेवस्तूगईहोयतोपूर्वदिशामेकहना जोमंदलोचनमेगईहोयतोदक्षिणदिशाकहना जोमध्यलोचनमेगईहोयतोपश्चिमदिशाकहना जोसुलोचनमे गईहोयतोउत्तरदिशाकहना·

प्रकारांतरेणगतवस्तुलाभालाभज्ञानमाह॥अंधेसद्यःप्राप्यतेवस्तुनष्टंकष्टात्प्राप्यंमंदनेत्रेचनष्टं॥ दूरात्श्राव्यंमध्यनेत्रेनलभ्यंनश्रोतव्यंनैवलभ्यंसुनेत्रे २१

टी० जोअंधनक्षत्रमेवस्तूगईहोयतोसद्यःप्राप्तिहोगी जोमंदलोचनमेगईहोयतोकष्टसेमिलेगी जोमध्यलोचनमेगईहोयतोदूरसेश्रवणमात्रहोगी लेकीनमिलेगीनही जोसुलोचनमेगईहोयतोश्रवणभीनहीहोगीऔरनमिलेगी·

नक्षत्रसेगतवस्तूपरिज्ञान॥ ॥ मघादिअर्यमांतंचसमीपेवस्तुदृश्यते॥ हस्तादिवरुणपर्यंतमन्यहस्तेचदृश्यते॥२२॥ प्राततारात्र्यंतेतुस्वगृहेवस्तुदृश्यते ॥अश्व्यादिसार्पपर्यंतमहद्दूरंतथा ॥२३॥ ॥

टी० मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी येनक्षत्रोंमेजोवस्तूनष्टहोयअ

थवाप्रश्नकालमेयेनक्षत्रहोयतोसमीपमिलेगीऐसाकहना· हस्तचित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा उत्तराषाढा श्रवण धनिष्ठायेनक्षत्रोंमे वस्तूनष्टहोयअथवा प्रश्नकालमेयेनक्षत्रहोय तोकहियेदूसरेकिसी केहाथमेवस्तूहै कष्टसेमिलेगी शततारका पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा रेवती अश्विनी भरणी येनक्षत्रोंमेगतहोय अथवाप्रश्नकालमेयेनक्षत्रहोयतोकहियेकिअपनेघरसेहीमिलेगी कृत्तिका रोहिणी मृग आर्द्रा पुनर्वसू पुष्य आश्लेषा येनक्षत्रोंमेगन होय अथवाप्रश्नकालमेयेनक्षत्रहोयतो कभीमिलेगीनही—

अथगतवस्तुस्थानज्ञानमाह॥ ॥तिथिवारंचनक्षत्रंप्रहरेणसमन्वितं॥दिक्संख्ययाहतंचैवसप्तभिर्विभजेत्पुनः॥ ॥२४॥एकेनभूतलेद्रव्यंद्वयंचेद्भांडसंस्थितं॥ तृतीयेजलमध्यस्थमंतरिक्षेचतुर्थके॥२५॥तुषस्थंपंचमेतुस्यात् षष्टेगोमयमध्यगं॥सप्तमेभस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणं॥२६

टी॰ प्रश्नकालके तिथिवार नक्षत्रप्रहर इनकीसबकीसंख्याएकत्रकर को १० अंकसे गुणके ७ अंकसेभागलेको जोशेष बचेउस्काफलकहना जो१बचेतो भूमिमेकहना जोदो बचेतोकिसीबरतनमे कहना जो३ बचेतोजलकेबीचमोकहना जो४बचेतो अंतरिक्षकहिये सिकहरवगैरेमो कहना जो५बचेतोभूसाकेभीतरकहना जो ६ बचेतो गोबरमे कहनाजो७बचेतोभस्ममेकहना इसरीतसे स्थाननिश्चय कहना—

अथमद्यारंभमुहूर्त्तमाह॥ ॥रौद्रेपित्र्येवारुणेपौरहूतेयाम्येसार्पेनैर्ऋतेचैवधिष्ण्ये॥ पूर्वाख्येषुत्रिष्वपिश्रेष्ठउक्तोमद्यारंभःकालविद्भिः पुराणैः॥२७॥

टी॰ आर्द्रा मघा शततारका ज्येष्ठा भरणी आश्लेषा मूल पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा ये१० नक्षत्रोंमे नूतन मद्य निकालनेकोआरंभकरना यहकालकोजाननेवाले प्राचीनऋषियोंनेकहाहैं

अथवस्त्रधारणनक्षत्राण्याह॥ ॥रोहिणीपुकरपंचकेश्विमैत्र्युत्तरेपिचपुनर्वसूद्वये॥ रेवतीषुवसुदेवतेचभेनव्यवस्त्रपरिधानमिष्यते॥ २८॥

टी० रोहिणी हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा पुनर्वसू पुष्य रेवती धनिष्ठा ये १३ नक्षत्रोंमे नूतनवस्त्र धारण शुभ होता है—

दुष्टदिनेपिवस्त्रधारणमाह॥ ॥विप्राज्ञयाथ प्युद्वाहे राज्ञापि त्यर्पितंचयत्॥ निंद्येधिष्ण्येपिवारादौवस्त्रंधार्यंजगुर्बुधाः २९

टी० ब्राह्मणके आज्ञासे और विवाहमे और राजालोगोनेजो संतोषसे दिया हुआ ऐसे वस्त्र धारणकरनेमे व्यतीपातादि दुष्टदिनका भी दोषनहीहोता ऐसा आचार्योनेकहाहै—

मौक्तिकादिधारणनक्षत्राण्याह॥ ॥नासत्यपौष्णवसुभेकरपंचकेच मार्तंडभौमगुरुमंत्रिशशांकवारे॥ मुक्तासुवर्णमणिविद्रुमदंतशंखरक्तांबराणिविधृतानिभवंतिसिध्यै ३०

टी० अश्विनी रेवती धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा ये नक्षत्रोंमे और रवि मंगल गुरु शुक्र चन्द्र ये वारोंमे मोती सुवर्ण मणि मूंगा हाथीदांत शंख रक्तवस्त्र इत्यादिधारणकरनेसे शुभ होताहै—

पुंसवननक्षत्राण्याह॥ ॥श्रवणःसकरःपुनर्वसुर्निऋतेर्भंचसपुष्यकोमृगः॥रविभूसुतजीववासराःकथिताःपुंसकनादिकर्मसु ३१

टी० श्रवण हस्त पुनर्वसु मूल पुष्य मृगशिर येनक्षत्रोंमे और रवि मंगल गुरु येवारोंमे लग्नशुद्धीदेखकेपुंसवनकरना पुंसवनकहिये पुरुषहीगर्भमेउत्पन्नहोय इसलिये पुंसवनसंस्कार प्रथमगर्भमेकरना अवश्यहै द्वितीयादिगर्भमेंकृताकृतहैसोपुंसवनसंस्कारगर्भके तीसरेमासमेकरना—

कर्णवेधनक्षत्राण्याह॥ ॥पौष्णवैष्णवकराश्विनिचित्रापुष्यवासवपुनर्वसुमैत्राः॥ संस्वेश्रवण वेधनिधानेनिर्दिशंतिमुनयोहिशिशूनां॥ ३२॥

टी० रेवती श्रवण हस्त अश्विनी चित्रा पुष्य धनिष्ठा पुनर्वसु अनुराधा मृगशिर इनक्षत्रोंमे बालकोंकाकर्णवेधकरनेकोमुनीलोगोनेकहाहै

अन्नप्राशननक्षत्राण्याह॥ ॥रेवतीश्रुतिपुनर्वसुहस्तत्र्यादयतःपृथगपिद्विलयेन्॥ स्युत्तरेषुगदितंदिनयान्नप्राशनंतुकपिभिःपृथुकानां॥ ३३॥

टी० रेवती श्रवण पुनर्वसु हस्त रोहिणी मृग आर्द्रा तीनोउ त्तरा इननक्षत्रोंमे बालकोंको नवान्न प्राशन करवावना—

श्मश्रुकर्मणिनक्षत्राण्याह॥ ॥पुष्येपौष्णेचाश्विनी ध्येंद्वेचशाक्रेहस्तात्रिकेभेष्वदित्यः॥क्षौरंकार्यंवै ष्णवाद्यत्रयेचमुक्त्वाभौमादित्यपातंगिवारान्॥३४॥

टी० पुष्य अश्विनी रेवती मृग ज्येष्ठा हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शततारका येनक्षत्रोंमे और मंगल रवि शनि इनवारोंकोछोडकेश्मश्रुकर्मकरना

श्मश्रुकर्मणिवर्ज्यान्याह॥ ॥भद्रापक्षांतरिक्ता व्रतदिनवसुभूश्राद्धषष्ठीषुरात्रौसंध्यापातारभास्व त्शनिषुघटधनुःकर्ककन्यागतेर्के॥जन्मर्क्षेजन्ममा सेसुरदिनयजनेभूषितोग्रामयायीभुक्तोभ्यक्तोभि षिक्तःसमरदिनगतःश्मश्रुकार्यंनकुर्यात्॥३५॥

टी० भद्रा पौर्णिमा अमावास्या चतुर्थी नवमी चतुर्दशी व्रतदिन अष्टमी प्रतिपदा श्राद्धदिन षष्ठी रात्री सायंकाल व्यतीपातादि दुष्टयोग भौम मवार रविवार शनिवार कुंभ कर्क कन्या धनु ये ४ राशीके सूर्यमेजन्मन क्षत्र जन्ममास जिसदिनहवनादिकहोय उसदिनमे अलंकारधारणक रके प्रस्थानकेदिन भोजनकरके तैललगायके मंगलाभिषेक जिसदिन होयउसदिन युद्धमे जानेकेदिन येसबदिन श्मश्रुकार्यकरना नही—

अस्यापवादमाह॥ ॥राजकार्यनियुक्तानां नटानां रूप जीविनां॥श्मश्रुरोमनखच्छेदेनास्तिकालविशोधनं ३६

टी० राजकार्य मे जोनियुक्तहै प्रधानादिक उनको और नटको ब हुरूपी रूपसेहै जीवन जिनका ऐसे जोउनको श्मश्रुरोम नख च्छेदमेकालविचार आवश्यकनहीहै —

दंतबंधननक्षत्राण्याह॥ ॥येषुयेषुप्रशंसंतिक्षुरक र्ममहर्षयः॥तेषुतेष्ववशंसंतिनखदंतादिलेखनं॥३७

टी० जिननक्षत्रोंमेक्षौरकर्मकहाहै उन्हीनक्षत्रोंमेदंतबंधननखकर्त्तनकरना

अन्यदपिश्मश्रुकर्मण्यपवादमाह॥ ॥आज्ञयानरपते र्द्विजन्मनांदाहकर्ममृतसूतकेषुच॥बंधमोक्षमख +

तीक्ष्णेषु च क्षौरमिष्टमखिलेष्वप्युत्तरेष्वग्रिमं ॥ ३८ ॥

टी० राजाके आज्ञासे अथवा ब्राह्मणके आज्ञासे अंत्यक्रियानिमित्तमृत सूतकांतमें कैदीछूटनेवाद यज्ञमें इत्तने जगह स्मश्रु अवश्य करना दिनदेखनेका उपयोग नहीहै —

श्लोकः ॥ ताराशुद्धं क्षौरं रविगुरुशुद्धा व्रतादीसा ॥
शुक्रविशुद्धिर्यात्रा योसर्वं शुद्धशशांकेन ॥ ३९ ॥

टी० स्मश्रु कर्ममें ताराशुद्धि अवश्य देखना नूतनव्रतग्रहणमें रविगुरुशुद्धी अवश्य देखना यात्रामें शुक्रशुद्धि देखना और सर्वकार्य मेंचंद्रशुद्धी देखना·

मौंजीबंधननक्षत्राण्याह ॥ ॥ सौम्ये पौष्णे वैष्णवे वा
सवासवे हस्तस्वातीत्वाष्ट्र पुष्याश्विभेषु ॥ ऋक्षेष्वेतेष्वां
मेखलाबंधमोक्षौ संस्मर्यं ते नूनमाचार्यवर्यैः ॥ ४० ॥

टी० मृग रेवती श्रवण धनिष्ठा हस्त स्वाती चित्रा पुष्य अश्विनी पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें मौंजीबंधनकरना और मोक्ष भीकरना ऐसा आचार्योनेलिखाहै —

विवाहनक्षत्राण्याह ॥ ॥ मूलमैत्रमृगरोहिणीक
रैः पौष्णमारुतमघोत्तरान्वितैः ॥ निर्विधामिरुडु
भिर्मृगीदृशां पाणिपीडनविधिर्विधीयते ॥ ४१ ॥

टी० मूल अनुराधा मृग रोहिणी हस्त रेवती स्वाती मघा उत्तरात्रय इन नक्षत्रोंमें और निर्वेधनक्षत्रमें विवाहकरना शुभहै —

अग्निहोत्र लेनेकोनक्षत्र ॥ ॥ प्राजापत्येपूषभेसहि
दैवेपुष्ये ज्येष्ठा सौंदे वकृत्तिकासु ॥ अग्न्याधानं श्रुत
राणांत्रयेपि श्रेष्ठं प्रोक्तं प्राक्तनैर्द्विजमुख्यैः ॥ ४२ ॥

टी० रोहिणी रेवती विशाखा पुष्य ज्येष्ठा मृग कृत्तिका उत्तरात्रय इन नक्षत्रोंमें प्रथम अग्निहोत्र लेना —

विद्याभ्यासनक्षत्राण्याह ॥ ॥ मृगादिपंचस्वपि
भेषु मूले हस्तादिकेच त्रितयेश्विनीषु ॥ पूर्वात्रये
च श्रवणे च तद्वद्विद्यासमारंभमुशंति सिध्यै ४३

टी० मृग आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मूल हस्त चित्रा स्वाती अश्विनी पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा श्रवण इन नक्षत्रोंमें वेद

शास्त्रादिविद्याकाआरंभकरना —

औषधग्रहणेनक्षत्राण्याह॥ ॥पौष्णद्वयेचादिति भद्वयेचहस्तत्रयेचश्रवणत्रयेच॥मैत्रेचमूलेच मृगेचशस्तंभैषज्यकमेप्रवदंतिसंतः॥४४॥

टी॰ रेवती अश्विनी पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा स्वाती श्रवण धनिष्ठा शततारका अनुराधा मूल मृग इननक्षत्रोंमे औषधलेनेसे अतिशीघ्ररोगदूर होताहै —

रोगोत्पत्तौशुभाशुभज्ञानं॥ ॥स्वात्याश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषुशाक्रेभौमेसूर्यजेसूर्यवारे॥नंदारिक्तास्वेवरोगस्यवानिर्मृत्युर्नैवशंकरोरक्षितोपि॥४५॥ ॥

टी॰ स्वाती आश्लेषा आर्द्रा तीनो पूर्वा ज्येष्ठा इननक्षत्रोंमे मंगल शनि आदित्य इनवारोमे प्रतिपदा षष्ठी एकादशी चतुर्थी नवमी चतुर्दशी इनतिथिनमेजोरोगउत्पन्नहोयतो मृत्युजाननां शंकरसदाशिवभीरक्षणनहीकरसक्ते

रोगमुक्तौप्रमाणमाह॥ ॥व्याध्युत्पत्तिर्यस्यपौष्णेसमैत्रे प्राणत्राणंजायतेतस्यकृच्छ्रात्॥वैश्वेसौम्येरोगमुक्तिस्तु मासाद्विंशत्यः स्याद्धासरांणांमघासु॥४६॥ पक्षाद्धस्तेवा सवेसद्दैवेमूलाश्विन्योरग्निधिष्ण्येनवाहात्॥याम्येत्वाष्ट्रे वैष्णवेवारुणेचनैरुज्यंस्यान्नूनमेकादशाहात्॥४७॥अहिर्बुध्न्येतिष्यसंज्ञेसभागेप्राजापत्यादित्ययोःसप्तरात्रात्॥ रोगान्मुक्तिर्जायतेमानवानांनिःसंदिग्धंजल्पितंगर्गमुख्यैः॥४८

टी॰ रेवति अनुराधा मेजोव्याधिउत्पन्नहोयतोउस्काप्राणरक्षणअतिकष्टसे होगा उत्तराषाढा मृगयेनक्षत्रमेजोव्याधिहोयतो १ मासनंतर व्याधिनाशहोगा मघामे २० दिनमेनाश औरहस्तमे १५ दिनमेनाश और धनिष्ठा मूल अश्विनी कृत्तिका इननक्षत्रोंमेहोयतो ९ दिनमेनाश और भरणी चित्रा श्रवण शततारका इनमेहोयतो ११ दिनमेनाश और उत्तराभाद्रपदा पुष्य पूर्वाफाल्गुनी अभिजित् पुनर्वसु इननक्षत्रोंमेव्याधिहोयतो ७ दिनमेव्याधिनाशजानना ऐसागर्गादि ऋषियोंने निःसंदिग्धकहाहै —

रोगमुक्तिस्नानमेवारनक्षत्रवर्ज्यं॥ ॥इंदोर्वारेभार्गवेच ध्रुवेषुसार्पादित्यस्वातियुक्तेषुभेषु॥ पित्र्येचांत्येचैवकु

र्थी कदाचिन्नैव स्नानं रोगमुक्तस्य जंतोः॥ ४९॥

टी॰ रोहिणी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा आश्लेषा पुनर्वसु स्वाती मघा रेवती इन नक्षत्रों मे और सोम शुक्र ये वारों मे रोगमुक्त पुरुषको स्नान नही करवावना—

रोगमुक्तिस्नाने दिनशुद्धिमाह॥ ॥ लग्ने चरे सूर्यकुजे
ज्यवारे रिक्तातिथौ चंद्रबले च हीने॥ केंद्रत्रिकोणार्थग
ते च पापे स्नानं हितं रोगविमुक्तिकानां॥ ५०॥ ७॥ ॥

टी॰ मेष कर्क तुला मकर इन लग्नों मे और मंगल रवि गुरु इन वारों मे और चतुर्थी नवमी चतुर्दशी इन तिथिनमे चन्द्रका बल हीन रहते और केंद्र कहिये लग्न चतुर्थ सप्तम दशम त्रिकोण कहिये नवम पंचम और अर्थ कहिये द्वितीय इन स्थानोमे पाप ग्रह हो ... दिनमे रोगविमुक्त पुरुषको वैद्यने स्नान करवावना—

लताऔषधीवृक्षारोपणनक्षत्राणि॥ ॥ सावित्रतिष्या
श्विनिवारुणानि मूलं विशाखा च मृदुध्रुवाणि॥ लतौ
षधीपादपरोपणे शुभान्यमूनि प्रतिपादितानि॥ ५१॥

टी॰ हस्त पुष्य अश्विनी शततारका मूल विशाखा मृदु कहिये चित्रा अनुराधा मृग रेवती ध्रुव कहिये रोहिणी तीनो ३ उत्तरा इन नक्षत्रोंमे लता औषधी वृक्षादि लगावनेसे शुभफलको देनेवाले होते हैं—

कूपारंभनक्षत्राण्याह॥ ॥ हस्तत्रये वासववारुणे
च पौष्णे पित्र्ये त्रीणि चैवोत्तराणि॥ प्राजापत्यं चापि
नक्षत्रमाहुः कूपारंभे श्रेष्ठमाद्या मुनींद्राः॥ ५२॥

टी॰ हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शततारका आर्द्रा मघा उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तरा भाद्रपदा रोहिणी इन नक्षत्रोंमे कूप कहिये कूंआ बनावनेको आरंभ करना ऐसा नारदादि मुनि कहते हैं—

द्रव्यदेनावारखना॥ ॥ साधारणोग्रध्रुवदारु
णाख्यैर्धिष्ण्यैर्यदत्र द्रविणं प्रयुक्तं॥ हस्तेन वि
न्यस्तवसु प्रनष्टं न लभ्यते नैव तत्कदाचित्॥ ५३॥

टी॰ कृत्तिका विशाखा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा भरणी मघा मूल ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा इन नक्षत्रोंमे जो कोई किसीके पास धना

दिकरक्खे या धननष्टहोजायतो कभीमिलेगानही—

ऋणग्रहणनक्षत्राण्याह॥ ॥मृदुपुष्याश्विनीचैवविशाखाश्रवणत्रयं॥पुनर्वसौचशंसंतिधनादिनिधिवर्त्तने ५४

टी० चित्रा अनुराधा मृग रेवती पुष्य अश्विनी विशाखा श्रवण धनिष्ठा शततारका पुनर्वसू इननक्षत्रोंमेऋणदेनाप्रशस्तहै—

अन्यदपि॥ ॥हस्तेर्कवारेसंक्रांतौयदृणंस्यात्कुलेषुच॥ वृद्धियोगेतथाज्ञेयमृणच्छेदंतुकारयेत्॥५५॥ ७॥

टी० हस्तनक्षत्रमे रविवारमे संक्रांतिदिनमे वृद्धियोगमे ऋणलेनानही· ऋणलेनेसेवहऋण पुस्तदरपुस्त चलाजाताहै और इन्हीदिनमेऋणच्छेदकरनेसेशीघ्रहीऋणनाशहोजाताहै—

अन्यदपि॥ ॥ऋणंभौमेनगृण्हीयान्नदेयंबुधवासरे॥ऋणच्छेदंकुजेकुर्यात्संचयंसोमनन्दने॥५६॥

टी० मंगलवारको कर्जा ऋणकिसीसेलेनानही औरबुधकोऋणदेनानही· ऋणच्छेदकहियेऋणका अदाकरना मंगलको औरसंग्रहकरनाबुद्धको—

गजमुहूर्त्तमाह॥ ॥हस्तत्रयेसौम्यहरित्रयेच पौष्णद्वयेपुष्यपुनर्वसौच॥मैत्रेचसर्वाण्यपिकुंजराणां सर्वाणिशस्तान्यखिलानियानि॥५७॥

टी० हस्त चित्रा स्वाती मृग श्रवण धनिष्ठा शततारका रेवती अश्विनी पुष्य पुनर्वसू अनुराधा येनक्षत्रोंमे औररिक्तातिथि४।९।१४। अमावास्याभौमवार इनकोवर्जितकरको हाथीका बेचना और खरीदना औरअलंकारादिकरको भूषितकरनायेसबहस्तिसंबंधिकर्मकरना· यहवसिष्ठनेलिखाहै—

अश्वमुहूर्त्तमाह॥ ॥पुष्यश्रविष्ठाश्विनिसौम्यभेषु पौष्णानिलादित्यकराव्हयेषु॥सवारुणर्क्षेषुबुधैः स्मृतानिसर्वाणिकार्याणितुरंगमाणि॥५८॥ ७॥

टी० पुष्य धनिष्ठा अश्विनी मृग रेवती स्वाती पुनर्वसू हस्त शततारका इननक्षत्रोंमे औररिक्तातिथि४।९।१४ भौमवर्जितदिनमे अश्वकाखरीदना औरबेचना औरअलंकारादिकरको भूषितकरना येसबकर्मकरनेसेशुभहोताहै यहश्रीपतीनेलिखाहै—

पशूनांयात्रानिषेधः॥ ॥चित्रोत्तरावैष्णवरोहिणी
षुचतुर्दशीदर्शदिवाष्टमीषु॥ग्रामप्रवेशंगमनंप्र
दध्याद्धीमान्पशूनांनकदाचिदेव॥५९॥७॥

टी० चित्रा उत्तरात्रय३ श्रवण रोहिणी चतुर्दशी अमावास्याअष्टमी येतिथि न
क्षत्रमे पशुओंको घरसेबाहरनिकालनानही औरबाहरसे घरभील्यावनानही

गोक्रयविक्रयनक्षत्राणि॥ ॥शाक्रवासवकरेषु
विशाखापुष्यवारुणपुनर्वसूभेषु॥अश्विपूषभ
युतेषुविधेयोविक्रयक्रयविधिःसुरभीणां॥६०॥

टी० ज्येष्ठा धनिष्ठा हस्त विशाखा पुष्य शततारका पुनर्वसू अश्विनी रेव
ती इननक्षत्रोंमे गोकाक्रयविक्रयकरना क्रय कहिये द्रव्य मोल्यदेके दूसरे
सेवस्तूकालेना औरविक्रयकहिये मूल्यग्रहणपूर्वक वस्तूदेना—

तृणकाष्ठादिसंग्रहमुहूर्त्तमाह॥ ॥वासवोत्तरद
लादिपंचकेयाम्यदिग्गमनगेहगोपनं॥प्रेतदाहतृ
णकाष्ठसंग्रहःशय्यकावितरणंचवर्जयेत्॥६१॥

टी० धनिष्ठाका उत्तरार्द्ध शततारका पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा रेवती येनक्ष
त्रोंमे दक्षिणकी यात्रा पुरानेघरकोबनावना प्रेतकादाह भूसालकडीकासंग्रह
पलंगखटियाआदिकाबीननायेसबकाम पंचकमेनहीकरना—

हलप्रवाहनक्षत्राण्याह॥ ॥मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु
मूलेमघाविशाखासहितेषुभेषु॥हलप्रवाहंप्र
थमंविदध्यान्निरोगमुष्कान्वितसौरभेयैः॥६२॥

टी० चित्रा अनुराधा मृग रेवती रोहिणी तीनोउत्तरा३ अश्विनी पुष्य हस्त
अभिजित् श्रवण धनिष्ठा शततारका पुनर्वसू मूल मघा विशाखा इनन
क्षत्रोंमे प्रथमनिरोगी मुष्कसहित एसा बैल लगायके हलचलावना—

बीजवापनमुहूर्त्तमाह॥ ॥हस्ताश्विपुष्योत्तररो
हिणीषुचित्रानुराधामृगरेवतीषु॥स्वातीधनिष्ठासु
मघासुमूलेबीजोप्तिरुत्कृष्टफलंप्रतिष्ठा॥६३॥ ॥

टी० हस्त अश्विनी पुष्य तीनोउत्तरा३ रोहिणी चित्रा अनुराधा मृग रेवती स्वा
ती धनिष्ठा मूल इननक्षत्रोंमे बीजवापनकरनेसे उत्कृष्ट फलप्रदहोताहै—

सर्पदंशनेवर्ज्योन्याह ॥

यः कृत्तिकामूलमघाविशाखासार्पोनकार्द्रीसुभुजंगदष्टः
॥ सर्वेन तेयेनस्करक्षितोपिप्राप्नोतिमृत्योर्वदनेमनुष्यः ६४

टी॰ कृत्तिका मूल मघा विशाखा आश्लेषा भरणी आर्द्रा इननक्षत्रोंमे जोसर्पकाटेतो गरुड रक्षणकरे तो भी मनुष्य मृत्युमुखसेनबचे —

गायनाभ्यासनक्षत्राणि॥ ॥ हस्तत्तिष्योवासवं चानुराधाज्येष्ठापौष्णंवारुणंचोत्तराच॥ पूर्वाचार्यैः कीर्त्तितश्चंद्रवर्त्तिनृत्यारंभेशोभनोऋक्षवर्गः॥ ६५

टी॰ हस्त पुष्य धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा रेवती शततारका तीनोउत्तरा ३ इननक्षत्रोंमे चंद्रानुकूल देखको गानाबजावनानाचना सीखनेकोआरंभकरना

राज्याभिषेकनक्षत्राणि॥ ॥ मैत्रशाक्रकरपुष्यरोहिणीवैष्णवेषुनिसृषूत्तरासुच॥ रेवतीमृगशिराश्विनीषुचक्ष्माभृतांसमभिषेकइष्यते॥ ६६॥ ॥

टी॰ अनुराधा ज्येष्ठा हस्त पुष्य रोहिणी श्रवण तीनोउत्तरा ३ रेवती मृग अश्विनी इननक्षत्रोंमे राजाको राज्याभिषेककरना कथितहै —

राजदर्शनमुहूर्त्त॥ ॥ सौम्याश्विनितिष्यश्रवणश्रविष्ठाहस्तध्रुवत्वाष्ट्रपूषभानि॥ मैत्रेणयुक्तानिनरेश्वराणांविलोकनेभानिशुभप्रदानि॥ ६७॥ ७ ॥

टी॰ मृग अश्विनी पुष्य श्रवण धनिष्ठा हस्त रोहिणी तीनोउत्तरा ३ चित्रा रेवती अनुराधा इननक्षत्रोंमे राजोकीमुलाकातकरनेसे कल्याणहोताहै —

मासादौचंद्रोदयफले॥ ॥ रौद्राहियाम्यानिलवारुणेंद्राण्याहुर्जघन्यानितयाबृहंति॥ ध्रुवद्विदेवादितिभानिनूनंसमानिशेषाणिपुनर्मुनीन्द्रैः॥ ६८॥ बृहत्सुधान्यंकुरुतेसमर्घंजघन्यधिष्ण्येभ्युदितोमहर्गता॥ समेषुधिष्ण्येषुसमंहिमांशुर्वदंतिसंदिग्धमिदंमहांतः॥ ६९॥

टी॰ आर्द्रा आश्लेषा भरणी स्वाती शततारका ज्येष्ठा येनक्षत्र जघन्यसंज्ञकहोतेहैं और रोहिणी तीनोउत्तरा ३ विशाखा पुनर्वसु येनक्षत्रबृहत्संज्ञकहोतेहैं शेषबचेहुयेनक्षत्रसमसंज्ञकहोतेहैं उसमे बृहत्संज्ञ

कनक्षत्रमे मासादिमे चंद्रोदयजो होयतो अन्नादिक सस्ता होगा जो मासा
दिमे जघन्यसंज्ञक नक्षत्रों मे चंद्रोदय होयतो महंगा होगा जो समसे चं
द्रोदय होयतो समान रहेगा ऐसा मुनीलोगोने लिखा है —

राशिकृतचंद्रोदयफल॥ ॥मीनमेषादितश्चंद्रः सत
तं दक्षिणोन्नता॥ मेषोन्नताउत्तराणां समता वृषकुं
भयोः॥७०॥ विडुवरं तु समे चंद्रे दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यमुत्तराश्रित्य चंद्रमाः॥७१॥ ॥

टी० शुक्लपक्षके द्वितीयाका चंद्रोदय जो मीन या मेष राशिपर होयतो चं
द्रकी उन्नता दक्षिणतरफ होती है उसका फल दुर्भिक्षता होगी और जो
मिथुनादि मकरपर्यंत राशीमे चंद्रोदय होयतो उत्तरकेतरफ चंद्रकी उ
न्नता होती है उसका फल सुभिक्ष क्षेम आरोग्य होता है और वृषकुंभ
राशीमे चन्द्रोदय होयतो समता होगी फल राजोंका कलह होगा —

पुष्यनक्षत्रका गुणदोष॥ ॥परकष्टं निखिलं निहंति
पुष्यो न खलु निहंति परंतु पुष्यदोषं॥ ध्रुवममृतक
रोष्टमे पि पुष्ये विहितमुपैति सदैव कर्मसिद्धिम्॥७२

टी० पुष्यनक्षत्र अन्यदोषोको नाश करता है परंतु स्वदोषको नाश नही
करता और अष्टमचन्द्रमा होयतो भी पुष्य कार्यसिद्धि करता है —

अन्यदपि॥ ॥सिंहो यथा सर्वचतुष्पदानां तथै
व पुष्यो बलवानुडूनां॥ चंद्रे विरुद्धेप्यथ गोचरे
पि सिध्यंति कार्याणि कृतानि पुष्ये॥७४॥ ॥

टी० जैसा संपूर्ण चतुष्पदोंमे सिंह बलवान है तैसाही नक्षत्रोंमे पुष्य बलवान
है गोचरसे ४।८।१२ चंद्रमा होयतो भी पुष्यनक्षत्र कार्यसिद्धीको करता है -

अन्यदपि॥ ॥ग्रहेण विद्धोप्यशुभान्वितोपि वि
रुद्धतारोपि विलोमगोपि॥ करोत्यवश्यं सकला
र्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणं तु पुष्यः॥७५॥ ॥

टी० पुष्यनक्षत्र ग्रह करके विरुद्ध होय अथवा अशुभ ग्रह युक्त हो
य अथवा प्रतिकूल तारा होयतो भी सकल कार्यसिद्धि अवश्य करके
पुष्य करता है परंतु विवाह छोडके —

अथदुकूलं॥ ॥जीवेऽर्केब्जेबुधेशुक्रेवस्त्रोक्तर्क्षेश्रवान्विते॥स्थिरेंगेसद्ग्रहैर्युक्तेयद्दुकूलस्यधारणम्॥१॥

टी॰ गुरु· रवि· चंद्र· बुध· शुक्र· इनकेवारमे वस्त्रधारण नक्षत्रमे श्रवण युक्त· स्थिरलग्नमे शुभग्रह युक्तमे दुकूल (दुपट्टाइ॰) धारणकरना॥१॥

अथकौशेयम्॥ ॥अश्विनीरेवतीहस्तेरोहिण्यांश्रवणात्रये॥पूर्वोत्तरेपुनर्वस्वोःस्वातौपुष्येमघाभिधे॥१॥ रवौचंद्रेगुरौधार्यंकौशेयवसनंजनैः॥ ॥

टी॰ अश्विनी· रेवती· हस्त· रोहिणी· श्रवण· धनिष्ठा· शततारका· ३पूर्वा· ३उत्तरा· पुनर्वसु· स्वाती· पुष्य· मघा· यहनक्षत्र· रवि· सोम· गुरु· यहवारमे लोकनेकौशेय (रेशमीवस्त्र·) धारणकरना॥१॥

अथरोमजंवस्त्रं॥नीलवस्त्रोदितेधिष्ण्येरेवतीपुष्ययोरपि॥शुक्रेशनैश्चरेऽर्केचधारयेद्रोमजांवरम्॥१॥ ॥

टी॰ नीलवस्त्रधारणमे जो नक्षत्र और रेवती· पुष्य· यहनक्षत्र· शुक्र· शनैश्चर· रवि· यहवारमे रोमज (दुसालाइ॰) वस्त्रधारणकरना·॥

अथसतूलकंचुकधारणं॥ ॥पुष्योत्तरानुराधांत्येधनिष्ठाश्विकरत्रये॥रोहिण्यांगुरुशुक्राब्जेदेहेदुर्गधृतिःशुभा॥ ॥

टी॰ पुष्य· ३उत्तरा· अनुराधा· रेवती· धनिष्ठा· अश्विनी· हस्त· चित्रा· स्वाती· रोहिणी· यहनक्षत्र· गुरु· शुक्र· सोम· इनकेवारमेशरीरमेरुईदारवस्त्रधारणकरना·

अथस्वर्णरजततंतुमयवस्त्रपरिधानं॥

स्वर्णतंतुसंमिश्रं धारणंचरवौकुजे॥राजतंतद्धिशुक्रेऽब्जेवस्त्रधारणभेशुभम्॥ ७॥ ॥

टी॰ सुवर्णतंतु संमिश्रितवस्त्र (सेल्हाइ॰) रवि और भौमवारको धारणकरना· रजत· तंतु संमिश्रित वस्त्र· शुक्र· सोमवार औरवस्त्रधारण नक्षत्रमे शुभ·॥

अथवस्त्रनिर्माणम्॥ ॥रोहिणीरेवतीचित्रानुराधामृगभोत्तरे॥शनिंहित्वाविदध्यात्तुतंतुभिःपटसाधनं॥

टी॰ रोहिणी· रेवती· चित्रा· अनुराधा· मृग· ३उत्तरा· यहनक्षत्रमे· शनिवारछोडके सबवारमेवस्त्र बनावनेको प्रारंभकरना·॥

अथोपानत्परिधानंचर्मकृत्यंच॥ ॥चित्रापूर्वानुरा

धार्द्राज्येष्ठाश्लेषामघामृगे॥ विशाखाकृत्तिकामूलेरे
वत्यांज्ञार्किसूर्ययोः॥ १॥ उपानत्परिधानंचचर्मकर्मापिशस्यते
टी॰ चित्रा। ३पूर्वा। अनुराधा। आर्द्रा। ज्येष्ठा। आश्लेषा। मघा। मृग। विशाखा।
कृत्तिका। मूल। रेवती। यहनक्षत्रमे बुध शनि सूर्य इनकेवारमे उपान
त् (जोड़ा) पहिरना और चर्मकृत्यभीकरनाशुभ॥

अथवस्त्रमयगेहनिर्माणं॥ ॥श्रुतित्रयेऽश्विनीपुष्येऽनुरा
धारोहिणीमृगे॥ हस्तत्रयेपुनर्भेऽन्त्येश्युत्तरेपटवेश्मसत्॥
टी॰ श्रवण। धनिष्ठा। शततारका। अश्विनी। पुष्य। अनुराधा। रोहिणी। मृग। हस्त
चित्रा। स्वाती। पुनर्वसु। रेवती। ३उत्तरा। यहनक्षत्रमे पटवेश्म (वस्त्रकागृह) करना

अथगणितारंभः॥ ॥शततूयेऽनुराधार्द्रारोहिणीरे
वतीकरे॥ पुष्यजीवेबुधेकुर्यात्प्रारंभंगणितादिषु॥ १॥
टी॰ शततारका। पूर्वाभाद्रपदा। अनुराधा। आर्द्रा। रोहिणी। रेवती। हस्त।
पुष्य। यहनक्षत्रमे गुरु। बुध। इनकेवारमे गणितविद्याकाप्रारंभशुभ—

अथव्याकरणारंभः॥ रोहिण्यांपंचकेहस्तात्पुनर्भेमृग
भेऽश्विभे॥ पुष्येशुक्रेज्यविद्वारेशब्दशास्त्रंपठेत्सुधीः॥
टी॰ रोहिणी। हस्त। चित्रा। स्वाती। विशाखा। अनुराधा। पुनर्वसु। मृग। अश्विनी। पु
ष्य। यहनक्षत्रमे शुक्र। गुरु। बुध। इनकेवारमे व्याकरणविद्याप्रारंभकरना—

न्यायशास्त्रारंभः॥ ॥उत्तरेरोहिणीपुष्येपुनर्भेश्रव
णेकरे॥ अश्विन्यांशतभेस्वातौन्यायशास्त्रादिकंपठेत्॥
टी॰ ३उत्तरा। रोहिणी। पुष्य। पुनर्वसु। श्रवण। हस्त। अश्विनी। शततारा।
स्वाती यहनक्षत्रमे न्यायशास्त्र। प्रारंभकरना—

वैद्यविद्यागारुडविद्यारंभः॥ हस्तत्रयेऽनुराधायांपुनर्भेश्र
वणत्रये॥ मूलेचैवाश्विनीपुष्यज्येष्ठाश्लेषार्द्रभेमृगे॥ ॥
टी॰ हस्त। चित्रा। स्वाती। अनुराधा। पुनर्वसु। श्रवण। धनिष्ठा। शततारा। मूल।
अश्विनी। पुष्य। ज्येष्ठा। आश्लेषा। आर्द्रा। मृग। यहनक्षत्रमे वैद्यवि
द्या। औरगारुडविद्याप्रारंभकरना।

जैनविद्यारंभः॥ ॥कृत्तिकात्रयेमघापूर्वानुराधारेव
तीत्रये॥ पुनर्भेस्वातिभेसूर्येशुक्रेजैनागमंपठेत्॥ १

टी० श्रवण· धनिष्ठा· शततारा· पू०फा· अनुराधा· रेवती· अश्विनी· भरणी· पु
नर्वसु· स्वाती· यह नक्षत्रमे· सूर्य· शुक्र· इनकेवारमे जैनविद्याप्रारंभकरना·

लिंगांडछेदनमुहूर्त्त॥ ॥ नराश्ववृषभादीनांलिंगांडछे
दनंस्मृतम्॥ अर्कारेज्यांत्यपुष्यार्कस्वातींदुश्रुतिवासवैः॥

टी० सूर्य· भौम· गुरु· यह वारमे· रेवती· पुष्य· हस्त· स्वाती· मृग· श्रवण· धनि
ष्ठा· यह नक्षत्रमे· नर· अश्व· वृषभादि इनके लिंगअंड इनकाछेदनकथितहै·

अथपारसीविद्यारंभः॥ ॥ ज्येष्ठाश्लेषामघापूर्वारे
वतीभरणीद्वये॥ विशाखार्द्रोत्तराषाढाशतभे पाप
वासरे॥१॥ लग्नेस्थिरेचचंद्रेचपारसीमारवींपठेत्॥

टी० ज्येष्ठा· आश्लेषा· मघा· पूर्वाफा· रेवती· भरणी· कृत्तिका· विशाखा·
आर्द्रा· उत्तराषा· शततारा· यह नक्षत्रमे पापग्रहकेवारमे स्थिरलग्नमे
स्थिरचन्द्रमे· पारसी और आरबी विद्या प्रारंभकरना॥ —

अथरत्नपरीक्षा॥ ॥ पुनर्भेशततहस्तर्क्षेश्रवेज्येष्ठेपरी
क्षणम्॥ रत्नानामष्टमीभूतंहित्वाभौमंशनैश्वरम्॥ ॥

टी० पुनर्वसु· शततारा· हस्त· श्रवण· ज्येष्ठा· यह नक्षत्रमे अष्टमी· च
तुर्दशी इसकोछोडके रत्नपरीक्षाकरना· —

अथनटक्रिया॥ ॥ मृगार्द्रारोहिणीपुष्येपुनर्भेश्रवण
त्रये॥ चित्रात्रयोत्तरामूलेकृत्यंसन्नृत्यजीविनाम्॥

टी० मृग· आर्द्रा· रोहिणी· पुष्य· पुनर्वसु· श्रवण· धनिष्ठा· शततारा· चि
त्रा· ३उत्तरा· मूल· यह नक्षत्रमे नृत्यजीवीने कृत्य प्रारंभकरना· —

अथान्नादिपाकक्रिया॥ ॥ मूलंचित्रानुराधासुविशाखा
कृत्तिकामृगे॥ उत्तरारोहिणीज्येष्ठारेवतीषुपचिक्रिया॥ ॥

टी० मूल· चित्रा· अनुराधा· विशाखा· कृत्तिका· मृग· ३उत्तरा· रोहिणी·
ज्येष्ठा· रेवती· यह नक्षत्रमे पाकक्रियाकरनेको प्रारंभकरना· —

अथरससेवनम्॥ ॥ हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्येऽनुराधांत्ये
श्रुतित्रये॥ पुनर्भेमृगशीर्षेऽर्केभौमेज्येरसभक्षणम्॥

टी० हस्त· चित्रा· स्वाती· अश्विनी· पुष्य· अनुराधा· रेवती· श्रवण· धनिष्ठा· शत
तारा· पुनर्वसु· मृग· हस्त· यह नक्षत्रमे भौम गुरु इनकेवारमे रसभक्षण प्रारं
भकरना·

अथवनचारिकृत्यम्॥ ज्येष्ठास्वात्यश्विनीपुष्येपुनर्भे
रोहिणीकरे॥उत्तरासुशुभंकृत्यंशृंगिणांवनचारिणां॥१॥
टी० ज्येष्ठा· स्वाती· अश्विनी· पुष्य· पुनर्वसु· रोहिणी· हस्त· उत्तरा·३
यहनक्षत्रमे शृंगिऔरवनचारीइनका·कृत्यकरना· —

अथपक्षिकृत्यम्॥ ॥शुभाहेसुरवौतिर्यङ्मुखेचोर्ध्वे
मुखेचभे॥सारिकाशुकमुख्यानांपक्षिणांकृत्यमुत्तमं॥१॥
टी० शुभदिनमे· उत्तमसूर्यबलमे· तिर्य्यङ्मुखनक्षत्रमे· ऊर्ध्वमुखन
क्षत्रमे· सारिका(मैना) शुक(सुगा) मुख्यआदिपक्षि कृत्यकरना· —

अथभूमीक्रयविक्रयौ॥ ॥जीवेशुक्रेचनंदासुपूर्णा
यांमूलभेमृगे॥पूर्वाश्लेषामघांत्येचविशाखाहित
येतथा॥१॥पुनर्भेमुनिभिःप्रोक्तंक्रयविक्रयणंभुवः॥
टी० गुरु· शुक्र· इनकेवारमे· नंदा· और पूर्णा तिथीमे · मूल· मृग· पू
३ आश्लेषा· मघा· रेवती· विशाखा· अनुराधा· पुनर्वसु· यहनक्षत्रमे
मुनीनेभूमीकाक्रयविक्रयकथनकियाहै·

अथतप्तलोहदाहः॥ ॥शतचित्राश्विनीमूलेविशाखा
कृत्तिकार्द्रभे॥ज्येष्ठाश्लेषाकुजेऽर्केऽगक्रूरेलोहाग्निभेषजम्॥
टी० शततारा· चित्रा· अश्विनी· मूल· विशाखा· कृत्तिका· आर्द्रा· ज्येष्ठा· आश्लेषा
यहनक्षत्रमे· भौमसूर्य इनकेवारमे· क्रूरलग्नमे· अग्नीसेतप्तलोहसेदाहकरना·

अथमल्लक्रिया॥ ॥ज्येष्ठार्द्राभरणीपूर्वामूलाश्लेषा
मघाभिधे॥जयापूर्णासुसद्वारेसार्केशीर्षोदयेग
के॥१॥सखेटैःकेन्द्रगैःसार्कैः मल्लक्रीडाशुभावहा॥
टी० ज्येष्ठा· आर्द्रा· भरणी· ३पूर्वा· मूल· आश्लेषा· मघा· यहनक्षत्र
मे· जया· पूर्णातिथी· शुभवारमे अर्कसहित शीर्षोदयलग्नमे· अर्क
सहितशुभग्रह केंद्रमे होयऐसेकालमेमल्ल क्रीडाशुभजानना· —

अथसेतुबंधः॥ ॥उत्तरारोहिणीस्वातीमृगेऽर्केमं
गलेगुरौ॥सेतूनांबंधनंशस्तंशुभेलग्नेशुभेक्षिते॥१॥
टी० ३उत्तरा· रोहिणी· स्वाती· मृग· यहनक्षत्रमे· रवि· भौम· गुरु· इनकेवारमे
शुभलग्नशुभग्रहसेअवलोकितमे· इसमेसेतुबंधन(पूलइत्यादि)बनावना शुभ·

अथकुंभकारकृत्यम्॥ ॥पुनर्वसूद्वयेहस्तत्रयेरेवतीरोहिणीमृगे॥अनुराधाश्रवोज्येष्ठासस्सूर्ये सौम्यवासरे ॥१॥नथाचरोदयेप्रोक्ताकुंभकारक्रियाबुधैः॥२॥

टी० पुनर्वसु· पुष्य· हस्त· चित्रा· स्वाती· रेवती· रोहिणी· मृग· अनुराधा· श्रवण· ज्येष्ठा यहनक्षत्रमे· रविसहितशुभवारमे· चरलग्नमे· कुंभकार(कोहार)काकर्मकरना·

अथकाष्ठशिल्पकृत्यम्॥ ॥हस्तषट्केऽश्विनीपुष्येरेवत्यांश्रवणत्रये॥पुनर्भेरोहिणीयुग्मेसूत्रधारीक्रियोत्तमा॥१॥

टी० हस्त· चित्रा· स्वाती· विशाखा· अनुराधा· ज्येष्ठा· अश्विनी· पुष्य· रेवती· श्रवण· धनिष्ठा· शततारा· पुनर्वसु· रोहिणी· मृग· यहनक्षत्रमे सूत्रधारी(बढई)काकर्मकरना·

अथस्वर्णकारकृत्यम्॥ ॥श्रवत्रयेश्विनीपुष्येमृगेहस्तचतुष्टये॥कृत्तिकायांपुनर्वस्वोः शुभेलग्नेतिथावपि॥ ॥१॥हेमकारक्रियाशस्ताहित्वाबुधशनैश्चरौ॥२॥

टी० श्रवण· धनिष्ठा· शततारा· अश्विनी· पुष्य· मृग· हस्त· चित्रा· स्वाती· विशाखा· कृत्तिका· पुनर्वसु· यहनक्षत्रमे· शुभलग्नमे· शुभतिथीमे· हेमकार(सोनार)काकर्म बुधऔरशनी इनकोत्यागकरकेकरना शुभ·–

अथचोरकृत्यम्॥ ॥विशाखाकृत्तिकापूर्वामूलार्द्राभरणीमघे॥आश्लेषाज्येष्ठयोर्मंदभौमयोः शकुनेबले॥१॥लग्नेवादशमेभौमेचौर्यंसद्द्रव्यलब्धये॥

टी० विशाखा· कृत्तिका· पू·३ मूल· आर्द्रा· भरणी· मघा· आश्लेषा· ज्येष्ठा· यहनक्षत्रमे शनिभौम· इनकेवारमे· शकुनवलमे· गमनलग्नमेभौमहोयअथवा दशमहोय ऐसे कालमे उत्तम द्रव्यलाभकेवास्ते चौर्यकर्मकरना· ॥–

अथरत्नयुक्तभूषाघटनं॥ ॥कृत्तिकादित्रयेहस्तपंचकेरेवतीद्वये॥श्रुतित्रयेपुनर्वस्वोः पुष्यभेचोत्तरात्रये॥१॥कुजेर्केरत्नयुक्भूषाघटनंशुभवासरे॥२॥

टी० कृत्तिका रोहिणी· मृग· हस्त· चित्रा· स्वाती· विशाखा अनुराधा· रेवती· अश्विनी· श्रवण· धनिष्ठा· शततारका· पुनर्वसु· पुष्य· उत्तरा३ यहनक्षत्रमे· भौमसूर्य· और शुभवारमे रत्नयुक्तभूषणवनावनेको आरंभकरना·

॥ इतिनक्षत्रप्रकरणम्॥

॥अथयोगप्रकरणम्॥ ॥वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणा
च्चांद्रमेव च॥ गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्यादृक्षशेषतः १

टी० पुष्यनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक गिनको और श्रवणसे दिननक्षत्रतक गिनको दोनोकी संख्या एकत्रकरको २७ से भागलेना शेषबचेसो योगकहना जैसा संवत् १९२५ ज्येष्ठसुद्द ३ सोमवार आर्द्रानक्षत्र है तो उसदिन योग कौन है ऐसा प्रश्नकरे तो गिनतीकरना पुष्यनक्षत्रसे रोहिणी सूर्यनक्षत्र २४ हुवे और श्रवणसे आर्द्रा दिननक्षत्र १२ हुवे तो दोनो मिलावनेसे ३६ हुवे उसमें २७का भाग देनेसे बचाशेष ९ तो उसदिन मूलयोग हुवा ऐसाजानना।

योगनामानि॥ ॥विष्कंभः प्रीतिरायुष्मान्सौभाग्यः शोभन
स्तथा॥ अतिगंडः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च॥२॥ गंडो
वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा॥ वज्रः सिद्धिर्व्यती
पातो वरीयान्परिघः शिवः॥३॥ सिद्धः साध्यः शुभः शुक्लो
ब्रह्मेंद्रो वैधृतिः क्रमात्॥ सप्तविंशतियोगास्तु कुर्युर्नामसमं फलं ४

टी० विष्कंभआदि २७ योगजोहैं सोनीचे कोष्ठकमें स्पष्ट देखलेना· औरसत्ताईसोका नामसदृश फल जानना —

१	विष्कंभ	७	सुकर्मा	१२	ध्रुव	१७	व्यतीपात	२२	साध्य
२	प्रीति	८	धृति	१३	व्याघात	१८	वरीयान्	२३	शुभ
३	आयुष्मान्	९	शूल	१४	हर्षण	१९	परिघ	२४	शुक्ल
४	सौभाग्य	१०	गंड	१५	वज्र	२०	शिव	२५	ब्रह्मा
५	शोभन	११	वृद्धि	१६	सिद्धि	२१	सिद्ध	२६	ऐंद्र
६	अतिगंड							२७	वैधृति

योगवर्ज्यघटिका॥ ॥विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः
खलु पाद आद्यः॥ सवैधृतिस्तु व्यतिपातनामा सर्वोऽप्यनिष्टः परिघ
स्य चार्द्धं॥५॥ तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नव पंच
शूले॥ गंडे तु गंडे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः॥६॥

टी० सत्ताईसयोगोंमेंजो विरुद्धनामक योगहैं जैसे मूलवज्रादि उनका प्रथमपाद अनिष्टजानना और वैधृति व्यतीपात इनके चारोंपाद अनिष्ट जानना· परिघका पूर्वार्द्ध अनिष्ट विष्कंभयोगकी आदि ३ घटी अनिष्ट वज्रयोगकी आदि ९ घटी व्याघातयोगकी ९ घटी शूल ५ घटी गंड और अतिगंड इनकी ६ घटी अनिष्टजानना- ॥इतियोगप्रकरणम्॥ ॥

अथकरणप्रकरणम्॥

करणानयनं॥ ॥गततिथ्ययोद्विनिघ्नाःशुक्लप्रतिप
दादितः॥एकोनासप्तकृच्छेषंकरणंस्याद्भवादिकं १

टी० जिसदिनकरणल्यावनाहोयतोशुक्लप्रतिपदासे वर्त्तमानतिथी
तक गिनकोउस्को द्विगुणितकरकोउसमेंएककमकरकोऽ७सेभागले
कोजोशेषबचेसोतिथीकाकरणजानना॥

करणनामानि॥ बवाव्हयंबालवकौलवाख्यंततोभवे
त्तैतिलनामधेयं॥गराभिधानंवणिजंचविष्टिरित्याहु
रार्याःकरणानिसप्त॥२॥अंतेकृष्णचतुर्दश्यांशकुनि
र्दर्शभागयोः॥ज्ञेयंचतुष्पदंनागंकिंस्तुघ्नंप्रतिपद्दले ३

टी० बव१ बालव २ कौलव ३ तैतिल ४ गर ५ वणिज ६ विष्टि कहिये भद्रा
७ येसातकरणहोतेहैं औरकृष्ण १४ केउत्तरार्द्धमेंशकुनीनामककर
णहोताहै अमावास्याकेपूर्वोत्तरार्द्धमेंक्रमसेचतुष्पद औरनागये २
करणहोतेहैं किंस्तुघ्ननामककरण प्रतिपदाकेपूर्वार्द्धमेंहोताहै॥—

करणस्वामिनः॥ ॥इंद्रोब्रह्मामित्रनामार्यमाभूःश्रीः
कीनाशश्चेतितिथ्यर्धनाथाः॥कल्युक्षाख्योसर्पवा
युस्तथैवयेचत्वारस्तेस्थिराणांचतुर्णां॥४॥ ७ ॥

टी० इन्द्र· ब्रह्मा· मित्र· अर्यमा· भूमी· लक्ष्मी· यम· ये ७ देवता ववादि
७ करणोके होतेहैं और शकुनी नाग चतुष्पद किंस्तुघ्न ये ४ करणके
देवता कलिवृषभसर्पवायुक्रमसेजानना औरयेच्यारों स्थिरजानना·—

करणकृत्यानि॥पौष्टिकंस्थिरशुभानिववाख्येबालवेद्विज
हितान्यपिकुर्यात्॥कौलवेप्रमदमित्रविधानंतैतिलेशुभ
गताश्रयकर्म॥५॥गरेचवीजाश्रयकर्षणानिवाणिज्यकेस्थे
र्यवणिक्क्रियाश्च॥नसिद्धिमायातिकृतंचविष्ट्यांविषारि
घातादिषुनत्रसिद्धिः॥६॥मंत्रौषधानिशकुनौतुसपौष्टिका
निगोविप्रराज्यपितृकर्मचतुष्पदेति॥सौभाग्यदारुणध्रु
तिध्रुवकर्मनागेकिंस्तुघ्नना स्विनिखिलंशुभकर्मकार्यं ७

टी० ववकरणमेंपौष्टिक व्रतशांत्यादि स्थिरकर्म देवालय तडाग कूपादि

येकर्मकरना बालवकरणमे हितकाहितकरना· कौलवकरणमे मित्रता
माने दोस्तीकरना· और उत्साहादिकरना· तैतिलकरणमे विवाहादिमंग
लकार्यकरना· गरकरणमें बीजकाबोना और हलचलावना· वणिज
करणमें देवतास्थापन तलाव बावली गृह इनको बांधना और दुका
नदारीकरना और विष्टि माने भद्राकरणमें विषप्रयोग शत्रुघात इत्यादि
कर्मकरना· शुभकार्य कोई करना नहीं शकुनिकरणमें पौष्टिक माने मं
त्रोपदेश औषधग्रहण ग्रहशांत्यादिकर्मकरना चतुष्पदकरणमें गौको
खरीदना बेचना ब्राह्मणसेवा राज्याभिषेक पितृकार्यकरना नागकरण
में सौभाग्यकर्म दारुणकर्म धैर्यकर्म विद्याभ्यासादिकर्मकरना किंस्तुघ्न
करणमें संपूर्णकर्मकरना – ॥ ॥भद्रास्वरूपमाह॥ ॥

दैत्येंद्रैः समरेऽमरेषु विजितेष्वीशः क्रुधा दृष्टवान्स्वं कायात्किल नि
र्गता खरमुखी लांगूलिनी चक्रपात्॥ विष्टिः सप्तभुजा मृगेंद्रगलका
क्षामोदरी प्रेतगा दैत्यघ्नी मुदितैः सुरैस्तु करणप्रांते नियुक्तातु सा॥८

टी॰ देवासुरसंग्राममें दैत्येंद्रकरके देवतोंका पराजय भया ऐसा जानके
महादेवको क्रोध उत्पन्न हुआ तब स्वशरीरसे १ शक्ति विष्टिनामक उत्पन्न
हुई उसका मुख गर्दभके ऐसा और पुच्छवती चक्रके ऐसे जिसके गोड और
७ भुजा· सिंहके कंठके ऐसा कंठ कृशोदरी और प्रेतके ऊपर बैठके गमन क
रनेवाली ऐसी शक्ति दैत्योंको नाशकरनेवाली देवतोंने देखके अत्यंत हर्ष
पूर्वक अपने करणप्रांतमे नियुक्त किया तब उसी शक्तिके सहायतासे देव
तोंने दैत्योंका पराजय किया ऐसा भद्राका स्वरूप और उसका पराक्रम ऋ
षियोंने कथन किया है – ॥ ॥भद्रातिथिमान॥ ॥

शुक्ले पूर्वार्द्धेऽष्टमी पंचदश्योर्भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्द्धे॥ कृ
ष्णेंत्यार्धे स्यात्तृतीयादशम्योः पूर्वे भागे सप्तमीशंभुतिथ्योः ९

टी॰ शुक्लपक्षमे अष्टमी ८ और पौर्णिमा १५ इनके पूर्वदलमे भद्रा होती है और उ
सीपक्षमें चतुर्थी ४ और एकादशी ११ के परदलमे भद्रा होती है और कृष्णपक्षमे तृ
तीया ३ और दशमी १० के परदलमें भद्रा और सप्तमी ७ और चतुर्दशी १४ के पूर्वदल
(में भद्रा होती है)

अन्यदपि॥ ॥दिवासर्पमुखी भद्रा रात्रौ भद्रातु वृश्चि
की॥ सर्पस्य च मुखं त्याज्यं रात्रौ पुच्छं परित्यजेत्॥१०॥

टी॰ दिनको भद्रा सर्पमुखी होती है और रात्रीमे भद्रा वृश्चिकी होती है इ
सलिये दिनको सर्पका मुख त्याग करना और रात्रिको पुच्छ परित्याग करना —

भद्रायाः मुखपुच्छविचारः॥ ॥पंचद्व्यद्रिकृताष्टरामरस
भूयामादिघट्यः शरा विष्टेरास्यमसद्गजेंदुरसरामाद्यश्वि
बाणाब्धिषु॥ यामेष्वंत्यघटित्रयं शुभकरं पुच्छं तथा वासरे
विष्टिस्तिथ्यपरार्धजा शुभकरी रात्रौ च पूर्वार्द्धजा॥११॥

टी॰ शुक्लपक्षीय चतुर्थीके पांचवे प्रहरकी पहिली पांच घडी भद्राका मुख
होता है सो शुभकर्ममे निंद्य है एवं शुक्लपक्षीय अष्टमी के द्वितीय प्रहरकी आ
दि ५ घडी मुख एवं एकादशीके सप्तम प्रहरकी ५ घडी मुख एवं पूर्णिमाकी ४
प्रहरकी ५ घडी मुख एवं कृष्णपक्षीय तृतीयाकी अष्टम प्रहरकी आदि ५ घ
डी मुख एवं सप्तमीके तृतीय प्रहरकी आदि ५ घडी मुख एवं दशमीमे षष्ठ प्रह
रकी आदि ५ घडी भद्रामुख एवं चतुर्दशीके प्रथम प्रहरकी ५ घडी भद्रामुख
होता है सो सर्वत्र शुभकर्ममे निंद्य है इसी तरेसे शुक्लपक्षमे चतुर्थीको अष्टम
प्रहरकी अंत्य ३ घडी भद्रापुच्छ होता है सो शुभ है एवं अष्टमीको प्रथम प्रहरकी
अंत्य ३ घडी पुच्छ एकादशीको ६ यामकी अंत्य ३ घडी पुच्छ पूर्णिमाको ३
प्रहरकी अंत्य ३ घडी पुच्छ इसी रीतिसे कृष्णपक्षके तृतीयाको ७ प्रहरकी अं
त्य ३ घडी पुच्छ सप्तमीको २ प्रहरकी अंत्य ३ घडी पुच्छ दशमीको ५ प्रहर
की अंत्य ३ घडी पुच्छ चतुर्दशीको ४ प्रहरकी अंत्य ३ घडी पुच्छ सो जानना
सो शुभकर है और जो परदलकी भद्रा पूर्वदलमे होय और पूर्वदलकी
भद्रा परदलमे होय तो वह भद्रा सम्पूर्ण कर्ममे शुभकारक जानना —

भद्रायाः शरीरविभागमाह॥ ॥मुखे पंच गले त्वेका वक्षस्येका
दश स्मृताः॥ नाभौ चतस्रः षट् कट्यां तिस्रः पुच्छे तु नाडिकाः १२

टी॰ मुखमे ५ कंठमे १ हृदयमे ११ नाभिमे ४ कटिमे ६ पुच्छमे ३ घडी
इसतरेसे ३० घडीमे भद्राका अंगविभाग होता है —

॥फलमाह॥ ॥कार्यहानिर्मुखे मृत्युर्गले वक्षसि निःस्व
ता॥ कट्यामुन्मत्तता नाभौ च्युतिः पुच्छे ध्रुवो जयः॥१३॥

टी॰ मुखमे कार्यहानि कंठमे मृत्यु हृदयमे दरिद्रता कटीमे उन्मत्तता
नाभीमे कार्यनाश पुच्छमे जयलाभ होगा —

चन्द्रतःस्वर्गमृत्युपातालवासज्ञानमाह ॥
कर्ककुम्भद्वये भूस्था कोर्प्यं जत्रिनयेद्युगा ॥ कन्या
चापद्वये चंद्रे भद्रा पातालवासिनी ॥ १४ ॥ ७ ॥ ७ ॥
टी० कर्क सिंह कुंभ मीन ये ४ राशीके चन्द्रमे भद्राकावास पृथ्वीमेजानना · वृश्चिक मेष वृषभ मिथुन ये ४ राशीके चंद्रमे भद्राका वास स्वर्गमेजानना कन्या · तुला · धन · मकर ये ४ राशीके चन्द्रमे भद्राकावास पातालमेजानना ·
फलम् ॥ ॥ स्वर्गे भद्रा भवेत्सौख्यं पाताले च धनागमः ॥ मृत्युलोके यदा भद्रा कार्यसिद्धिस्तदा नहि ॥ १५ ॥
टी० भद्रा स्वर्गमे रहनेसे सौख्य फल · पाताल मे धनागम · फल मृत्युलोकमे भद्रा कार्य हानिकरनी है —
वारफलत्वनामज्ञानं ॥ ॥ सोमे शुक्रे च कल्याणी शनौ चैव तु वृश्चिकी ॥ गुरौ पुण्यवती ज्ञेया चान्यवारे तु भद्रिका १६
टी० सोम शुक्रको भद्राहोयतो कल्याणीजानना शनिवारको वृश्चिकी गुरुवारको पुण्यवती और रवि मंगल बुधको होयतो भद्रिकानामजानना · नामानुरूपही फलजानना — ॥ इतिकरणप्रकरणम् ॥ ॥
अथ संक्रांतिप्रकरणम् ॥ ॥ घोरा रवौ ध्वांक्षि मृतशुतौ च संक्रांतिरारे च महोदरी स्यात् ॥ मंदाकिनी ज्ञे च गुरौ च नंदा मिश्रा भृगौ राक्षसि चार्कपुत्रे ॥ १ ॥ ॥
टी० रविवारके दिन संक्रांति होयतो घोरा नामजानना सोमको ध्वांक्षी नाम · मंगलको महोदरीनाम · बुधको मंदाकिनीनाम · बृहस्पतको नंदा नाम · शुक्रको मिश्रानाम · शनिवारके दिनहोयतो राक्षसीनामजानना · —
अन्यदपि ॥ ॥ उग्रक्षिप्रचरैर्मैत्रध्रुवमिश्राख्यदारुणैः ॥ ऋक्षैः संक्रांतिरर्कस्य घोराद्याः क्रमशो भवेत् ॥ २
टी० उग्रनक्षत्र तीनोपूर्वा भरणी मघा इननक्षत्रमे संक्रांतीहोयतो घोरा नामजानना क्षिप्र हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् इसनक्षत्रोंमे ध्वांक्षीनामजानना · चर स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शततारका इसनक्षत्रोंमे महोदरीनामजानना · मैत्र मृग रेवती चित्रा अनुराधा · इसनक्षत्रोंमे मंदाकिनीनामजानना · ध्रुव · तीनो उत्तरा रोहिणी इसनक्षत्रोंमे नंदानाम जानना ·

मिश्र विशाखा कृत्तिका इन नक्षत्रौं मे मिश्रनामजानना दारुण मूल ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा इन नक्षत्रौं मे संक्रांति होयतो राक्षसीनामजानना

फलं॥ ॥ध्वांक्षी वैश्यान्सुखयति महोदर्यं लं चोरसार्थान्घोरा शूद्रान्थनरपतीनेवमंदाकिनी च॥ नंदाख्या च द्विजवरगणान्मिश्रकाख्या पशूंश्च चांडालांतान्प्रकृतिमरविलांराक्षसीसंतिताच ३

टी० ध्वांक्षीनाम होयतो वैश्यको सुखजानना महोदरी होयतो चोरको सुख घोरा होयतो शूद्रको सुख मंदाकिनीनाम होयतो राजाको सुख नंदानाम होयतो ब्राह्मणको सुख मिश्रानाम होयतो पशूको सुख राक्षसीनाम होयतो चांडालादिकको सुखजानना—

कालफल॥ पूर्वाण्हकाले नृपतिर्द्विजेंद्रान्मध्यंदिने चाथ विशोपराण्हे॥ शूद्रान्रवावस्तमिते प्रदोषे पिशाचकान्रात्रिचरान्निशीथे॥४॥ नटादिकांश्चापररात्रकाले प्रत्यूषकाले पशुपालकांश्च॥ संक्रांतिरर्कस्य समस्तलिंगां प्रभातसंध्यासमयेनिहंति॥५॥

टी० दिनके प्रथमभागमे होयतो ब्राह्मणको और राजाको दुःखजानना मध्यान्हमे होयतो वैश्यको दुःखजानना दिनके तृतीयभागमे होयतो शूद्रको दुःखजानना रात्रिके प्रथमभागमे होयतो पिशाचको दुःखजानना मध्यरात्रिमे होयतो राक्षसको दुःखजानना रात्रीके तृतीयभागमे होयतो नटादिकको दुःखजानना अरुणोदयकालमे होयतो पशुपालकको दुःखजानना सूर्योदयकालमे होयतो गुसांई इत्यादिकोको दुःखजानना—

संक्रांतिमुखं॥ ॥अर्के शुक्रे मुखं पूर्वे सौम्ये भौमे च दक्षिणे॥ शनौ चंद्रे मुखं पश्चाद्गुरौ चैवोत्तरामुखी॥६॥

टी० रवि और शुक्रके दिन होयतो पूर्वमुखजानना बुध औ मंगलको होयतो दक्षिणमुखजानना शनि वो सोमको होयतो पश्चिममुख जानना बृहस्पतिके दिन होयतो उत्तरमुखजानना—

करणपरत्वे संक्रांतिमुखं॥ ॥बवे पूर्वमुखं प्रोक्तं बालवे यमदिङ्मुखं॥ कौलवे पश्चिममुखं तैतिले चोत्तरे मुखं ७ गरे वायव्यदिग्वक्त्रं वाणिज्याग्नेयदिङ्मुखं॥ भद्रायामीशदिग्वक्त्रं शकुने निर्ऋतौ मुखं॥८॥ चतुष्पदी च पाताले नागे चो र्ध्वे

सुखी भवेत्॥ किंस्तुघ्नेसर्वेदिग्वक्त्रे संक्रांतिमुखलक्षणं॥९॥

टी० ववकरणमे संक्रांति होयतो पूर्वमुखजानना बालवकरणमे होयतो दक्षिणमुखजानना कौलवकरणमेहोयतो पश्चिममुखजानना तैतिलकरणमेहोयतो उत्तरमुखजानना गरकरणमेहोयतो वायव्यमुखजानना वणिजकरणमेहोयतो आग्नेयमुखजानना भद्राकरणमेहोयतो ईशान्यमुखजानना शकुनीकरणमेहोयतो नैर्ऋत्यमुखजानना चतुष्पदकरणमेहोयतो पातालमुखजानना नागकरणमेहोयतो ऊर्ध्वमुखजानना किंस्तुघ्नकरणमेहोयतोसर्वदिक्मुखजानना॥ अथदृष्टि॥

चंद्रेगुरौदृष्टिविदिक्कृशानौसूर्येसितेनैर्ऋत्विकोणदृष्टिः॥

धात्रीसुतेदृक्पवनेनिरुक्ताबुधेशनौरुद्रदिशीक्षणं भवेत् १०

टी० सोम और बृहस्पतिकोहोयतो अग्निकोणमेदृष्टिजानना रवि और शुक्रकोहोयतो नैर्ऋत्यकोणमेजानना मंगलकोहोयतो वायुकोणमेजानना बुधवोशनीकोसंक्रांतिहोयतो ईशान्यकोणमेजानना—

अथगमनं॥ ॥मंदेचंद्रेगमः सौम्येबुधेभौमेचवारुणे॥रवौशुक्रेगमोयाम्येगुरौप्राच्यांगमनंस्मृतम्॥११॥

टी० शनी और सोमको होयतो उत्तरदिशामेगमनजानना बुध ओ मंगलकोहोयतो पश्चिमगमनजानना रविऔर शुक्रकोहोयतो दक्षिणगमनजानना बृहस्पतीकोहोयतो पूर्वदिशामेगमनजानना

स्थिति॥ ॥चतुष्पदेतैतिलनागयोश्चस्थलोरविःसंक्रमणंकरोति॥विघाह्वबाख्येचगराह्वयेचसवालवाख्येस्थितएवविष्टौ॥१२॥ फल॥ ॥किंस्तुघ्ननाम्निशकुनेचणिकौलवाख्येचोर्ध्वेस्थितस्यरवलुसंक्रमणंरवेःस्यात्॥ धान्यार्घवृष्टिषुभवेत्क्रमशस्त्वदृष्टामध्येष्टलेतिमुनयः प्रवदंतिपूर्वं॥१३॥ ॥वाहन॥ ॥सिंहोव्याघ्रोवराहश्चखरदभःकुंजरस्तथा॥महिषीघोटकश्वाचछागोवृषभकुक्कुटौ॥१४॥गजोदाजिर्वृषोमेषःखरोष्ट्रौकेसरीत्रमात्॥ शार्दूलमहिषीव्याघ्रवानराश्ववराहितः॥१५॥ ॥फल॥ ॥ गजेलक्ष्मीहयेस्थैर्यंघोटकेवाहनेतथा॥सिंहेव्याघ्रेभयं

प्रोक्तंस्त्रभिस्तंगर्दभेशुनौ॥१६॥ वराहेमहतीपीडाजायते
मेषवाहने॥ महिष्यांश्चभवेत्क्लेशःकुक्कुटेमृत्युरेवच॥१७
॥वस्त्र॥ श्वेतपीतहरितंचपांडुरंरक्तश्याममसितंबहु॰
वर्णं॥ कंबलंविवसनंघनवर्णान्यंशुकानिचववादितःक्र॰
मात्॥१८॥ आयुध॥ ॥भुशुंडीचगदाखड्गंदंडकोदंडतो
मरान्॥ कुंतपाशांकुशास्त्रंचबाणश्चैवायुधंववात्॥१९॥
॥भोजनपात्र॥ ॥सौवर्णराजतंताम्रंकांस्यंलोहंचख
र्परं॥ पत्रंवस्त्रंकरोभूमिःकाष्ठपात्रंववादितः॥२०॥ ॥
॥भक्ष्यपदार्थ॥ ॥अन्नंचपायसंभक्ष्यंपक्वान्नंचपयोद॰
धि॥ चित्रान्नंगुडमध्वाज्यंशर्करातुववादितः॥२१॥ ॥॰
॥लेपन॥ कस्तूरीकुंकुमंचैवचंदनंमृत्तिकातथा॥ गोरोच
नमरक्तश्चहरिद्राचतथांजनं॥२२॥ सिंदूरमगरुश्चैवक
र्पूरश्चववादितः॥ ॥जाति॥ ॥देवभूताहिविहगपशवो
मृगएवच॥ ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रमिश्रजातीववादितः॥
॥२३॥ पुष्प॥ पुन्नागजातीबकुलश्चकेतकीबिल्वस्तथा
र्ककमलंचदूर्वा॥ मल्लीतथापाटलिकाजपाचववादिपु॰
ष्पाणिचयोजयेत्तु॥२४॥ ॥भूषण॥ ॥नूपुरंकंकणंमुक्ता
विद्रुमंमुकुटंमणिं॥ गुंजावराटकंनीलंगरुत्मंरुक्मकंव
वात्॥२५॥ ॥कंचुकी॥ ॥विचित्रपत्रांशुकभूर्जपत्रिका॰
सीनातथापाटलनीलवर्णा॥ कृष्णाजिनंचर्मचवल्कपां
डुराववादितश्चैवतुकंचुकीस्यात्॥२६॥ ॥वय॥ शिशू
कुमारीचगतालुकायुवाप्रौढाप्रगल्भाचततश्चवृद्धा॥
वंध्यातिवंध्याचसुतार्थिनीचप्रव्राजकाचैवफलंशुभं
ववात्॥ यद्दृयोनुरूपंस्यात्तस्यतस्यमहद्भयम्॥॰
॥२७॥ पंथाश्वभोगोरतिहास्यदुर्मुखीज्वरान्विताभु
क्तिसुकंपिनामृता॥ ध्यानस्थिताकर्कशाबहुरूपिणी
ववायवस्याःकथितामुनीद्रैः॥२८॥

टी॰ येसब वस्तूका नीचे लिखे चक्रपरसे ज्ञानहोवेगा- कोष्टक

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनी	चतुष्प·	नाग	किंस्तु
स्थिती	बैठी	बैठी	खडी	सूती	बैठी	खडी	सूती	खडी	सूती	सूती	खडी
फल	मध्य	मध्य	महंगा	सस्ता	मध्य	महंगा	मध्य	महंगा	सस्ता	सस्ता	महंगा
वाहन	सिंह	व्याघ्र	सुवर	गधा	हाथी	भैंस	घोडा	कुत्ता	मेंडा	बैल	मुरगा
उ·वा	हाथी	घोडा	बैल	मेडा	गधा	ऊंट	सिंह	बाघ	भैंस	बाघ	वानर
फल	भय	भय	पीडा	स्वस्थ	लक्ष्मी	क्लेश	रूक्ष	स्थिर	पीडा	स्थिर	मृत्यु
वस्त्र	सफेद	पीला	हरा	गुलाबी	लाल	नील	कृष्ण	छींट	ऊन	सफेद	धूम
आयु·	तोप	गदा	खड्ग	दंड	धनु	[illegible]	भाला	फांस	अंकु·	गलेला	बाण
पात्र	सोना	चांदी	तांबा	कांसा	लोहा	ठीकरा	पत्ता	कपडा	हाथ	भूमी	काठ
भक्षण	अन्न	खीर	भात	घिवार	दूध	दही	खिच·	गुड	सहत	घीव	चीनी
लेपन	कस्तूरी	रोरी	चंदन	गोपीचं	गोरोचन	रक्तचं	हरदी	काजल	सेंदुर	अगर	कपूर
वर्ण	देव	भूत	सर्प	पशू	मृग	ब्राह्म	क्षत्रि·	वैश्य	शूद्र	वर्णसं	चांडा·
पुष्प	केसर	जाही	मौलसरी	केवडा	बेल	मंदार	कमल	दूब·	बेला	गुलमेह	ओडहु
भूषण	घुंगरू	कगना	मोती	मूंगा	मुकुट	मणी	घुंघची	कवडी	लोल	कांच	सुवर्ण
कंचुकी	चीर	पत्ता	तुरी	भूर्जप	सफेद	गुलाबी	नील	कृष्ण	चर्म	वल्क	धूम्र
वय	बाल	कुमारी	विध	युवा	मध्य	अंत्यव	वृद्धा	बंध्या	अं·ध	पु·व	वंदुल
अवस्था	पंथा	भोग	रति	हास्य	द्वेष	स्वप्न	भुक्ति	कंपि	मृता	ध्यान	कर्क

फल॥ ॥आयुधंवाहनाहारोपजातीधंधवंचयत्॥
रूक्षोपविष्टास्तिष्ठंतस्तेलोकास्वपाप्नुयुः॥२९॥॥
टी०जोवाहनादिकवस्तूपरसंक्रांतिकाभोगहोयतोउसवस्तूकानाशजानना·
मूर्त्तयः॥ ॥संक्रांतौमूर्त्तिभेदाहरपवनयमेवारुणेसार्प
ऐंद्रेएषाप्चेंदुसंज्ञागुरुकरपितृभेचाश्विदस्त्रेचसौम्ये
॥त्वाष्ट्रेमैत्रेचमूलेश्रुतिवसुवपुषाचांत्यपूर्वास्वरा
मेब्राह्मेदित्येहिर्दैवेभवतिशशरकंताडुत्तरात्रीणिरक्षं
॥३०॥बाणवेदैःसमर्घंस्यान्माघास्वंक्षामरामयोः॥ सू
नैःपंचदशीपातेदुर्भिक्षंचप्रजायते॥३१॥७॥७॥७॥
टी० संक्रांतीकामूर्त्तिभेदकहतेहैं आर्द्रा स्वाती भरणी शतभिषा आश्लेषा
ज्येष्ठाइसनक्षत्रमेहोयतोदुर्भिक्षहोयप्रजाकोदुःखहोय १ मूर्त्तीजानना पुष्य
हस्त मघा कृत्तिका अश्विनी मृग चित्रा अनुराधा मूल श्रवण धनिष्ठा रेवती
तीनोपूर्वा इसनक्षत्रमेहोयतोमध्यमफलजानना २ मूर्त्ती रोहिणी पुनर्वसु
विशाखा तीनोउत्तरा इसनक्षत्रमेहोयतोअन्नकोसुखहो ३ पूमूर्त्ती जानना

दूसराप्रकार॥ ॥पूर्वसंक्रांतिनक्षत्रात्परसंक्रांतिऋक्ष
कं॥द्वित्रिसंख्यासमर्घंस्याच्चतुःपंचमहर्घता॥३२॥
टी॰गतसंक्रांतिसेप्राप्तसंक्रांतितकगिनना २अथवातीननक्षत्रकाअंतर
होयतोसमर्घजानना॰४अथवा५नक्षत्रकाअंतरहोयतोदुर्भिक्षजानना॰
अन्यदपि॥संक्रांतिनाडीनवभिर्मिश्रिताचसप्ताहृतापावकभा
जिताच॥एकेसमर्घंहीनयेचसौम्यंशून्येमहर्घंमुनयोवदंति ३३
टी॰संक्रांतीकेघडीमे९मिलावना७सेगुणदेना३सेभागलेना१शेषरहेतो
उत्तमफलजानना २शेषरहेतो मध्यमजानना॰ शेषरहेतोमहर्घताजानना॰
संक्रांतिनक्षत्रफल॥ ॥संक्रांत्यधरनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभा
वधि॥त्रिकंषट्कंत्रिकंषट्कंत्रिकंषट्कंपुनःपुनः॥३४॥
पंथाभोगोव्यथावस्त्रंहानिश्चविपुलंधनम्॥७॥७॥
टी॰संक्रांतिजिसनक्षत्रमेलगेउसनक्षत्रसेजन्मनक्षत्रतकगिननेकीरीति
प्रथम३नक्षत्रपंथा६भोग३व्यथा६वस्त्र३हानि६धनप्राप्तीइसरीतिसेजानना॰
जन्ममासतिथीनक्षत्रफल॥ ॥यस्यजन्मर्क्षमासाद्यति
थौसंक्रमणंभवेत्॥तन्मासाभ्यंतरेतस्यवैरंक्लेशंधनक्षयः ३५
टी॰जन्मनक्षत्रमेसंक्रांतिलगेतोवैरजानना जन्ममासमेहोयतोक्ले
शजानना जन्मतिथीकोहोयतो धनकानाशजानना॰

संक्रांतिरूपमाह॥षष्टियोजनविस्तीर्णासंक्रांतिःपुरुषाकृतिः॥
एकवक्त्रानवभुजालंबोष्ठीदीर्घनासिका॥३६॥पृष्ठालोकाभ्रमं
त्येवगृहीत्वाखर्परंकरे॥एवंसंक्रमणेयस्याःफलंप्रोक्तंमनीषिभिः
टी॰ संक्रांतिकाशरीरप्रमाण२४०कोसऔर पुरुषकेऐसाआकार१
मुख९भुजा ओठलंबा बडीनासिका आगेदेखतीहै पीछेचलतीहै॰
हाथमेखपरालियेहै भ्रमणकरतीहै ऐसारूपसंक्रांतीकाजानना॰
संक्रांतिकेहाथमेफल॥ ॥मेषालिकर्केचनथैवरक्तंचापेच
मीनेचतुलेचपीतं॥श्वेतंवृषेस्त्रीमिथुनेचचंद्रेकृष्णंचन
क्रेघटेचसिंहे॥३८॥रक्तेफलंभवेद्दुःखंश्वेतेचैवसुखंसु
भं॥पीतेश्रीस्तुनथाप्रोक्ताश्यामेमृत्युर्नसंशयः॥३९॥७॥
टी॰ मेष वृश्चिक कर्क इसतीनराशीकेचंद्रमामेसंक्रांतीप्रवेशहोयतोहा

ष्यमेरक्तफलजानना· औरप्रजाकोदुःखप्राप्तीजानना धनमीनतुला इस
तीनराशीकेचंद्रमामेसंक्रांतीप्रवेशहोयतोपीनफलजानना· लक्ष्मीप्रा
प्तीहोय वृषकन्या· मिथुन इसतीनराशीकेचंद्रमामेसंक्रांतीप्रवेशहो
यतोसफेदफलजानना· सुखप्राप्तीहोय मकरकुंभसिंह इसतीनराशी
केचंद्रमामेंसंक्रांतीप्रवेशहोयतोकृष्णफलजानना मृत्युप्राप्तिजानना·

संक्रांतिपुण्यकाल॥ ॥संक्रांतिकालादुभयत्रनाडिः
काःपुण्यामताःषोडशषोडशोभयागोः॥निशीथतोर्वा
गपरत्रसंक्रमेपूर्वापराहंनिमपूर्वभागयोः॥५०॥

टी० संक्रांतीके पूर्व और पर १६ घडीपुण्यकालहोनाहै परंतु आधीरात
केपहिलेहोयतोदिनकेतृतीयभागमेपुण्यकालजानना आधीरात्रकेबाद
होयतोपरदिनकेपूर्वभागमेपुण्यकालजानना-॥ इतिसंक्रांतिप्रकरणं॥

अथग्रहणप्रकरणम्॥

तत्रादौचंद्रग्रहणकीप्रवृत्ती॥ ॥भानोःपंचदशेऋक्षेचंद्रमाय
दितिष्ठति॥पौर्णमास्यांनिशाशेषेचंद्रग्रहणमादिशेत्॥१॥

टी० सूर्यनक्षत्रसे१५वेनक्षत्रमेचंद्रमाहोय और पौर्णिमाहोयकेरा
तबचजायतोचंद्रग्रहणकीप्राप्तीजानना·—

सूर्यग्रहणम्॥ ॥भाधोनंग्रस्तनक्षत्रात्षोडशंयदिसू
र्यभं॥अमावास्यादिवाशेषेसूर्यग्रहणमादिशेत्॥२॥

टी० सबमहिनेमेसूर्यऔरचंद्र अमावास्याकेदिन एकराशीमेप्राप्तहोते
है परंतुग्रहणकालमेएकनक्षत्रमेदिनकोआयकेअमावास्याजायकेदिनशे
षरहेतोसूर्यग्रहणकीप्राप्तीजानना· परउसदिनचंद्रनक्षत्रसेसूर्यनक्षत्रग
िनना·११निकालकेसोरह१६वानक्षत्रआवेतोसूर्यग्रहणजानना·—

राशीकेशुभाशुभ॥ ॥त्रिषडूदशायोपगतंनराणांशु
भप्रदंस्याद्ग्रहणंरवीन्द्वोः॥द्विसप्तनंदेषुचमध्यमंस्या
त् शेषेष्वनिष्टंमुनयोवदंति॥३॥ ७॥ ९॥ ॥

टी० सूर्यअथवाचंद्रग्रहणअपनेराशीसेतृतीय३षष्ठ६दशम१०एकादश
११येराशीशुभहोतीहैं· और द्वितीय२सप्तम७नवम९ येमध्यमजानना·
+प्रथम१चतुर्थ४पंचम५अष्टम८द्वादश१२ येअशुभजानना·—

दूसराप्रकार॥ ॥ग्रासाच्चतीयोष्टमगश्चतुर्थस्तथा पसंस्थःशुभदःस्वराशेः॥ग्रासाद्विःपंचनवर्तु मध्यस्ततोधमोक्ताश्ववुधैश्चशेषाः॥४॥ छ॥ ॥

टी॰ सूर्यग्रहणजिसराशीमेलगेउसराशीसे ३।८।४।११ येशुभजानना ५।९।२।६ येमध्यमजानना १।२।३।१०।१२ येअशुभजानना ॥इतिग्रहणप्रकरणम्॥

॥अथऋतुप्रकरणम्

तिथिरेकगुणाप्रोक्तानक्षत्रंचचतुर्गुणं॥वारःषष्ठगुणोक्ते योमासश्चाष्टगुणःस्मृतः॥१॥वर्षंभंशतगुणंविद्याद्दर्शनंच ततोधिकम्॥संक्रांत्यांग्रहणेचैववैरिणीचगतायुका॥२॥

टी॰ स्त्रीकोप्रथमऋतुप्राप्तहोताहै उसकाफलाफलयथाविधिसबकहतेहैं तिथीकाएकगुण १ नक्षत्रकाचार ४ वारका ६ गुण महिनेका ८ गुण वर्षका १०० गुण औरजोदेखेउसकोबहुतदोषहै संक्रांतीकेदिनऋतुप्राप्तहोयतो वंध्याहोय औरग्रहणकेदिनहोयतोविधवाहोतीहै॥—

मासफल॥ ॥प्रथमेचैत्रमधौनारीविधवाभवतिध्रुवं॥ वैशाखेधनपुत्राढ्याज्येष्ठेरोगान्विताभवेत्॥३॥आषाढे चमृतापत्याश्रावणेचधनान्विता॥भाद्रेचदुर्भगाज्ञेयाश्वा श्विनेचतपस्विनी॥४॥ऊर्जेल्पायुष्मतीनारीमार्गशीर्षेब हुप्रजा॥पौषेतुपुंश्चलीनारीमाघेपुत्रसुखान्विता॥५॥फा ल्गुनेश्रीमतीसाध्वीक्रमान्मासफलंस्मृतम्॥छ॥ छ॥॥

टी॰ स्त्रीकेप्रथमऋतूचैत्रमेप्राप्तहोयतोविधवाजानना वैशाखमेहोयतो धनपुत्रकरकेयुक्त ज्येष्ठमेहोयतोरोगयुक्तहोतीहै आषाढमेहोयतो मृतप्रजा श्रावणमेहोयतोधनयुक्त भाद्रपदमेहोयतोदुर्भगाहोतीहै आश्विनमेहोयतोतपस्विनी कार्तिकमेहोयतोथोडाआयुष्य मार्गशीर्ष मेहोयतोबहुतप्रजा पौषमेहोयतोजारिणी माघमेहोयतोपुत्रसुख युक्त फाल्गुनमेहोयतोपतिव्रताजानना—

तिथिफल॥ ॥शुचिर्नारीप्रतिपदिद्वितीयायांतुदुःखिनी॥ तृतीयायांपुत्रवतीचतुर्थ्यांविधवाभवेत्॥६॥पंचम्यांचैवसौ भाग्यंषष्ठ्यांकार्यविनाशिनी॥सप्तम्यांसुप्रजानारीचाष्टम्यां—

राक्षसीतथा ॥ नवम्यांविधवानारी दशम्यांसौख्य
भोगिनी ॥ एकादश्यांशुचिर्नारी द्वादश्यांमरणंध्रुव
म् ॥ ८ ॥ त्रयोदश्यांशुभाप्रोक्ता चतुर्दश्यांपरान्विता ॥
पौर्णिमास्यामभावास्यांशुभंचाशुभमेवच ॥ ९ ॥ ७ ॥

टी० स्त्रीको प्रथम ऋतु प्रतिपदाको प्राप्त होयतो पवित्र जानना· द्वितीयाको दुःखी· तृतीयाको पुत्रवती चतुर्थीको विधवाजानना· पंचमीको होयतो सौभाग्यवती षष्ठीको होयतो कार्यनाश· सप्तमीकोहोयतो सुप्रजा अष्टमीकोहोयतो राक्षसी· नवमीकोहोयतो विधवा· दशमीकोहोयतो सुखका भोगकरै एकादशीकोहोयतो शुचि· द्वादशीकोहोयतो मरणप्राप्ती त्रयोदशीकोहोयतो शुभजानना· चतुर्दशीकोहोयतो परस्त्र होय पौर्णिमाकोहोयतोशुभजानना· अमावास्याकोहोयतो अशुभजानना· —

वारफल॥ ॥आदित्येविधवानारी सोमेचैवमृतप्रजा॥सौमी
पुत्रेआत्मघातीबुधेकन्याप्रसूयुता॥१०॥गुरुवारेसुत प्राप्तिःक
न्यापुत्रयुताभृगौ॥मंदेच पुंश्चलीनारी ज्ञेयंवारफलंबुधैः॥११॥

टी० स्त्रीको रविवारको ऋतुप्राप्तहोयतो विधवाहोतीहै सोमवारको होयतो मृतप्रजाहोय मंगलकोहोयतो आत्मघाती बुधकोहोयतोकन्याबहुतहोय बृहस्पतीकोहोयतो पुत्रप्राप्ती शुक्रकोहोयतोकन्या पुत्रयुक्त होय शनिवारकोहोयतो जारिणीहोतीहै· —

अथनक्षत्रफलं॥ ॥अश्विन्यांसुभगानारी भरण्यांविधवाभवेत्
॥कृत्तिकायांचवंध्यास्याद्रोहिण्यांचारुभाषिणी॥१२॥मृगेदारि
प्रयुक्तास्यात्चार्द्रायांक्रोधकारिणी॥पुनर्वसौपुत्रवतीपुष्येपु
त्रधनान्विता॥१३॥आश्लेषायांभवेद्दुष्टामघायांचार्थसंयु
ता॥पूर्वायांचार्थयुक्ताहिचोत्तरायांसतीतथा॥१४॥हस्ते
पुत्रधनैर्युक्ताचित्रायामनुचारिणी॥स्वात्यांन्यगर्भावहवा
विशाखायांनुनिष्ठुरा॥१५॥मैत्रेचसुभगानारीज्येष्ठायांविध
वाभवेत्॥मूलेपतिव्रतासाध्वीपूर्वासौभाग्यभोगिनी॥१६॥
उत्तरायांवतीप्रोक्ताश्रवेसौभाग्यसंपदा॥धनिष्ठायांशुभानारी
शतेभद्रान्विताबुधैः॥१७॥पूर्वभेचोक्ताकामिनीनुउभेलक्ष्मीयु

ताशुभा॥ रेवत्यां पतिरिक्तातु ज्ञेयं भानां फलं बुधैः॥१८॥

टी॰ नक्षत्रोंमे ऋतुप्राप्तका फल शुभाशुभ कोष्ठक परसे मालूम होवेगा·—

अ·	सुभगा	पु·	पुत्रधनयुक्त	स्वा	पररता	श्र·	सौभाग्य
भ·	विधवा	आ·	वंध्या	वि·	निष्ठुर	ध·	शुभा
कृ	वंध्या	म·	द्रव्ययुक्ता	अ·	दुर्भगा	श·	कल्याण
रो	चारुभाषिणी	पू	द्रव्ययुक्ता	ज्ये	विधवा	पू	रूपीयुक्ता
मृ	दारिद्र्य	उ·	पतिव्रता	मू·	पतिव्रता	उ·	शुभा·
आ·	क्रोधी	ह	पुत्रधनयुक्ता	पू·	सौभाग्यवती	रे	पतित्यागी
पु	पुत्रवती	चि·	पतिमनोयोग्य	उ·	धनयुक्ता·		

योगफलं॥ ॥आद्यैर्विधवानारी विष्कंभेचरजस्वला॥ स्ने

हः प्रीत्यातु दंपत्योरायुष्मांस्तु धनप्रदः॥१९॥ सौभाग्ये पुत्रयुक्ता

तु शोभने मंगलान्विता॥ अतिगंडेतु विधवा सुकर्मणितु शोभना २०

धृतौसंपत्तियुक्ताच शूले रोगयुता भवेत्॥ गंडे दुःखान्विता ना

री वृद्धौ पुत्रान्विता भवेत्॥ २१॥ ध्रुवे तु शोभना नारी व्याघाते भ

र्तृघातिनी॥ हर्षणे हर्षयुक्तातु वज्रे वैधानपत्यता॥ २२॥ सि

द्धौ पुत्रान्विता नारी व्यतीपाते विभर्तृका॥ मृतवत्साच वरीयणे परि

घे चाल्पजीवनी॥ २३॥ शिवे पुत्रवती नारी सिद्धे सौप्रफलान्विता

॥साध्येधर्मपरानारी शुभे शुभगुणान्विता॥ २४॥ शुक्ले शुभकरा नारी

ब्रह्मणिस्वपतौ रता॥ ऐंद्रेतु देवररता वैधव्यं वै धृतौ स्मृतम्॥ २५॥

टी॰ योगफल शुभाशुभ कोष्ठकपरसे जान लेना·   कोष्ठकम्

वि	विधवा	धृ	संपत्तियुता	व	अपुत्रा	सा·	धर्मयुक्ता
प्री	पतिस्नेह	शू	रोगयुता·	सि	पुत्रयुक्ता	शु	उत्तमलक्षणा
आ	धनयुक्त	गं	दुःखयुक्ता	व्य	नष्टपती	शु	शुभकारिणी
सौ	पुत्रयुक्त	वृ	पुत्रयुक्ता	व	मृतवत्सा·	ब्र	पररता
शो	मंगलहोय	ध्रु	शोभना	प	अल्पजीवी	ऐंद्र	देवररता·
अ	विधवा·	व्या	पतिघातिनी	शि	पुत्रयुक्ता	वै·	वैधव्य·
सु	शोभना·	ह	हर्षयुक्ता	सि	फलप्राप्ती·		

कर्णफल॥ ॥बवेप्रोक्तातु वंध्यास्त्री बालवे पुत्रसंपदः॥ कौ

लवे पुंश्चली नारी तैतिले चारुभाषिणी॥ २६॥ गरेच गुणसं

पन्ना वणिजे पुत्रिणी स्मृता॥ विष्ट्यांच मृतवत्साच शकुने

क्षयपीडिता॥ २७॥ चतुष्पदे शुभा नारी नागे पुत्रवती भवेत्॥ किंस्तुघ्ने व्यभिचारी तु करणानां शुभं फलं॥ २८॥

टी० बवकर्णमे ऋतुप्राप्त होयतो वंध्या जानना· बालवमे पुत्रवती कौलवमे जारिणी तैतिलमे चारुभाषिणी गरमे होयतो गुणयुक्त वणिजमे होयतो पुत्रिणी भद्रामे होयतो मृतवत्सा जानना· शकुनीमे होयतो अतिकामी जानना· चतुष्पदमे होयतो शुभा जानना· नागमे होयतो पुत्रवती जानना· किंस्तुघ्नमे होयतो वेश्या जानना·

राशिफल॥ ॥व्यभिचारी तु मेषे स्याद् वृषभे सुखभोगिनी॥ मिथुने धनयुक्ता च कर्कटे दुःखिता बुधैः॥ २९॥ सिंहे पुत्रवती नारी कन्यायां मानिनी शुभा॥ तुले विचक्षणा नारी वृश्चिके व्यभिचारिणी॥ ३०॥ धने पतिव्रता ज्ञेया मांसहीना च मकरे॥ कुंभे धनवती ज्ञेया मीने चंचला बुधैः॥ ३१॥ ७॥

टी० मेषराशीमे ऋतुप्राप्त होयतो जारिणी जानना वृषमे सुखभोगिनी जानना मिथुनमे धनयुक्त जानना· कर्कमे दुःखिता जानना सिंहमे पुत्रवती जानना· कन्यामे अभिमानी जानना· तुलामे विचारवान् जानना· वृश्चिकमे वेश्या जानना· धनमे पतिव्रता जानना· मकरमे कुशांगी जानना कुंभमे धनयुक्त जानना· मीनमे चंचला जानना·

होराफल॥ सूर्ये च व्याधिसंयुक्ता चंद्रे होरे पतिव्रता॥ कुजे होरे तु दौर्भाग्यं बुधे होरे तु पुत्रिणी॥ ३२॥ जीवे सर्वसमृद्धिः स्याद् भृगौ सौभाग्यमेव च॥ शनौ सर्वविनाशाय होरकस्य फलं बुधैः ३३

टी० होराका शुभाशुभ फल कोष्टकमे देखने से मालूम होगा· —

होरा	फल	होरा	फल
सूर्यकी होरा	व्याधी	गुरूकी होरा	सर्वसमृद्धी
चंद्रकी होरा	पतिव्रता	शुक्रकी होरा	सौभाग्य
मंगलकी होरा	दुर्भगा	शनीकी होरा	सर्वविनाशिनी
बुधकी होरा	पुत्रिका		

लग्नफल॥ ॥मेषलग्ने दरिद्रा च वृषभे धनसंयुता॥ कामिनी मिथुने लग्ने कर्कटे पतिनाशिका॥ ३४॥ सिंहे पुत्र

प्रसूता च पतियुक्ता स्त्रिलग्नके॥ तुले वैवांधता दासी द

श्चिकेदद्रुदुःखिनी॥३५॥ धनलग्नेधनैश्वर्यंमकरेक
र्कशाभवेत्॥ कुंभेवंशक्षयघ्नीचमीनेसर्वगुणान्विता ३६
टी० प्रथमजोराशीमेसूर्यहोयसोलग्नसूर्योदयमेहोताहै उदयलग्नसे
अस्ततक ६ लग्नभोगतेहैं अस्तसेउदयतक ६ लग्नभोगकरतेहैं मेषल
ग्नमेऋतुप्राप्तहोयतोदरिद्रीजानना वृषमेधनयुक्ताजानना मिथुनमे
कामयुक्तजानना कर्कमेपतिनाशिनीजानना सिंहमेपुत्रवतीजानना क
न्यामेपतियुक्ताजानना तुलामेअंधताजानना वृश्चिकमेदद्रुऔर दुः
खिजानना धनमेधनयुक्ताजानना मकरमेकर्कशाजानना कुंभमेदोनों
वंशकाघातजानना मीनमेहोयतो गुणयुक्तजानना —

ग्रहोंकाफल॥ ॥लग्नेराहुश्चसौरिश्चरविचंद्रौतथैवतु॥
तदासाविधवानारीसर्वसौभाग्यवर्जिता॥३७॥ छ॥ ॥
टी० जिसलग्नमेस्त्रीकोप्रथमऋतुप्राप्तहोयउसलग्नमेराहुहोयअथवाशनी
होयअथवारविहोयअथवाचंद्रमाहोयतोविधवाजानना सौभाग्यसेवर्जितहोय

रक्तफल॥ ॥प्रथमार्त्तौफलंस्त्रीणामुच्यतेरजसाधुना॥
सुभगापुत्रसंयुक्ताशुक्लवर्णेतथार्त्तवे॥३८॥ शशशोणि
तसंकाशेयद्वावैलक्तसन्निभे॥ पुत्रकन्याप्रसूतीस्यान्नी
लेतुस्यान्मृतप्रजा॥३९॥ कर्बुरेम्रियतेसाचपिंगलेचमृ
तप्रजा॥ कृष्णेचविधवानारीरजस्येवंविनिर्दिशेत्॥४०॥
वरामध्यस्त्रवास्यात्तुदुर्भगाबहुशोणिता॥ शोणितेबिंदु
मात्रेतुस्वैरिणीचाल्पशोणिता॥४१॥ रक्तेरक्तेभवेत्पुत्रः
कृष्णेचमृतपुत्रिका॥ पिच्छिलाचभवेद्वंध्याकाकवंध्या
चपांडुरा॥४२॥ पीतेदुश्चारणीप्रोक्तासुभगागुंजवर्णके
॥ सिंदूराभेभवेत्कन्यारजःशोणितलक्षणम्॥४३॥ छ॥
टी० स्त्रीकोप्रथमऋतुप्राप्तहोनाहै उसमेरक्तकाफल कहतेहैं शुक्लवर्णरु
धिरहोयतो पुत्रवतीजानना शशिकहिये खरगोसकेऐसा रुधिरहोयतो भी
पुत्रवतीजानना माहुरकेऐसावर्णहोयतो कन्यावतीजानना नीलवर्णहो
यतोमृतप्रजा कर्बुरकहिये चित्रविचित्रवर्णहोयतो स्त्रीमरे पिंगलकहि
येकुछश्वेतकुछपीतवर्णहोयतोमृतप्रजाजानना कृष्णवर्णहोयतोविध

वाजाननाः मध्यरक्त होयतो श्रेष्ठजानना बहुतरक्त होयतो दुर्भगाजानना
थोडारक्त वा बिंदुमात्र होयतो अप्रजाजानना लालरक्त होयतो पुत्रवती
जानना कृष्ण होयतो मृतप्रजा पिछिल कहिये पंखके वर्ण ऐसा होयतो
वंध्याजानना गुलाबी वर्ण होयतो काकवंध्याजानना पीतवर्ण होयतो वे
श्याजानना घुंगचीके ऐसा वर्णी होयतो शुभजानना सिंदूरके ऐसा वर्ण हो
यतो कन्याप्रसूतीजानना इसनरेसे रक्तमालूमकरके शुभाशुभफल कहना

कालफल॥ ॥पूर्वाण्हे सुभगा प्रोक्ता मध्यान्हेचैव निर्धना॥ अप
राण्हे ऽशुभाचैव सायान्हे सर्वभोगिनी॥५४॥ संध्ययोरुभयोर्वेश्या
निशीथे विधवा भवेत्॥ पूर्वरात्रे तथा वंध्या दुर्भगा सर्वसंधिषु॥५५

टी० दिनके पूर्वभागमे ऋतुप्राप्त होयतो सुभगाजानना मध्यान्हमे होयतो ध
नहीनजानना अपराण्हमे होयतो अशुभ सायान्हमे होयतो सर्वसुखयुक्त जा
नना दूनोसंध्यामे होयतो वेश्याजानना अर्धरात्रीमे होयतो विधवाजान
ना पूर्वरात्रीमे होयतो वंध्याजानना संधीमे होयतो अशुभजानना

वस्त्रफल॥ ॥सुभगा श्वेतवस्त्राच रोगिणी रक्तवस्त्रका
॥नीलांबरधरा नारी विधवा पुष्पवंतिका॥५६॥ भोगिनी
पीतवस्त्राच मिश्रवस्त्रा वरप्रिया॥ सूक्ष्मा स्यात् सूक्ष्मवस्त्रा
चदृढवस्त्रा पतिव्रता॥५७॥ दुर्भगा जीर्णवस्त्राच सुभगा
मध्यवाससा॥ धूतवस्त्रा शुभा नारी मलिनी मलिना भवेत् ५८

टी० स्त्रीको प्रथम ऋतु सफेद वस्त्रपर होयतो सुभगाजानना लालवस्त्र हो
यतो रोगयुक्त नीलवस्त्र होयतो विधवा पीतवस्त्र होयतो सुखयुक्त वि
चित्रविचित्र होयतो पतिप्रिय महीनवस्त्र होयतो कृशांगी मजबूतवस्त्र हो
यतो पतिव्रता पुरानावस्त्र होयतो अशुभ मध्यवस्त्र होयतो सुभगा धोवा
वस्त्र होयतो शुभा मैलावस्त्र होयतो मलिनताजानना —

रजस्वला धर्म॥ ॥आर्तवाभिप्लुता नारी नैकवेश्मनि संश्र
येत्॥ नचान्यजानि संस्पर्शं कुर्यात्स्पर्शं नचाक्वचित्॥५९॥
त्रिरात्रं स्वमुखं नैव दर्शयेद्यस्य कस्यचित्॥ स्ववाक्यं श्राव
येन्नैव न कुर्याद्दंतधावनम्॥६०॥ नकुर्याद्दानं वै नारी यद्दाणा
मीक्षणं नथा॥ अंजनाभ्यंजनं स्नानं प्रवासं संवर्जयेत्तथा ६१

नखादिकृंतनं रज्जुनालपत्रादिबंधनम्॥
नवेशरावेभुंजीनततोपंचांजलिनापिबेत् ५२

टी० ऋतुमतीस्त्रीनेएकघरमेरहना अन्यजातीसेस्पर्शनकरना अपने जातीमेभीस्पर्शनकरना तीनरात्रअपनामुखनकिसीकोदिखावनानअपनीवाणीकिसीकोसुनावना दतुवननहीकरना· नक्षत्रोंका अवलोकनन करना काजलनदेना तेलनलगावना स्नाननकरना रस्तानहीचलना न ख नहीनिकालना डोरीकास्पर्शनकरना· तांलपत्रेकाबंधनन करनानवीनमृत्तिकापात्रमेभोजनकरना· जलअंजुलीसेपीना— २केशोंबंधनं२

रजस्वलास्नान॥ ॥हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः
शक्रान्वितैःशुभतिथौशुभवासरेच॥ स्नायाद्यथातवती
मृगपौष्णवायुहस्ताश्विधातृभिरलंलभतेचगर्भं॥५३॥

टी० ऋतुमतीकास्नानउक्तनक्षत्रमेकरावना कोष्टकमेस्पष्टहै औरमृग रेवनी·स्वाती·हस्त·अश्विनी इननक्षत्रोंमेस्नानकरावनेसेबहुतजल्दीगर्भरहताहै

हस्त	स्वाती	अश्विनी	मृग	अनुराधा	धनिष्ठा	नक्षत्र
उ·फा·	उ·षा·	उ·भा·	००	ज्येष्ठा	००	
१ ८	२ १०	३ ११	५ १२	६ १३	७ १५	तिथयः
चं·	बु·	गु·	शु·	००	००	वार

चतुर्थेहनिसास्पृश्यारजोदर्शनतस्त्रियः॥
पंचमेहनिशुद्धासादैवेकर्मणिपैतृके॥५४॥

टी० स्त्रीऋतुप्राप्तकेबाद ४दिनतकअस्पर्शहै पुरुषनेस्पर्शकरनानहीं·

अन्यच्च॥ ॥प्रथमेहनिचांडालीद्वितीयेब्रह्मघाति
नी॥तृतीयेरजकीप्रोक्ताचतुर्थेहनिशुद्ध्यति॥५५॥

टी० स्त्रीऋतुप्राप्तीसे प्रथमदिन चांडाली रहती है २ दूसरेदिनब्रह्मघातिनी३ तीसरे दिन धोबीजानना· ४ चौथेदिन शुद्धजानना· —

अन्यमत॥ ॥भर्त्तुःस्पृश्याचतुर्थेन्हि स्नानेनस्त्रीरज
स्वला॥पंचमेन्हियोग्यासादैवेपित्र्येचकर्मणि॥५६॥

टी० स्त्रीचतुर्थदिनमेपतिसंगकरनेमेयोग्यहैपरंतुदैव औरपितृ इनकेकामकी नही

अन्यमत॥ ॥वर्षद्वादशकादूर्ध्वं यदिपुष्पंबहिर्नहि॥

अन्तःपुष्पं भवत्येव पनसोदुंबरादिवत् ॥५७॥

टी० बारवर्षकेअनंतर स्त्रीको ऋतुप्राप्तीनहो तथापि पुरुषने संग करना वं शकेवास्तेगुल्हर औरकटहरकेसे जानना· इतिऋतुप्रकरणम् ॥७॥

अथगर्भाधानप्रकरणम्

ऋतौतु प्रथमे कार्यं पुन्नक्षत्रे शुभे दिने ॥ ॥

मघामूलांत्यपक्षांतंत्यक्त्वाचंद्रबलेसति ॥१॥

टी० प्रथमऋतुमेस्त्रीकागर्भाधानपुरुषनक्षत्रमेकरना·शुभदिनमे मघा मूल रेवती पक्षकाअंत इनकात्यागकरना· चंद्रबलमेकरना – गर्भाधानेत्यान्यमाह ॥ ॥गंडांतं त्रिविधंत्यजेन्निधनज न्मर्क्षे च मूलांतकं दास्रं पौष्णमथोपरागदिवसं पातं तथा वैधृतिं ॥ पित्रोः श्राद्धदिनं दिवाच परिघाद्यर्द्धं स्वपत्नीगमे भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभं ॥२॥ भद्रा षष्ठी पर्वरिक्ताश्च संध्या भौमार्कार्कीनाद्यरात्रश्चतस्रः ॥

टी० गर्भाधानमेजो वर्ज्यहैं सोआगेचक्रमे स्पष्टलिखाहैं· गर्भाधानेत्याज्य चक्रं॥

गंडांत·	वधतारा	जन्मतारा	मूल	भरणी	अश्विनी
रेवती	ग्रहणदिन	व्यतीपात	वैधृति	श्राद्धदिन	दिवस
परिघार्द्ध	उत्पातनक्षत्र	पापयुक्तल·	भद्रा	जन्मलग्नात्अष्टम	षष्ठी
चतुर्दशी	अष्टमी	अमावास्या	पौर्णिमा·	संक्रांति	रिक्ता
संध्या	भौम	रवि	शनि·	प्रथमदिन	द्वितीयदिन
तृतीयदिन	चतुर्थदिन	० ०	० ०	० ०	० ०

अन्यदपि॥ ॥ऋतुस्नातांतु यो भार्यां सन्निधौ नोपग च्छति॥ घोरायां भ्रूणहत्यायां युज्यते नात्र संशयः॥३

टी० ऋतुस्नानकेअनंतरस्त्रीकेपास शयनन करनेसे भ्रूणहत्याका भागी होता है

अन्यमत॥ ॥व्याधितो बंधनस्थो वा प्रवासे ष्वपि प र्वसु॥ ऋतुकालेपि नारीणां भ्रूणहत्या प्रमुच्यते॥४

टी० रोगीहोय अथवा कैदमेहोय या प्रवासमेहोय यापर्वहो पती भी स्त्रीसंग नकरनेसे भ्रूणहत्या कहाहै॥ ऋतुप्राप्तीसेसोलरात्रीमे शुभाशुभ· ॥५॥

ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडश स्मृताः॥ तासामाद्या

\+ श्चतस्रस्तु निंदितैकादशी च या॥५॥ त्रयोदशी च शेषास्युः प्रश

स्तादश वासराः॥तस्मात्रिरात्रं चांडालीं पुष्पितां परिवर्जयेत् ६

टी० ऋतुप्राप्त भयातबसेस्त्रीकोसोलदिनऋतूरहताहै तिसमेप्रथम ४ रात्री औरएकादश ११ औरत्रयोदश येनिंदितहै इसवास्ते इसदिनकात्यागकरना औरदस १० रात्रीशुभजाननाः — गर्भाधानकोशुभाशुभदिन॥ ॥

रात्रौ चतुर्थ्यां पुत्रः स्यादल्पायुर्धनवर्जितः॥ पंचम्यां पुत्रिणी नारी षष्ठ्यां पुत्रस्तु मध्यमः॥७॥ सप्तम्यामप्रजा योषिदष्टम्यामीश्वरः पुमान्॥ नवम्यां सुभगा नारी दशम्यां प्रवरः सुतः॥८॥ एकादश्यामधर्म्या स्त्री ह्यादश्यां पुरुषोत्तमः॥ त्रयोदश्यां सुता पापा वर्णसंकरकारिणी॥९॥ धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च आत्मवेदी दृढव्रतः॥१०॥ प्रजायते चतुर्दश्यां पंचदश्यां पतिव्रता॥ आश्रयः सर्वभूतानां षोडश्यां जायते पुमान्॥११

टी० ऋतुप्राप्तीसे सोलह दिनमे गर्भाधानकोशुभाशुभदिन चक्रलिखतेहैं

१	वर्ज्य	५	कन्या	९	सौभाग्यवृद्धि	१३	पापकर्मीकन्या
२	वर्ज्य	६	पुत्रमध्यम	१०	गुणवान्पुत्र	१४	धर्मज्ञपुत्र
३	वर्ज्य	७	पुत्रहीना	११	अधर्मीपुत्र	१५	पतिव्रता
४	पुत्रअल्पापु-र्निर्धन	८	पुत्रईश्वरभक्ति	१२	उत्तमपुत्र·	१६	उत्तमपुत्र·

गर्भाधाने तिथिवारमाह॥ ॥षष्ठ्यष्टमीपंचदशीचतुर्थीचतुर्दशीमप्युभयत्र हित्वा॥ शेषाः शुभाः स्युस्तिथयो निषेके वाराः शशांकार्यसितेंदुजाश्च॥१२॥ ५

टी० ६ठी अष्टमी पौर्णिमा चतुर्थी चतुर्दशी अमावास्या येतिथीवर्ज्यकरको शेषतिथीशुभजानना· सोम· बृहस्पति· शुक्र· बुध येगर्भाधानमेशुभजानना·

गर्भाधाने नक्षत्राण्याह॥ हरिहस्तानुराधाश्च स्वातीवारुणवासवं॥ उत्तरात्रितयं सौम्यं रोहिण्यश्च शुभाः स्मृताः॥१३॥

टी० श्रवण हस्त अनुराधा स्वाती शततारका ज्येष्ठा उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा मृग रोहिणी येनक्षत्रमे गर्भाधान शुभकहाहै —

गर्भाधाने लग्नशुद्धी॥ ॥ केंद्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैः त्र्याये गैः पुंग्रहदृष्टलग्ने॥ ओजांशके ऽप्यपि च युग्मरात्रौ चित्रादिती ज्याश्विषु मध्यमं स्यात्॥१४॥

टी० प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम येकेंद्र इसमे शुभग्रह होय त्रिकोण नवम
पंचम इसमे शुभग्रह होय तृतीय एकादश षष्ठ इसमे पापग्रह होय लग्न
कोपुरुषग्रह देखते होय विषम नवमांशमे चंद्रमा होय इसमेगर्भाधान
शुभजानना औरसमरात्री चित्रा पुनर्वसु पुष्य अश्विनी यह मध्यमजानना

गर्भिण्यां पुंसवनसंस्कारमाह॥ ॥मूलादित्रितयेकर
श्रवणकेभाद्रद्वयार्द्राद्वयेरेवत्यांमृगपंचके दिनकरे भौमे
नरिक्तातिथौ॥नेत्रेमास्यथवाग्निमासिधनुषिस्त्रीमीन
योश्चस्थिरेलग्नेपुंसवनंनथैवशुभदंसीमंतकर्माष्टमे १५

टी० मूल पूर्वाषाढा उत्तराषाढा हस्त श्रवण पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रप
दा आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका रोहिणी मृग औ
र रवि मंगल इसमे पुंसवनकरना शुभ रिक्तात्यागकरना और दूसरे
महिनेमे वा तीसरे महिनेमे शुभ धनलग्नमेकन्या मीन येस्थिरलग्न
मेकरना शुभहोताहै सीमंत आठवे महिनेमे इसी मुहूर्तमेकरना —

वारफल॥ मृत्युश्च सौरेस्ततनुहानिर्विंदोः प्रजा मृतिः पुंसवने
बुधस्य॥ काकीचवंध्याभवतीह शुक्रे स्त्रीपुत्रलाभोरविभौमजीवैः
टी० शनिवारको पुंसवन करेतो मृत्युजानना सोमवारको करेतो शरीर
नाश बुधकोकरेतो पुत्रनाश शुक्रकोकरेतो काकवंध्या और रवि मंग
ल बृहस्पतिको पुंसवनकरेतो पुत्रकन्याप्राप्ती —

सीमंतोन्नयनमाह॥ ॥पुरुषग्रहवाराःस्युःशुभाःसीमं
तकर्मणि॥ मध्यौस्त्रीग्रहवारौतुवर्जयेत्तुनपुंसकौ॥१७॥
टी० पुरुषग्रहकेवारमे सीमंतकर्मकरना शुभहोताहै स्त्रीग्रहकेवारमे
मध्यमजानना नपुंसकग्रहकेवारमे अतिनिकृष्टजानना —

अन्यमते॥ ॥चतुर्थषष्ठाष्टममासभाजिसौरेणगर्भेप्रथमेविधे
यं॥सीमंतकर्मद्विजभामिनीनांमासेष्टमेविष्णुबलिंचकुर्यात्॥
टी० प्रथमगर्भधारणसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम मासमे सौरमासगिनकेसी
मंतकर्मकरना ब्राह्मणकेस्त्रीको अष्टममासमे विष्णुबली करना शुभहोताहै

अन्यमते॥ ॥रोहिण्यैंद्रवमादित्यंपुष्यहस्तोत्तरात्र
यं॥पौष्णांवैष्णवभंचैवसीमंतेसौम्यवासरे॥१९॥

टी० रोहिणी मृग पुनर्वसु पुष्य हस्त तीनो उत्तरा रेवती श्रवण इनन क्षत्रों मे सीमंतकर्म शुभहोताहै और शुभग्रहके वारमे करना—

अन्यदपि॥ ॥पक्षच्छिद्रां रिक्तांच विना पंचदशीशुभाः॥ चतुर्दशीचतुर्थीचकदाचित्तु शुभप्रदाः॥२०॥ शुभसंस्थेनिशानाथेचतुर्थीचचतुर्दशीं॥ पौर्णिमासीं प्रशंसंतिकेचित्सीमंतकर्मणि

टी० सीमंतकर्मके मे पक्षमे जोछिद्रातिथी उस्का त्यागकरना रिक्तातिथी त्यागकरना कोई आचार्य कहतेहैं कि शुभराशीके चंद्रमा मे और चतुर्थीचतुर्दशी और पौर्णिमा ये सीमंतकर्मके प्रशंसाकरतेहैं—

पक्षच्छिद्रातिथी॥ ॥चतुर्दशी चतुर्थीच अष्टमीनवमीतथा॥ षष्ठीचद्वादशीचैवपक्षच्छिद्राव्हयाःस्मृताः॥२२॥ क्रमादेतासुतिथीषुवर्जनीयाश्चनाडिकाः॥भूताष्टमनुतत्वांकदशशेषास्तुशोभनाः॥

टी० चतुर्दशी चतुर्थी अष्टमी नवमी षष्ठी द्वादशी इसको पक्षछिद्रातिथीकहतेहैं क्रमसे इनकी घटी त्यागकरना चतुर्दशी १४ चतुर्थी ८ अष्टमी १४ नवमी २५ षष्ठी ९ द्वादशीकी १० घडी पहिलीत्यागकरना शुभ—

मासेश्वरज्ञानमाह॥ ॥मासेश्वराः सितकुजेज्यरवींदुसौरचंद्रात्मजास्तनुपचंद्रदिवाकराःस्युः॥२४॥

टी० गर्भधारणसेदसमासके १० स्वामीक्रमसे नीचेलिखेहुवेकोष्ठकपरसेस्पष्टमालूमहोगा— मासेश्वरज्ञानार्थमासेशचक्रम्॥ ॥

१ स्वामी शुक्र	२ स्वामी मंगल	३ स्वामी गुरु	४ स्वामी रवि	५ स्वामी चंद्र
६	७	८	९	१०
स्वामी शनी	स्वामी बुध	स्वामी गर्भाधानलग्नेश	स्वामी चंद्र	स्वामी सूर्य

अन्यमते॥ ॥मासेष्टमेहिगर्भस्यकुर्याद्विष्णोर्बलिक्रियां॥ श्रवणेचैवरोहिण्यां पुष्येचैवप्रशस्यते॥२५ हिनीयासप्तमीचैवद्वादशीचशुभातिथिः॥ शुभग्रहोदयाःशस्तास्तेषांचदिवसा अपि॥२६॥ ॥

टी० स्त्रीको अष्टममासमेगर्भसंस्कार विष्णुबलीकरना श्रवण रोहिणी

पुष्य द्वितीया सप्तमी द्वादशी येशुभहै औरशुभग्रहके लग्नयेशुभग्र
हकेवारमे करनाशुभहोताहै— गर्भिण्यांनिषेधमाह॥ ॥

भूम्यांचवोच्चनीचायामारोहणवरोहणे॥नदीप्रतरणं
चैवशाकटारोहणं तथा॥२७॥उग्रौषधंतथाक्षारंमैथु
नंभारवाहनं॥कृतेपुंसवनेचैवगर्भिणीपरिवर्जयेत् २८

टी॰पुंसवनकेनंतरस्त्रीनेऊंचीजमीनपरचढनानही नीचीजमीनपरउ
तरनानही॰ पेडपरचढनानही औनदीमेजानानही॰ गाडीपरचढनानही
कोईतेजऔषधीखानानही कोईखारापदार्थखानानही॰पुरुषसेसंगक
रनानही कोईभारीवोझाउठावनानही येसबगर्भवतीस्त्रीकोमनाहै

गर्भिणीकोपुत्रवाकन्याहोनेकाप्रश्न

तिथिवारभयुग्योगस्त्रि३घ्नोद्वि७हृतशेषके
॥सूर्यारेज्येसुतश्चंद्रज्ञाऽर्केकन्याज्ञानोसुत्रवः॥२९

टी॰ गर्भिणीकोपुत्रवाकन्याहोनेकाप्रश्नकरेतो तिथीवार नक्षत्र इनकायोग
करना ३गुणदेना७सेभागलेना॥१।३।५शेषरहेतोपुत्र २।४।६ शेषरहेतोकन्या०
शेषरहेतोगर्भरहेगानही ऐसाजानना— इतिगर्भाधानप्रकरणम्॥ ॥

प्रसूतिस्थानेगमनमाह॥

रोहिण्येंदवपौष्णेषु स्वातीवारुणयोरपि॥पुनर्वसौपुष्यहस्त
धनिष्ठास्युत्तरासुच॥३०॥मैत्रत्वाष्ट्रेतथाश्विन्यांसूतिकाग
हवेशनं॥प्रसूतिसंभवेकालेसद्यएवप्रवेशयेत्॥३१॥ ॥

टी॰ रोहिणी मृग रेवती स्वाती शततारका पुनर्वसु पुष्य हस्त धनिष्ठा तीनोउ
त्तरा अनुराधा चित्रा अश्विनी इननक्षत्रोंमे प्रसूति स्थानमेप्रवेशकरना उक्त
है परंतु प्रसूतकालप्राप्तमे उसीवख्तप्रवेशकरना॰ नक्षत्रकाविचारकरनानही

गर्भकेलक्षण॥ ॥कलल१चघनं२शाखा३स्थि४त्व५ग्रोमो६द्भ
६स्मृतिः॥भुक्तिरुद्वेग९संसूतिर्मासेष्वाधानतःक्रमात्॥३२॥

टी॰ गर्भाधानसे१०मासतकगर्भकारूपकहतेहैं॰ प्रथम१ मासमेकलल क
हियेशुक्ररुधिरइनकेसंयोगसेपिंडहोताहै २मासमेघनकहिये वहपिंड
मजबूतहोताहै ३मासमेवहपिंडये शाखा कहिये हस्त और पादउत्पन्नहो
तेहैं ४मासमेउसमेअस्थी मानेहाडहोतेहैं ५मासमे उसपरत्वचा कहियेचम

डाहोताहै ६ मासमे रोम कहिये केश होतेहैं ७ मासमेस्मृती याने ज्ञान होताहै ८ मासमे भुक्ति कहिये क्षुधाका ज्ञान होता है ९ मासमे उद्वेग याने गर्भ सेनिकलनेकी इच्छाकरताहै १० मासमे प्रसवजानना —

दंतफलं॥ दंतैर्युतश्चेत्प्रथमे ऽर्भकः स्यात्स्वयं विनश्येदनुजं द्वितीये ॥ हन्यात्तृतीये भगिनीं चतुर्थे स्वमातरं बाणमिते ऽग्रजातं॥४॥ ॥

टी॰ बालक दंतसहित उत्पन्न होय तो बालकका नाश जानना २ मासमे छोटे भाईको अशुभ ३ मासमे बहिनको अशुभ ४ मासमे माता को दुःख होय ५ मासमे बडे भाईको क्लेश जानना आगे षष्ठमासमे शुभ जानना — उपसूतिकामाह॥

अज १ झष १२ द्वि २ मिता वृषकुंभयोः श्रुतिमिता हयकर्कटकेशराः ५॥ मकरयुग्मतुलाधरकन्यकास्त्वलिहरौ त्रिमिताह्युपसूतिकाः

टी॰ मेष मीन इस लग्नमे प्रसूती होयतो पास २ स्त्री कहना वृषकुंभ होयतो ४ स्त्री कहना धन कर्क होयतो ५ स्त्री कहना मकर मिथुन तुला कन्या वृश्चिक सिंह होयतो ३ स्त्री कहना इस प्रकारसे लग्न राशी साकरना —

अन्यमते॥ मेषत्रिपंचाननचापलग्ने विस्मृत्य सर्वं बहुरोदतिस्म ॥ अल्पं घटे स्त्री वणिजे परेषु रुदंति नो ज्ञानबलस्य सत्वात्॥६॥

टी॰ मेष वृष मिथुन सिंह धन इस लग्नौमे प्रसूति होयतो बालक रोदन बहुतकरता है कुंभ कन्या तुला इसमे थोडा रोदन करता है कर्क वृश्चिक मकर मीन इसमे ज्ञान बलसे रोदन नही करता ऐसा लग्नसे जानना —

अन्यदपि॥ ॥ यथा राहुस्तथा शय्या भौमे खट्वांगभंगता॥ रविस्थाने भवेद्दीपः शनिस्थाने तु नालकं॥७॥ ॥

टी॰ जन्मकुंडली लिखना उसमे जिस दिशामे राहू होय उस दिशामे शय्या कहना जिसस्थानमे मंगल होय उसतरफ खटियाका भंग कहना सूर्य जिसदिशामे होय उसदिशामे दीपक कहना जिसस्थानमे शनी होय उसदिशामे बालकका नाल कहना

जन्मकालफल॥ अश्विनीमघमूलानां पूर्वार्द्धे बाध्यते पिता॥ पूषादिशक्रपश्चार्द्धे जननी बाध्यते शिशोः॥८॥

टी॰ अश्विनी मघा मूल इन नक्षत्रोंके पूर्वार्द्धमे जन्म होयतो पिताको अशुभ जानना रेवती ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंके उत्तरार्द्धमे होयतो माताको अशुभ जानना

गंडांतफल॥ ॥ सर्वेषां गंडजातानां परित्यागो विधीयते ॥ वर्जयेद्दर्शनं शावंतच्च षाण्मासिकं भवेत्॥९॥ ॥

टी॰ गंडांतमे जो जन्म होयतो बालकका परित्याग करना अथवा ६ महिना मुख देखनानही

तिथिगंडांतमाह॥ ॥पूर्णानंदाख्ययोस्तिथ्योः संधिर्नाडीद्वयं तथा॥ गंडांतं मृत्युदं जन्मयात्रोद्वाहव्रतादिषु॥१०॥ ७॥

टी० पौर्णिमाकी अंत्यघडी और प्रतिपदाकी आद्यघडी ऐसी २ घडी संधी इसी रीतसे पंचमी षष्ठी दशमी एकादशी ऐसी २ घडी संधी जानना इसमे जन्म यात्रा विवाह मौंजी इत्यादिक मृत्युसुख होने हैं अशुभ जानना·

लग्नगंडांत॥ ॥कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीनमेषयोः॥ गंडांतमंतरालस्याद्घटिकार्धं मृतिप्रदम्॥११

टी० कर्ककी अंत्यकी आधीघडी और सिंहकी आद्की आधी घडी संधी इसीक्रमसे वृश्चिक और धन मीन और मेष ऐसी एक घडी मृत्युप्रद जानना· शुभकर्ममे वर्ज्य करना· — ॥नक्षत्रगंडांत॥ ॥

पौष्णयाश्विन्योः सार्पपित्र्यर्क्षयोश्च यच्च ज्येष्ठामूलयोरंतरालं॥ तद्गंडांतं स्याच्चतुर्नाडिकं हि यात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टं॥

टी० रेवतीकी अंतकी २ घडी और अश्विनीकी आदिकी २ घडी संधी होती है इसक्रमसे आश्लेषा मघा ज्येष्ठा मूल येनक्षत्र गंडांत होताहै इसमे यात्रा जन्म विवाह ये कर्म अशुभ जानना· —

कृष्णचतुर्दशीफल॥ ॥कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां प्रसूतेः षड्विधं फलं॥ चतुर्दशीं च षड्भागां कुर्यादादौ शुभं स्मृतम्॥१३॥ द्वितीये पितरं हंति तृतीये मातरं तथा॥ चतुर्थे मातुलं हंति पंचमे वंशनाशनं॥ षष्ठे च धनहानिः स्यादात्मनो वंशनाशनम्॥१४॥ ७॥ ७॥ ७॥

टी० कृष्णपक्षके चतुर्दशीको जन्म होयतो चतुर्दशीका ६ भाग करको शुभाशुभ देखना· प्रथमभागमे शुभ· द्वितीयभागमे पिताको दुःख जानना· तृतीयभागमे माताको दुःख जानना· चतुर्थभागमे मामाको अशुभ जानना· पंचमभागमे वंशनाश जानना· षष्ठभागमे धननाश जानना· और वंशका भी नाश जानना· — ॥अमावास्याफल॥ ॥

सीनीवाल्यां प्रसूता स्यात्तासी भार्या पशुस्तथा॥ गजाश्वमहिषी चैव शक्रस्यापि श्रियं हरेत्॥१५॥ कुहू प्रसूतिरित्येवं सर्वदोषकरी स्मृता॥ यस्य प्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्धन

नाशनं॥१६॥सर्वगंडसमस्तत्र दोषस्तु प्रबलो भवेत्॥१७

टी० चतुर्दशी शुक्ल अमावास्यामे दासी अथवा भार्या गौ हाथी घोड़ी भैंस येजो प्रसूत होय तो मालिकको निर्धन करते हैं अमावास्यामे जन्म होय तो बहुत दोषजाननाः धनआयुष्य इस्का नाश और गंडांत फलके ऐसा फल जानना।

दिनक्षयफल॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ॥ शूले गंडे तिगंडे च परिघे यमघंटके॥१८॥ कालदंडे मृत्युयोगे दग्धयोगे सुदारुणे॥ तस्मिन् गंड दिने प्राप्ते प्रसूतिर्यदि जायते॥१९॥ अतिदोषकरी प्रोक्ता तत्र पापयुतासति॥२०॥

टी० क्षयदिन व्यतीपात व्याघात भद्रा वैधृति शूल गंड अतिगंड परिघयोगका अर्द्ध यमघंट कालदंड मृत्युयोग दग्धयोग और भी दारुणयोग ऐसे योगमे जन्म होय तो बहुत अशुभ जानना—

ज्येष्ठानक्षत्रफल॥ ॥ज्येष्ठादौ जननीमाता द्वितीये जननीपिता॥ तृतीये जननी भ्राता स्वयं माता चतुर्थके॥१॥ आत्मानं पंचमे हंति षष्ठे गोत्रक्षयो भवेत्॥ सप्तमे चोभयकुलं ज्येष्ठभ्रातरमष्टमे॥२॥ नवमे श्वशुरं हंति सर्वं हंति दशांशकः॥

टी० ज्येष्ठानक्षत्रमे प्रसूति होय तो ६ घडीका एक भाग ऐसे १० भाग करना उस्का फल प्रथम भागमे होय तो माताके मातको अशुभ २ मे होय तो माताके पिताको अशुभ ३ मे होय तो मामाको अशुभ ४ मे होय तो माताको अशुभ ५ मे होय तो बालकको अशुभ ६ मे होय तो गोत्रको अशुभ ७ मे होय तो दूनो कुलको अशुभ ८ मे होय तो ज्येष्ठ भ्राताको अशुभ ९ मे होय तो श्वशुरको अशुभ १० मे होय तो सर्वनाश जानना—

मूलफल॥ ॥मूलं स्तंभं त्वक्च शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा॥ वेदाश्वमुनयश्चैव दिशश्चवसवस्तथा॥२१॥ नंदाबाणरसारुद्रा मूलभेदाः प्रकीर्तिताः॥ मूले मूलविनाशाय स्तंभे हानिर्धनक्षयः॥२२॥ त्वचि भ्रातृविनाशाय शाखा मातुर्विनाशकृत्॥ पत्रे सपरिवारः स्यात् पुष्पे पुत्रः प्रवल्लभः॥२३॥ फले पुत्रमने राज्यं शिखा पामल्पजीवितम्॥२४॥ ७ ॥ ७ ॥

टी० मूलनक्षत्रको मूल वृक्ष ऐसा नाम रखको उस्का शुभाशुभ फल देखना—

मूलकाप्रमाण ६० घडीतिस्में प्रथम ४ घडी वृक्षका मूल उस्मे जन्म होयतो नाशजानना नंतर ७ घडी मूलकास्तंभ इस्मे हानि धनक्षय नंतर १० घडी मूलकीत्वचा तिस्मे जन्म भ्रातृनाश नंतर ८ घडी उस्कीशाखा तिस्मे माताकानाशजानना नंतर ९ घडी वृक्षकापत्र तिस्मे सपरिवारको अशुभजानना नंतर ५ घडी पुष्प तिस्मे जन्म होयतो राजाको प्रिय होय नंतर ६ घडी फल इस्मे जन्म होयतो राज्यलाभ नंतर ११ घडी शाखामे जन्म होयतो अल्पजीवी जानना —

मूलवास॥ वृषादिसिंहे चघटे चमूलं दिवस्थितं युग्मतुलां
गनांत्ये॥ पाताल गं मेष धनुः कुलीरनक्रेषु मर्त्ये ष्ववनिसंस्थितंति २५

टी० वृष वृश्चिक सिंह कुंभ इसराशीमे मूल स्वर्गमेरहताहै इस्मे जन्म होयतो राज्यप्राप्तिजानना मिथुन कन्या तुला मीन इसराशीमे मूलवास पातालमे फल धनप्राप्तिजानना मेष धन कर्क मकर इसराशीमे मूल मृत्युलोकमेरहताहै फल सबकुटुंबको अशुभजानना —

आश्लेषानक्षत्रकानराकारचक्र॥

मूर्द्धास्यनेत्रगलकांसयुगं चबाहुहृज्जानुगुह्यपद मित्यहि
देहभागः॥ बाणाद्रिनेत्रहुतभुक्श्रुतिनागरुद्रषण्नंद पंचशि
रसः क्रमशस्तु नाड्यः॥ २६॥ राज्यं पितृक्षयो मातृनाशः काम
क्रियारतिः॥ पितृभक्तो बली स्वघ्नस्त्यागी भोगी धनी क्रमात्॥ २७

टी० आश्लेषामेजन्म होयतो पुरुषकल्पना करके ६० घडीमे अंगोके फलदेखना प्रथम ५ घडी मस्तकजानना फल राज्यप्राप्ति नंतर ७ घडी मुख फल पिताको अशुभजानना नंतर २ घडी नेत्र फल माताको अशुभ नंतर ३ घडी कंठ फल कामी नंतर ४ घडी स्कंध फल पिताकी भक्ती नंतर ८ घडी बाहु फल बलवान् नंतर ११ घडी हृदय फल आत्मघाती नंतर ६ घडी जंघा फल त्यागी नंतर ९ घडी गुह्य फल भोगी नंतर ५ घडी पाद फल धनवान् —

द्वादशराशिनाम॥ ॥मेषो वृषोथ मिथुनं कर्कटः सिंहक
न्यके॥ तुलाथ वृश्चिको धन्वी मकरः कुंभमीनकौ॥ २८॥

टी० मेषराशीसे मीनराशीतक क्रमसे जानना —

राशिस्वामी॥ ॥कुजः सितो बुधो विधुर्भगलः शुक्रभूमिजाः॥

स्फुरेज्यमंदस्सूर्येज्ञागुरुः क्रियाच भेश्वराः॥२९॥

टी० इसचक्रसेद्वादशराशीकेस्वामीजानना.

१ मेष	२ वृषभ.	३ मिथुन	४ कर्क	५ सिंह	६ कन्या
मंगल	शुक्र	बुध	चंद्र	सूर्य	बुध.
७ तुला	८ वृश्चिक	९ धन	१० मकर	११ कुंभ	१२ मीन
शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु

ग्रहोंकेउच्चनीच॥ रविर्मेषेतुलेनीचोवृषेचंद्रस्तुवृश्चिके॥
भौमश्वनक्रेकर्केचस्त्रियांसौम्योझषेतथा॥३०॥गुरुःक
र्केचनक्रेचमीनकन्येसितस्यच॥ मंदस्तुलायांमेषेचकन्या
राहुगृहस्यच॥३१॥ राहुर्युग्मेतुचापेचतमोवत्केतुजंफलं
॥ प्रोक्तंग्रहाणामुच्चत्वंनीचत्वंचक्रमाद्बुधैः॥३२॥ ७॥

टी० सूर्यमेषकाउच्च तुलाकानीच चंद्रमावृषकाउच्च वृश्चिककानीच मं
गल मकरकाउच्च कर्ककानीच बुधकन्याकाउच्च मीनकानीच बृहस्पती
कर्ककाउच्च मकरकानीच शुक्रमीनकाउच्च कन्याकानीच शनितुलाका
उच्च मेषकानीच राहुमिथुनकाउच्च धनकानीच केतूकाउच्च नीचराहू
केऐसाजानना— ग्रहोंकीक्रूरशुभसंज्ञा॥ ॥ ॥

क्रूराःखेटाराहुमंदार्कभौमाःपापःसौम्यस्तैर्युतःक्षीणइंदुः॥
पूर्णश्चंद्रःसौम्यशुक्रामरेज्याःसौम्याःसर्वेचंद्रयुक्ताबलाढ्याः ३३

टी० क्रूरग्रह राहु शनि सूर्य मंगल बुधभी इनकेसाथसे पापग्रहहोता है.
कृष्णपक्षकाचंद्रमा यह पापग्रहजानना शुभग्रहपूर्णचंद्रमा बुधशुक्र बृह
स्पती यहशुभग्रहजानना — ग्रहोंकीजातिसंज्ञा॥ ॥ ॥

विप्राधीशौजीवशुक्रौकुजार्कौराजन्यानामोषधीशोविशांच॥
शूद्राणांज्ञश्चांत्यजानांचमंदःसिंहीसूनुर्म्लेच्छवंशोद्भवानां॥३४

टी० बृहस्पतीशुक्रयह ब्राह्मण सूर्यमंगलयहक्षत्रिय चंद्रमा वैश्य बुध
शूद्र शनी चांडाल राहुम्लेच्छ यह प्रकारसे ग्रहोंकीजातिजानना—

ग्रहोंकीस्त्रीपुरुषसंज्ञा॥ प्रोक्तानराःसूर्यकुजामरे
ज्याःक्लीबौशनिज्ञौयुवतीसितेंदू॥ सत्वंरवीज्यःक्ष
णदाधिपास्युःरजःसितारौज्ञयमौतमश्च॥३५॥

टी॰ सूर्य मंगल बृहस्पती ग्रह पुरुषग्रह शनी बुधग्रह नपुंसक ग्रह शुक्र
चंद्रमा ग्रह स्त्रीग्रह ग्रहोंकेगुणसूर्य गुरुचंद्र ग्रह सत्वगुण शुक्रमंगलग्र
हरजोगुण बुधशनी ग्रह तमोगुण जानना—

ग्रहोंकारूप॥ ॥नृपौरवींदू किलसैन्यनेना भौमःकु
मारः शशिजोनिरुक्तः॥ सच्चौत्रिणोदेवगुरूशनाः
रव्यौसूर्यात्मजःसेवकसंज्ञकःस्यात्॥३६॥ ७॥ ॥

टी॰ रवि चंद्र ग्रह राजाजानना मंगल सेनापती जानना बुधकुमारजान
ना बृहस्पतीशुक्रग्रह मंत्रीजानना शनी सेवकजानना—

ग्रहोंकावर्ण॥ ॥रक्तःसितोरक्ततरःसुनीलःपीतो
निशुक्लस्त्वसितोऽत्रवर्णः॥सूर्यादधीशादहनोंबुभू
मीहामोदरःशक्रशचीविरंचिः॥३७॥ ७॥ ७॥ ॥

टी॰ सूर्यकालालवर्ण चंद्रमाकाश्वेतवर्ण मंगलकाबहुतलालवर्ण
बुधकानीलवर्ण बृहस्पतीकापीतवर्ण शुक्रकासफेदवर्ण शनीकाका
ल्यावर्ण इसप्रकारसे ग्रहोंके वर्णकाज्ञानकरना सूर्यकादेवता अग्निचं
द्रमाका जल मंगलका भूमी बुधका दामोदर बृहस्पतीका इंद्रशु॰
क्रका इंद्राणी शनीकादेवता ब्रह्माजानना—

ग्रहोंकी दृष्टी॥ ॥पादैकदृष्टिर्दशमेतृतीये द्विपाददृष्टिर्न
वपंचमेवा॥त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टकेवासंपूर्णदृष्टिःस
प्तसप्तकेच॥३८॥शनेस्तृतीयेदशमेपूर्णादृष्टिर्जीवस्यको
णके॥बुधैर्ज्ञेयापूर्णदृष्टिर्भौमस्यचतुरष्टके॥३९॥ ७॥

टी॰ ग्रहोंकीदृष्टीजाननेकाप्रकारकोईग्रह जिसस्थानमेहोयउसस्थानसे
३।१० स्थानमेएकपाददृष्टिदेखताहै उसीरीतसे ५।९ स्थानमेदोपाद
दृष्टिऔर ४।८ स्थाने ३ पाददृष्टि और ७ स्थानमे पूर्णदृष्टिजानना परंतु
शनीजिसस्थानमेहोयउसस्थानसे ३।१० स्थानमे पूर्णदृष्टिदेखताहै
बृहस्पती ९।५ स्थानमे पूर्णदृष्टि और मंगल ४।८ स्थानमे पूर्णदृष्टिदे
खताहै इसप्रकारसे दृष्टीजानना—

दिशास्वामी॥ ॥प्राच्यादिनःसूर्यसितारराहुयमं
देंदुसौम्यांगिरसोदिगीशाः॥ वेदाधिनाथःक्रमशः

स्फरेज्य पूर्वीमरेज्यावनिजेंदु पुत्राः॥५०॥७॥

टी॰ आठदिशाके स्वामी पूर्वसे सूर्य शुक्र मंगल राहु शनी चंद्र बुध ब्रहस्पती ८ यह जानना और चारो वेदके स्वामी ऋग्वेदके ब्रहस्पती यजुर्वेदके शुक्र सामवेदके मंगल अथर्वण वेदके बुध यह क्रमसे जानना—

द्वादशभावसंज्ञा॥ ॥मूर्तिर्धनाख्यः सहजः सुख सुतारिपत्नीमृतिधर्मकर्माः॥ आयव्ययावैतनुतो विचिंत्याभावाअमीद्वादशहोरिकाद्यैः॥५१॥ ७॥

टी॰ लग्नसे द्वादशस्थानकी संज्ञा मूर्ति १ धन २ सहज ३ सुख ४ सुत ५ अरि ६ पत्नी ७ मृति ८ धर्म ९ कर्म १० आय ११ व्यय १२ यह बारस्थान जानना—

केंद्रादिद्वादशस्थानकीसंज्ञा॥ ॥अथचकेंद्रचतुष्टप कंटकं तनुसुखांबरसप्तमभंस्मृतं॥ पणफरंधनला भसुताष्टमंसहजशत्रुनवांत्यमपोक्लिमं॥५२॥ दुश्चिक्यलाभांबरषष्ठगेहं प्रोक्तंनयैवोपचयंत्रिकंतु॥ षडंस रंध्रंचनिजंनवांशंवर्गोत्तमाख्यं विबुधावदंति॥५३॥ नवमंपंचमंस्थानंत्रिकोणंपरिकीर्तितम्॥५४॥७॥ ॥

टी॰ स्थानसंज्ञाजाननेकाउपाय १।४।७।१० येचारोस्थानकेनाम केंद्र चतुष्टय कंटक जानना २।५।८।११ इसस्थानकानाम पणफर जानना· ३।६।९।१२ यह स्थानकाआपोक्लिमनामजानना उपचयसंज्ञाकास्थान ३।११।१०।६ इसस्थानकीउपचयसंज्ञाजानना ६।१२।८ यह स्थानकीत्रिकसंज्ञा जानना जोग्रह अपनेनवमांशमेहोयउस्कोवर्गोत्तमजानना· ५।९ इस ८ स्थानकीत्रिकोणसंज्ञाजानना—

सामान्यद्वादशराशिफल॥ ॥मेषेदैन्यमुपैतिगर्वितनृषानानामतिर्मन्मथेशूरःकर्कटकेधृतीचवनपेकन्याच मायान्विता॥ सत्यंचैवतुलेत्वलीमलिनतापापान्वितं चैधनुर्मूर्खोयंमकरेघटेचनुरतामीनेत्वधीरामतिः॥५५

जन्मकालमे मेष लग्न होयतो दीन कहना वृष मे गर्वी मिथुनमे नाना १ कि बुद्धि कर्कमे बड़ाशूर सिंहमे स्थिर बुद्धि कन्यामे मायावान् तु २ ॰ ॰ ॰ व्यवादी वृश्चिकमे मलिन धनमे पापबुद्धि मकरमे मूर्ख कुंभमे

चतुर मीनमे चोडाधैर्य्ये हे सा द्वादशलग्नफलज्ञानना —

जन्मभूमिज्ञानमाह ॥ ॥लग्नेंदुभ्यां द्वादशे सूर्यपुत्रे गु
प्त्यांसूतिर्वीक्षिते पापखेटैः ॥लग्ने कर्केऽथ श्चिके मंदयुक्ते
गर्त्तायांस्याच्चंद्रयुक्तेऽपसूतिः ॥४६॥ लग्ने सौम्येवेश्मगे
सौम्यखेटे शालेपाशौस्वर्क्षगे पूर्णदेहे ॥आप्येलग्नेघून
गेवामृगांके गर्भोनूनं सूयते नावसंस्थः ॥४७॥ लग्नेनी
रे मंदयुते दृष्टे चंद्रार्कचंद्रजैः ॥ऊखरे देवतागारे क्रीडागेहे
क्रमात्सवः ॥ पुंलग्नस्थे भानुसूते मशाने शैल्पिके गृहे
॥भूपालयेच गोष्ठेच देवागारे मसालये ॥४९॥ वीक्षिते भौ
मसौम्येंदुशुक्रार्कगुरुभिःक्रमात् ॥ प्रसवो यंसमास्यात्तः
सत्यलक्ष्यादिसूरिभिः ॥५०॥ यद्येकराशिगौलग्नचंद्रौदृष्टि
विवर्जितौ ॥विजने प्रसवः प्रोक्तो मणित्यादेश्वसूरिभिः ५१
टी० जन्मकालमेजन्मलग्नसे चंद्रमासे १२ स्थानमे शनी होय पापग्रहकी
दृष्टि होयतो प्रसवगुप्तस्थानमेकहना कर्कलग्नहोय उसीका चंद्रमाहोयवृ
श्चिकमेशनीहोयतो गड्ढामेप्रसूतीकहना लग्नशुभग्रहराशीहोयस्था
नमेशुभग्रहहोय चंद्रमा अपनेराशीमेपूर्णहोय जलराशीकालग्नहोयः
चंद्रमासप्तमस्थानमेहोयतोनावमेप्रसूतीकहना जलराशीकालग्नहो
यतोऊखरभूमीमेजन्मकहना।जलराशीकालग्नहोयउसीमेशनीहोयतो
देवताकेस्थानमेप्रसवकहना जलराशीकालग्नहोय चंद्र सूर्य बुध यहदेख
तेहोयतोक्रीडागेहमेप्रसूतीकहना पुरुषराशीका लग्नहोय उसीमे शनी
होय क्रमसे मंगलबुध चंद्र शुक्र सूर्य वृहस्पती यह ग्रहोंकी दृष्टि होयतो स्म
शानमेप्रसूतीकहना चित्रकारके मकानमेप्रसूतीकहना राजाकेगृहमेप्र
सूतीकहना गोशालामेप्रसूतीकहना देवतास्थानमेप्रसूतीकहना ऊखरभू
मीमेप्रसूतीकहना जन्मकालमे लग्न और चंद्रमाकी एकराशीहोय कोः
ईग्रहकी दृष्टि नहोयतो जनरहितस्थानमेप्रसूतीकहना —

प्रसवज्ञानमाह ॥ ॥शुभग्रहैःस्ववंधुगैः सुखेनसंयुतः
सवः ॥सुतांकसप्तमस्थितैरसद्ग्रहैस्तु कष्टनः ॥५२॥ ६ः
टी० प्रसूतीकालमेजन्मलग्नसे ४ स्थानमे शुभग्रहहोयतोसुखसेप्रस

तीकहना ५।९।७ स्थानमे पापग्रहहोयतोकष्टसे प्रसूतीकहना—

जन्मकालमे मृत्युकारक॥ ॥चंद्राष्टमंचधरणीसुतसप्तमं चराहुर्नवंचशनिजन्मगुरुस्तृतीये॥ अर्कस्तुपंचभृगु षष्ठबुधश्चतुर्थेजातोनजीवतिनरःप्रवदंतिसंतः॥५३॥

टी॰ जन्मकालमे चंद्रअष्टमस्थानमेहोय मंगल ७ स्थानमेराहु ९ स्थान मेशनिलग्न १ स्थानमेगुरु ३ स्थानमेसूर्य पंचमस्थानमेशुक्र ६ स्थानमे बुध ४ स्थानमे ऐसेग्रहयोगमेबालकहोयतोबचेगानहीऐसाजानना—

अन्यमत॥ ॥चतुर्थेचयदाराहुः षष्ठेचंद्रोष्टमेपिवा ॥सद्यएवभवेन्मृत्युःशंकरोयदिरक्षति॥५४॥ ७॥

टी॰ जन्मकालमे चतुर्थस्थानमेराहुहोय चंद्रमा६ अथवा ८ होयतोबा लकतत्कालमृत्युपावे ऐसाजानना· शंकरसंरक्षणकरेंतोभी—

अन्यमत॥ ॥क्षीणचंद्रोव्ययस्थानेपापलग्नेस्मरे ष्टमे॥शुभैश्चरहितेकेंद्रेशीघ्रंनश्यतिबालकः॥५५॥

टी॰ जन्मकालमेक्षीणचंद्रमा १२ अथवा पापग्रहकेस्थानमेहोय अथवा ७ या ८ होयकेंद्रशुभग्रहसे रहितहोयतोतत्कालमृत्युजानना—

अन्यमत॥ ॥दशमस्थोदिवानाथःपापैर्बहुनिरीक्षि तः॥मेषवृश्चिककर्कस्थोसद्योमृत्युप्रदोभवेत्॥५६॥

टी॰ जन्मकालमेसूर्य दशमस्थानमे मेष वृश्चिक कर्क इसराशीमेहो य पापग्रहकीदृष्टिहोयतोभी तत्काल बालक मृत्युपावे—

अन्यमत॥ ॥सप्तमेभवनेभौमश्चाष्टमे भार्गवोय दि॥नवमेभवनेसूर्यःस्वल्पायुष्यःप्रजायते॥५७॥

टी॰ लग्नसे सप्तम ७ स्थानमे मंगल ८ स्थानमेशुक्रहोय ९ स्थानमे सूर्यहोयतोथोडाआयुष्यजानना—

अन्यमत॥ ॥क्षीणचंद्रोयदालग्नेपापाश्चाष्टमकें द्रगाः॥स्मरेलग्नपतिःपापैर्युक्तोनश्येत्तदाशिशुः ५८

टी॰ क्षीणचंद्रमालग्नमेहोय केंद्रमेपापग्रहहोय लग्नपती ७ मेपापग्र हसे युक्तहोयतो भी बालक तत्कालमृत्युपावे—

अन्यमत॥ ॥लग्नेक्रूरश्चभवनेक्रूरःपातालगो

यदा॥ द्वादशे भवने क्रूरः कष्टं जीवति बालकः ५९

टी॰ क्रूरग्रहका लग्नहोय और ४ स्थानमे क्रूरग्रह होय १० स्थानमे क्रूरग्रह होय तो बालकका जीवन बहुत कष्टसे जानना—

माताको अशुभ॥ ॥षष्ठे च द्वादशे राशौ यदा पापग्रहो भवेत्॥ तदा मातुर्भयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः॥६०॥

टी॰ पापग्रह षष्ठ ६ स्थानमे १२ स्थानमे होय तो माताको क्लेश जानना ४ स्थानमे १० स्थानमे पापग्रह होय तो पिताको क्लेश जानना—

अन्यमत॥ ॥अर्कार्किमंदभूमिजश्चंद्रः प्रसूतास्तु पंचमे यदि॥ आत्मानः पितरं भ्रातृ मातरं चैव यथाक्रमात् ६१

टी॰ जन्मलग्नसे पंचम स्थानमे सूर्य शनि मंगल चंद्र होय तो क्रमसे बालक पिता भ्राता माता इनको अशुभ जानना—

अन्यमत॥ ॥सप्तमे भवने भानोः मध्यस्थो भूमिनंदनः॥ राहुर्व्यये न यस्यैवापि पिता कष्टेन जीवति॥६२॥

टी॰ सप्तमस्थानमे सूर्य होय १० स्थानमे मंगल होय १२ स्थानमे राहु होय तो पिता बहुत कष्टसे बचे ऐसा जानना—

अन्यमत॥ ॥अष्टमस्थो यदा राहुः केंद्रे च नीचचंद्रमाः॥ ससद्यश्च भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः॥६३॥

टी॰ अष्टमस्थानमे राहु केंद्रमे नीच चंद्रमा होय तो बालकका नाश जानना—

अन्यमत॥ ॥द्वादशस्थो यदा चंद्रः पापाश्चाष्टमगेहगाः॥ मासेनैकेन मृत्युः स्यात्तस्य बालस्य निश्चितं ६४

टी॰ जन्मकालमे १२ स्थानमे चंद्र ८ स्थानमे पापग्रह होय तो १ मासमे मृत्यु जानना—

अन्यमत॥ ॥षष्ठाष्टमे यदा चंद्रो बुधयुक्तश्च निश्चितः॥ विषदोषेन बालस्य तदा मृत्युश्च जायते॥६५॥ ॥

टी॰ जन्मकालसे षष्ठ अथवा ८ स्थानमे चंद्रमा बुधयुक्त होय तो बालकको विषदोषसे मृत्यु कहना—

अन्यमत॥ ॥अष्टमे च निशानाथः केंद्रे क्रूरो यदा भवेत्॥ चतुर्थे च यदा राहुर्व्यये मे कसजीवति॥६६॥ ॥

टी॰ जन्मलग्नसे अष्टमस्थानमे चंद्रमा होय केंद्र १।४।७।१० स्थानमे क्रू

ग्रहहोय ४ स्थानमेराहुहोयतो वर्षपर्यंत अरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥जन्मस्थाने यदा भौमः शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत्॥ म्रियतेतेनस्य बालस्य पिताशीघ्रं नसंशयः॥६७॥

टी॰ जन्मलग्नसे दशमस्थान मंगलका शत्रुक्षेत्र होय उसी स्थानमे मंगलहोयतो पिताको अरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥लग्नेष्टमे यदाराहुश्चंद्रोपियदिदृश्यते॥दशाहेजायतेतस्य बालस्य मरणंध्रुवम्॥६८॥॥

टी॰ अष्टमस्थानमे राहुहोय और चंद्र उसको देखताहोयतो बालकका मृत्यु १० दिनमे जानना—

अन्यमत॥ ॥वक्रीशनी भौमगृहे केंद्रेषष्ठाष्टमेपि वा॥कुजेनबलिनादृष्टो हंति वर्षद्वयेशिशुः॥६९॥॥

टी॰ वक्रका शनी मंगलकेक्षेत्रमे १।८ होय केंद्रमेहोय लग्नसे षष्ठ अथवा ८ स्थानमेहोय बलवान् मंगल देखेतो २ वर्षतक बालकको अरिष्टकहना॰

अन्यमत॥ ॥शनिराहुकुजैर्युक्तः सप्तमे नवमे शशी॥सप्तमे दिवसे हंति मासे वा सप्तमे शिशुः॥७०

टी॰ शनी राहु मंगल येतीनो ग्रहसे युक्त चंद्रमा ७ स्थानमे अथवा ९ स्थानमेहोयतो ७ दिनमे अथवा ७ मासमे बालको अरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥दशमे भवने राहुः पितृमातृप्रपीडनं द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य नसंशयः॥७१॥ छ॥

टी॰ लग्नसे १० स्थानमे राहूहोयतो मातापिताको दुःख और बारहवे १२ वर्ष मृत्युतुल्य अरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः॥द्वादशे वत्सरे मृत्युस्तस्य जातस्य जायते ७२

टी॰ जन्मकालमे शनीकेक्षेत्रमे १०।११ सूर्यहोय सूर्यकेक्षेत्रमे ५ शनी होयतो द्वादशवर्षमे मृत्युजानना—

अन्यमत॥ ॥जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः॥वर्षेचद्वादशे मृत्युर्यदिरक्षति शंकरः॥७३॥

टी॰ जन्मलग्नमेमंगलहोय और ८ स्थानमे बृहस्पती होयतो बारहवे

र्षमृत्युजानना शिवसंरक्षणकरेतोभी मृत्युजानना—

अन्यमत॥ ॥भौमक्षेत्रेयदाजीवोजीवक्षेत्रेचभू
सुतः॥द्वादशेवत्सरेमृत्युर्बालकस्यनसंशयः॥७४
टी॰ जन्मकालसे मंगलके १।८ क्षेत्रमे बृहस्पतीहोय बृहस्पतीके ९।१२ क्षेत्रमे मंगलहोयतो द्वादशवर्षमे अरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥षष्ठाष्टमस्तथामूर्तौशत्रुक्षेत्रेयदाबु
धः॥चतुर्थवर्षेमृत्युश्चबालकस्यनसंशयः॥७५॥ ॥
टी॰ जन्मकालमे षष्ठ अथवा ८ अथवा १ मेशत्रुक्षेत्रकाबुधहोयतो चतुर्थवर्षमेबालककोअरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥भौमक्षेत्रेयदाजीवःषष्ठाष्टस्तुचचंद्र
माः॥वर्षेष्टमेपिमृत्युर्वैईश्वरोरक्षितायदि॥७६॥ ॥
टी॰ जन्मकालमेमंगलकेक्षेत्र १।८ मेबृहस्पतीहोय ६।८ स्थानमेचंद्रमाहोयतोबालककोअष्टमवर्षमेअरिष्टकहना ईश्वररसंरक्षणकरेतोभी—

अन्यदपि॥ ॥लग्नेमेषेयदाराहुर्जन्मलग्नेयदाभ
वेत्॥वर्षेतुषोडशेतेयोबुधैर्मृत्युर्नरस्यच॥७७॥ ॥
टी॰ जन्मकालमे १० स्थानमेराहुहोय अथवालग्नमेहोयतो सोलहवे १६ वर्षमेअरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥सप्तमेभवनेराहुःशत्रुक्षेत्रेयदाभ
वेत्॥प्राप्तेचषोडशेवर्षेतस्यमृत्युर्नसंशयः॥७८॥
टी॰ जन्मकालमेसप्तमस्थानराहूकाशत्रुक्षेत्रहोयउसीस्थानमेराहुहोयतोसोलहवेवर्षेअरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥उच्चेवायदिवानीचेसप्तमस्थोदिवा
करः॥तदाजातोनिहंत्याशुमातरंनात्रसंशयः॥७९॥
टी॰ जन्मकालमे १ मेष अथवा ७ तुलाकासप्तम ७ स्थानमेसूर्यहोयतोमाताकोकष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥धनस्थानेयदाभौमःशनैश्चरसमन्वितः॥सहजेचभवेद्राहुःश्रीतानस्यनजीवति॥८०
टी॰ जन्मलग्नसेद्वितीय २ स्थानमेमंगलशनीचरकेसहितहोय और

तृतीयस्थानमे राहुहोय तो भाईको कष्ट कहना—

अन्यमत॥ ॥पंचमेशनिशानाथे त्रिकोणेथदिवाकस्पतिः॥ दशमेचमहीसूनुः परमायुः सजीवति॥८१॥

टी॰ लग्नसे पंचमस्थानका अधिपती चंद्रमा होय त्रिकोण ९।५ मे बृहस्पति होय और १० स्थानमे मंगल होय तो १२० वर्ष आयुष्य जानना—

अन्यमत॥ ॥मूर्त्तौ शुक्रबुधौ यस्य केंद्रे चैव बृहस्पतिः॥ दशमेंगारकश्चैव सजेयः कुलदीपकः॥८२

टी॰ जिस्के जन्मलग्नमे शुक्र बुध होय केंद्र १।४।७।१० मे बृहस्पती १० स्थानमे मंगल होय तो कुलमे मान्य होता है—

अन्यमत॥ ॥नैव शुक्रो बुधो लग्ने नास्ति केंद्रे बृहस्पतिः॥ दशमेंगारको नैव जातकः किंकरिष्यति॥८३॥

टी॰ लग्नमे बुध शुक्र नहोय केंद्र १।४।७।१० मे बृहस्पती नहोय १० स्थानमे मंगल नहोय तो पुरुष जड होता है— ॥जारजातज्ञानमाह॥ ॥

लग्नं शशांकं सुरराजमंत्री नवीक्षितो नैकगृहस्थितो वा॥ नजीववर्गेण युतं नदानीं जानवदेद्न्यसमागमेन॥८४॥

टी॰ जन्मसमयमे लग्नको और चंद्रमाको बृहस्पती नदेखता होय एकगृहमे भी नहोय बृहस्पतीके वर्गमे भी नहोय तो दूसरे पुरुषसे उत्पन्न जानना—

अन्यमत॥ ॥स्वातीद्वितीयारविवारयुक्ता सप्तमी सोमजरेवतीच॥ सद्वादशी भानुसुतश्रविष्ठा चैतेषु जातः परतो वदंति॥८५

टी॰ जन्मसमयमे द्वितीया रविवार स्वाती नक्षत्र होय तो अन्यसे जन्म कहना दूसरा योग सप्तमी बुधवार रेवती नक्षत्र होय तो दूसरे पुरुषसे जन्म कहना तीसरा योग द्वादशी शनिवार धनिष्ठा नक्षत्र होय तो अन्यजातकहना·

वर्णशंकरज्ञानमाह॥ धनस्थाने यदा सौरिः सैंहिकेयो धरात्मजः॥ शुक्रो गुरुः सप्तमे च तत्त्वष्टमे रविचंद्रमाः॥८६॥ ब्रह्मपुत्रे पदे वापि वेश्यासुचसदारतिः॥ प्राप्ते विंशतिमे वर्षे मूल्ह्यो भवति नान्यथा॥८७॥

टी॰ जन्मकालमे द्वितीयस्थानमे शनी राहु मंगल होय ७ स्थानमे शुक्र बृहस्पती होय ८ रवि चंद्र ये होय तो ब्राह्मणका पुत्र होय तो भी वह पुरुष वेश्यागमन करे और २० वर्षके अवस्थामे मूढ होय वर्णशंकर जानना —

॥जातक॥ ॥तनुस्थान॥लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेंगपी
डांभूसूनुसुतो विनतनुते रुधिरप्रकोपं॥छायासुतः प्रकुरुते ब
हुदुःखभाजं जीवेंदुभार्गवबुधाः सुखकांतिदाः स्युः॥१८॥
धनस्थान॥दुःखावहा धनविनाशकराः प्रदिष्टा वित्ते स्थि
ता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः॥चंद्रो बुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनो
वा नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थाः॥८९॥सहजस्थान॥
भानुः करोति विरुजं रजनीकरोपि कीर्त्या युतं क्षितिसुतः
प्रचुरप्रकोपं॥ऋद्धिं बुधः सुधिषणं सुविनीतवेषं स्त्रीणां
प्रियं गुरुकवी रविजस्तृतीये॥९०॥सुहृत्स्थान॥आदि
त्यभौमशनयः सुखवर्जितांगं कुर्वंति जन्मनि नरं सुचिरं च
तुर्थे॥सोमो बुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनो वा सौख्यान्वितं च नृप
कर्मरतप्रधानं॥९१॥सुतस्थान॥पुत्रे रविः प्रचुरकोपयु
तं बुधश्च स्वल्पात्मजं शनिधरातनुजा च पुत्रं॥शुक्रेंदुदेव
गुरवः सुतधामसंस्थाः कुर्वंति पुत्रबहुलं सुखिनं सुरूपं
॥९२॥रिपुस्थान॥मार्त्तंडभूमितनुजौ हतशत्रुपक्षं पंगु
र्नरं रिपुगृहेष्वति पूजनीयम्॥काव्येंदुजौ मतिविहीनम
नल्परोगं जीवः करोति विकलं मरणं शशांकः॥९३॥जाया
स्थान॥तिग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था जायां कुकर्म
निरतां सनुसंतनिंच॥जीवेंदुभार्गवबुधा बहुपुत्रपुत्रका रू
पान्वितां जनमनोहररूपशीलां॥९४॥मृत्युस्थान॥सर्वेग्र
हा दिनकरप्रमुखा नितांतं मृत्युस्थिता वितनुते किल दु
ष्टबुद्धिम्॥शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रयष्टिं सौख्यैर्वि
हीनमतिरोगगणोपरूपेन॥९५॥धर्मस्थान॥धर्मस्थिता र
विशनैश्चरभूमिपुत्राः कुर्वंति धर्मरहितं विमलिं कुशीलं॥
चंद्रो बुधो भृगुसुतः सुरराजमंत्री धर्मक्रियासु निरतं कु
रुते मनुष्यं॥९६॥कर्मस्थान॥आदित्यभौमशनयः कि
ल कर्मसंस्थाः कुर्युर्नरं खलकुकर्मरतं कुपुत्रं॥चंद्रः सुकीर्त्ति
सुशना बहुवित्तयुक्तं रूपान्वितं सुधर्म्मसुभकर्मभाजं॥९७

लाभस्थान॥ लाभस्थितो दिनकरो नृपलाभयुक्तं तारापतिर्बहुधनं क्षितिजः क्षितीशं॥ सौम्यो विवेकसुभगं च धनानि जीव्यः शुक्रः करोति सगुणं रविजः सुकीर्त्तिं॥ ९८॥ व्ययस्थान॥ सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशीलं क्षीणं शशी क्षितिसुतो बहुपापभाजं॥ चंद्रांगजो गतधनं धिषणः कृशांगं शुक्रो बहुव्ययकरं रविजः सुतीव्रम्॥ ९९॥ राहुकेतुफलं सर्वं मंदवत्कथितं बुधैः॥ १००॥

टी॰ लग्नसे लेको द्वादशस्थानका फल जो जो ग्रह जो जो स्थानमे होय तिनका फल कोष्टकपरसे स्पष्ट देखना परंतु राहू केतू इनका फल शनीके ऐसा जानना–

॥ नराकारचक्र ॥ ॥ ॥

शीर्षास्यं च वदनं च बाहुयुगलं हृच्चोदरं कट्यथो बस्तिं गुह्यमुरू च जानुजघने पादद्वयं वै क्रमात्॥ मेषाद्याः किल राशयः समुदिताः पूर्वैः सुबोधाय येत्वेके लग्नभतश्च काद्यवपवान्तेपास्तु निःसंशयं॥ १०१॥ ७॥

टी॰ पुरुषका आकार चक्र लिखना उसपर मेषादिक राशीका यथाक्रमसे न्यासकरना मस्तक १ मुख २ हस्त ३ हृदय ४ उदर ५ कटी ६ बस्ती ७ गुह्य ८ ऊरू ९ जानु १० जघन ११ पाद १२ ऐसा पहिले ग्रहफल जानना कोई आचार्य कहते है कि जन्मलग्नसे भी न्यासकरना- शरीरके व्रण तिल मशकके वास्ते–

अन्यमत

यत्र पापः सौम्ययुता ग्रहाः स्युस्तत्र व्रणस्तत्समराशिदेशे॥ तद्वद्रिपुस्थो व्रणकृत्खलो वा सद्दृष्टियुक्तस्तिललक्ष्मकृत्स्यात्॥ १०२॥ ॥

टी॰ नरचक्रमे जन्मलग्नसे जिस राशीमे ३ तीन ग्रह होय उस्के समान शरीरमे व्रणादिक चिन्ह कहना उसी तरहसे जन्मकुंडलीमे षष्ठस्थानमे पापग्रह होय तो शरीरमे घाव इत्यादिक कहना अथवा शुभग्रह होय तो तिलमसादिक कहना–

पुरुषजातकोष्टक

संख्या	स्थान	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनी राहु केतु
१	तनु	शरीरपीडा	कांति प्राप्ति सुख	रक्तकोप	कांतिसुख	कांतिसुख	कांतिसुख	बहुतदुःखभद्र
२	धन	अतिदुःख धननाश	बहुसंपत्ति	दुःखनाश धननाश	नानाप्रकारकी धनप्राप्ती	बहुतधन प्राप्ती	बहुधन	बहुतदुःखधननाश
३	सहज	निरोगी	कीर्तिवान्	दुष्टबुद्धि	धनवान्	उत्तमबुद्धी	बहुरूपी	स्त्रीकोबहुतमित्र
४	सुहृत	शरीरकोबहुतदुःख	सुखभोगी	शरीरकोबहुतदुःख	सुखभोगी	सुखयुक्त	सुखबहुत	शरीरको दुःख बहुतहोगा
५	सुत	बहुतक्रोधी	बहुतपुत्र	संततीहीन	संततीथोडी	बहुतपुत्रप्राप्ती	संततीबहुत	संततीहोगीनहीं
६	रिपु	शत्रुनाश	अल्पजीवी	शत्रुनाश	बुद्धिहीन रोगी	शरीरसेपीडित	बुद्धिहीन रोगी	शत्रुसेमान्यपूज्य
७	जाया	स्त्रीदुष्टकर्मी संततीथोडी	स्त्रीरूपवान् पुत्रयुक्त	स्त्रीदुष्टकर्मी संततीअधिक	स्त्रीरूपवान्पुत्रवतीस्वभावसे उत्तमऐसीप्राप्तहोय			स्त्रीदुष्टकर्मी संततीथोडी·
८	मृत्यु	अष्टमस्थानमेसबग्रहोंकाफलएकहीदुष्टबुद्धि शस्त्रघातसेशरीरमेपीडासौख्यसेहीनऔरसे [illegible] जानना·						
९	धर्म	अधर्मीदुष्टमती	धर्मबुद्धि	अधर्मीदुष्टमती	सदाधर्मात्मा	धार्मिकसर्वकाल		अधर्मीबुद्धिहीन दुष्टबुद्धि
१०	कर्म	अत्यंतदुष्टकर्मी कुपुत्रवान्	अत्यंतकीर्तिवान्	दुष्टकर्मी कुपुत्र	उत्तमकांती	शुभकर्मी	संपत्तीवान्	बहुतदुष्टबुद्धि कुपुत्र
११	आय	राजमैत्री	धनवान्	राजासेलाभ	विचारवान रूपवान्	धर्मबुद्धि आयुष्यवृ०	गुणवान्	उत्तमकीर्तिकरनेवाला·
१२	व्यय	दुष्टस्वभाव	कामीहोगा	पापकर्मी	दरिद्री	शरीरकृश	रोगी	नीचस्वभाव

स्त्रीजातकमाह॥ ॥लग्नेचसप्तमेपापेसप्तमेवत्सरे पतिः॥ म्रियतेचाष्टमेवर्षेचंद्रःषष्ठाष्टमेयदि॥१॥

टी० स्त्रीकेजन्मकालमेलग्नमेपापग्रहहोय औरसप्तममेपापग्रहहोयतो ७ वर्षमेपतिनाशजानना चंद्रमा ६।८ स्थानमेहोयतो अष्टमवर्षमेपतिनाशजानना·

अन्यमत॥ ॥द्वादशेचाष्टमेभौमेक्रूरेतत्रैवसंस्थिते॥ लग्नेचसिंहिकापुत्रेरंडाभवतिकन्यका॥२॥ ७॥ ७॥

टी० जन्मसमयमे १२ वस्थानमेमंगलहोयऔरक्रूरग्रहभी १२ वस्थानमेहोय औरलग्नमेराहुहोयतोस्त्रीविधवाहोवेऐसाजानना—

अन्यमत॥ ॥लग्नात्सप्तमगःपापश्चंद्रात्सप्तमगोपिवा॥

सद्योनिहंतिदंपत्योरेकोनास्त्यत्रसंशयः॥ ३॥

टी॰ लग्नसे ७ स्थानमे पापग्रहहोय चंद्रमासेसप्तमस्थानमेपापग्रह होयतो विवाहसे अल्पकालमे विधवाजानना—

अन्यमत॥ ॥ रविसुतोयदिकर्कमुपागतोहिमक रोमकरोपगतोभवेत्॥ किलजलोदरसंजनिता तदानिधनतावनितासुतकीर्त्तिता॥ ४॥ ७॥ ॥

टी॰ शनी कर्कराशीमेहोय चंद्रमामकरराशीमेहोयतोजलोदररोग सेस्त्रीकानाशजानना—

अन्यमत॥ ॥ निशाकरःपापखगांतरस्थःश स्त्राग्निमृत्युंकुजभेकरोति॥ पापास्मरस्थेन्यख गेचधर्मेकिलांगनाप्रव्रजतित्वमेति॥ ५॥ ७॥ ॥

टी॰ चंद्रमा पापग्रहके मध्यमे होयतो शस्त्रसे मृत्युकहना चंद्रमा मंगलके राशीमे होयतो अग्नीसेनाश कहना पापग्रह सप्तम ७ स्थानमे होय ९ स्थानमे अन्यशुभग्रहहोयतो स्त्री काषायवस्त्रधा री वेदांती होतीहै—

अन्यमत॥ ॥ सप्तमेदिनपतौपतिमुक्ताक्षो णिजेचविधवाखलुबाल्ये॥ पापखेचरविलो कनयात्तेमंदगेचयुवतिर्जरतीस्यात्॥ ६॥ ७॥

टी॰ स्त्रीकेजन्मलग्नसे सप्तम ७ स्थानमेसूर्य होयतो पतित्यागीक हना मंगल सप्तमस्थानमेहोयतो बालाअवस्थामे वैधव्यप्राप्ती सप्तमस्थानको पापग्रह देखते होयतो यौवनअवस्थामे वैधव्यप्रा प्ती सप्तमस्थानमे शनीहोयतो वृद्धअवस्थामे वैधव्यप्राप्ती ग्रहके बलसेकहना—

अन्यमत॥ ॥ लग्नेसितेंदूकुजमंदभस्थौक्रू रेक्षितौसान्यरताचबाला॥ स्मरेकुजांशेर्के सुतेनदृष्टेविनष्टयोनिश्चशुभाशुभांशे॥ ७॥ ॥

टी॰ लग्नमेशुक्रचंद्रमा मंगल शनी यह दशमस्थानमे होय उ स्कोपापग्रह देखतेहोयतो वह स्त्री परपुरुषसे संगकरेऐसाजान

ना सप्तमस्थानमे ७ मंगलका अंश होय और शनी ग्रहसप्तमस्था नको देखता होयतो नष्टयोनी जानना ग्रहसप्तमस्थानमे शुभग्रह का अंश होयतो शुभकहना॥

अन्यमत॥ ॥सूर्यारौ स्वजलाश्रितौ हि भवतः शै
लाग्रपातान्मृतिर्भौमे दुर्कस्तनाः स्वसप्तजलगाः
स्यात्कूपवाप्यादितः॥ सूर्याचंद्रमसौ खलैक्षित
युतौ कन्यायुतौ बन्धुनातौ चेद्युगविलग्नसंस्थि
तकरौ तोये निमग्नस्त्वतः॥८॥७॥७॥७॥७॥

टी॰ सूर्य मंगल ग्रह १० अथवा ४ चतुर्थस्थानमे होयतो पाषाणसंबंधसे मृत्युकहना· मंगल चन्द्र शनी ग्रह अपने स्थानमे सप्तम ७ अथवा चतुर्थ ४ स्थानमे होयतो कुंवा बावली तलाव इत्यादिकसे मृत्युकहना सूर्य और चंद्रमाको पापग्रह देखते होय अथवा युक्त होयतो वह स्त्री बंधुयुक्त कहना सूर्य चंद्र ग्रह द्विःस्वभाव राशीमे होयतो जलसे मृत्युकहना—

अन्यमत॥ ॥समेविलग्नेयदिसंस्थिताः स्यु
र्बलान्विताः शुक्रबुधेंदुजीवाः॥ स्यात्कामिनी ब्रह्म
विचारचर्चापरागमज्ञानविराजमाना॥९॥७॥॥

टी॰ समराशीका लग्न होय उसीमे शुक्र बुध चंद्र गुरु ग्रह बलयुक्त होयतो वह स्त्री ब्रह्मविचार करे और उक्त प्रकारकी ज्ञानी होय ऐसा कहना—

अन्यमत॥ ॥सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरा भवे
त्॥ कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैराभ्रमति वेश्मसु॥१०॥॥

टी॰ जिसस्त्री के लग्नसे ७ स्थानमे शुक्र होयतो कुलको दोषितकरे और कर्कराशीमे मंगल होयतो वंध्या और दूसरेके ग्रहमे वास जानना—

अन्यमत॥ ॥पापयोरंतरे लग्ने चंद्रे वा यदि कन्य
का॥ जायते चेत्तदा हंति पितृश्वश्रूभयोः कुलं॥११॥

टी॰ लग्नको पापग्रहकी कर्त्तरी होय अथवा चंद्रमाको पापग्रहकी कर्त्तरी होयतो वह स्त्री दूनो वंशका घात करे ऐसा जानना—

तनुस्थान॥ ॥मूर्त्तौ करोति विधवां दिनकृत्कुजश्च

राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्रां॥ शुक्रः शशांकतनयश्च
गुरुश्च साध्वीमायुश्च पंचकुरुते त्रचशार्वरीशाः॥१२॥
धनस्थान॥ ॥कुर्वंति भास्करशनैश्चरराहुभौमा दारि
द्र्यदुःखमतुलं नियतं द्वितीये॥ वित्तेश्वरीमविधवां गुरु
शुक्रसौम्या नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशांकः॥१३॥स
हजस्थान॥ सूर्येंदुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीये कुर्युस्त्रि
यं बहुसुतां धनभागिनीं च॥ सत्यं दिवाकरसुतः कुरुते ध
नाढ्यां लक्ष्मीं ददाति नियतं किल सैंहिकेयः॥१४॥सुहृ
त्स्थान॥ ॥स्वल्पं पयो भवति सूर्यसुते चतुर्थे दौर्भाग्यमु
ष्णकिरणं कुरुते शशी च॥ राहुर्विनष्टतनयां क्षितिजोल्पवी
जां सौख्यान्वितां भृगुसुतेज्यबुधाश्च कुर्युः॥१५॥सुतस्था
न॥ ॥नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पंचमस्थौ चंद्रात्मजो बहु
सुतां गुरुभार्गवौ च॥ राहुर्ददाति मरणं रविजस्तु रोगं क
न्याप्रसूतिनितरां कुरुते शशांकः॥१६॥रिपुस्थान॥षष्ठ
स्थिता शनिदिवाकरराहुभौमा जीवस्तथा बहुसुतां धन
भागिनीं च॥ चंद्रः करोति विधवां मुशनादरिद्रां वेश्यां श
शांकतनयः कलहप्रियां च॥१७॥जायास्थान॥ सौरार
जीवबुधराहुरवींदुशुक्रा दद्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तम
स्थाः॥ वैधव्यबंधनभयं क्षयवित्तनाशं व्याधिप्रवासपर
णं नियतं क्रमेण॥१८॥ मृत्युस्थान॥ स्थानेष्टमे गुरुबुधौ
नियतं वियोगं मृत्युं शशी भृगुसुतश्च तथैव राहुः॥ सूर्यः क
रोति विधवां धनिनीं कुजश्च सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिव
ल्लभां च॥१९॥धर्मस्थान॥ धर्मस्थिता भृगुदिवाकरभू
मिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतां शशिजः सुभोगां॥ राहुश्च सू
र्यतनयश्च करोति वंध्यां नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशांकः
॥२०॥कर्मस्थान॥ राहुर्नभस्थलगतो विधवां करोति पा
पे परां दिनकरश्च शनैश्चरश्च॥ मृत्युं कुजो धर्मरहितां कुदि
ष्टां च चंद्रः शेषा ग्रहा धनवतीं बहुवल्लभां च॥२१॥

अथ स्त्रीस्थान॥ आद्ये रविर्बहुरुजां धनिनीं शशांकः पुत्रान्वितां क्षितिसुतो रविजो धनाढ्यां॥ आयुष्मतीं सुरगुरुर्भृगुजः ससुखीं राहुः करोति सुभगां सुखिनीं बुधश्च॥२२॥ व्ययस्थान॥ ॥अंत्ये धनव्ययवतीं दिनकृद्दरिद्रां वंध्यां कुजः परतलां कुटिलां च राहुः॥ साध्वीं सितो ज्यशशिजौ बहुपुत्रपौत्रयुक्तां विधुः प्रकुरुते व्ययगो दिनां धाम्॥२३॥ ७॥

टी॰ द्वादशस्थानका फल जोजो ग्रह जोजो स्थानमें होय तिनका फलको चक्रपरसे स्पष्ट मालूम होगा—

॥ स्त्रीजातक कोष्टक॥

स्थान	नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रा॰ के॰
१	तनु	विधवा	अल्पायु	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्री	पुत्रनाश
२	धन	दरिद्रदुःखं	बहुपुत्र	दरिद्री	सौभाग्य	सौभाग्ययुक्त	सौभाग्ययुक्त	दुःखयुक्त	दरिद्रदुःख
३	सहज	पुत्रयुक्त धनयुक्त	धनपुत्रयुक्त	धनपुत्रयुक्त	धनपुत्रयुक्त	धनपुत्रयुक्त	धनपुत्रयुक्त	धनयुक्त	धनयुक्त
४	सुहृत	दरिद्री	दुर्भाग्य	अल्पसंतती	बहुसौख्य	बहुसौख्य	बहुसौख्य	अल्पदुग्ध	पुत्रनाश
५	सुत	पुत्रनाश	कन्याबहुल	पुत्रनाश	उत्तमफल	शुभफल	बहुसुख	रोगी	मृत्यु
६	रिपु	धनयुक्त	विधवा	धनयुक्त	कलहकारिणी	धनयुक्त	दरिद्रीचेष्टा	धनयुक्त	धनयुक्त
७	जाया	रोगी	प्रवासी	विधवा	नाश	भयबंधु	मृत्यु	वैधव्यमरण	धननाश
८	मृत्यु	विधवा	वियोगमरण	धनयुक्त	स्वजनवियोग	स्वजनवियोग	मरणांतवियोग	बहुपुत्र	मरणांतवियोग
९	धर्म	धर्मबुद्धि	पुत्रयुक्त	धर्मकर्मी	उत्तमभोगी	धर्मबुद्धि	धर्मबुद्धि	वंध्या	वंध्या
१०	कर्म	दुष्टबुद्धि	पापकर्मी	मृत्यु	धनयुक्त पतिव्रता	धनयुक्त पतिप्रिय	धनयुक्त पतिप्रिय	पापकर्मी	वैधव्य
११	आय	बहुपुत्र	धनयुक्त	बहुपुत्र	सुखी	आयुष्यबहुत	पुत्रयुक्त	धनयुक्त	सौभाग्यवती
१२	व्यय	दरिद्र	दिनांध	दुष्टकर्मी	सुपुत्र	सुशीला	पतिव्रता	दरिद्री	पापकर्मी

अथाष्टोत्तरी दशा

आर्द्रापुनर्वसुः पुष्य आश्लेषा तु रवेर्दशा॥ मघापूर्वोत्तरा चैव चंद्रस्य च दशा तथा॥ हस्ता चित्रा च स्वाती

भौमदशास्मृता॥ ज्येष्ठानुराधामूलेच सौम्यस्यच दशा बुधैः॥२॥ अभिजिच्छ्रवणः पूषा उषाचैव शनेर्दशा॥ धनिष्ठाशततारा च पूर्वाभाद्रपदा गुरोः॥३॥ उभापूषाश्विनीकालू राहोश्चैव दशास्मृता॥ कृत्तिकारोहिणी चोक्ता मृगः शुक्रदशा बुधैः॥४॥ एषां भानां क्रमेणैव ज्ञेयाः सूर्यादिका दशाः॥ क्रूरजा अशुभा प्रोक्ता शुभास्यात् सौम्यखेटजा॥५॥ सूर्यस्य रसवर्षाणि इंदोः पंचदशैव च॥ भौमस्य वसुवर्षाणि ऋषि चंद्र बुधस्य च॥६॥ मंदस्य दशवर्षाणि गुरोश्चैकोनविंशतिः॥ राहोर्द्वादशवर्षाणि भार्गवस्यैकविंशतिः॥७॥ ७॥ ७॥ ॥

टी॰ आर्द्रानक्षत्रसे आरंभकरके मृगतक २८ नक्षत्रमे सूर्यसे शुक्रतक ८ ग्रहोंकी पृथक् पृथक् कोष्टकपरसे महादशाकी वर्षसंख्या जानना पापग्रहमे ४ नक्षत्र और शुभग्रहमे ३ नक्षत्र जानना· और जिस विभागमे जन्म होय उस्मे भोग्याभोग्य जानना जो दशा जन्मकालमे होय वही ग्रहकी दशा प्रथम जानना· चक्रपरसे स्पष्ट देखना—

ग्रहोंकी अंतर्दशा

महादशास्वस्वदशाब्दनिघ्नाहृता वसुव्योमधराभिरेताः॥ अंतर्दशास्युर्गगनेचराणां नदेकभावोहि महादशास्यात्॥८॥ ७॥ ७॥

टी॰ कोईग्रहकी अंतर्दशा निकालना होय तो जन्मदशाके वर्षसंख्यासे उस्की वर्षसंख्या गुणदेना नंतर १०८ से भाग लेना जो अंक आवे सो वर्ष मालूम करना नंतर शेष रहे तिस्को बारसे गुणदेना पुनः १०८ से भागलेना जो अंक आवे सो मास जानना नंतर शेष रहा जो उस्को ३० से गुणदेना पुनः १०८ से भागलेना जो अंक आवे सो दिन जानना नंतर शेष रहा जो उस्को ६० से गुण देना पुनः १०८ से भाग लेना जो अंक आवे सो घडी जानना इस प्रकारसे ग्रहोंकी अंतर्दशा जानना—

सूर्यकीमहादशावर्ष ६
आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा

अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.	घ.	फल
रवि	०	४	०	०	अशुभ
चंद्र	०	१०	०	०	शुभ
मंगल	०	५	१०	०	अशुभ
बुध	०	११	१०	०	शुभ
शनि	०	६	२०	०	अशुभ
गुरु	१	०	२०	०	शुभ
राहु	०	८	०	०	अशुभ
शुक्र	१	२	०	०	शुभ
संख्या	६	०	०	०	०

चंद्रकीमहादशावर्ष १५
मघा पूर्वा उत्तरा

अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.	घ.	फल.
चंद्र	२	१	०	०	शुभ
भौम	१	१	१०	०	अशुभ
बुध	२	४	१०	०	शुभ
शनि	१	४	२०	०	अशुभ
गुरु	२	७	२०	०	शुभ
राहु	१	८	०	०	अशुभ
शुक्र	२	११	०	०	शुभ
रवि	०	१०	०	०	अशुभ
संख्या	१५	०	०	०	०

भौमकीमहादशावर्ष ८
हस्त चित्रा स्वाती विशाखा

अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.	घ.	फल
भौम	०	७	३	२०	अशुभ
बुध	१	३	३	२०	शुभ
शनि	०	८	२६	४०	अशुभ
गुरु	१	४	२६	४०	शुभ
राहु	०	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	१	६	२०	०	शुभ
रवि	०	५	१०	०	अशुभ
चंद्र	१	१	१०	०	शुभ
संख्या	८	०	०	०	०

बुधकीमहादशावर्ष १७
अनुराधा ज्येष्ठा मूल

अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.	घ.	फल
बुध	२	८	३	२०	शुभ
शनि	१	६	२६	४०	अशुभ
गुरु	२	११	२६	४०	शुभ
राहु	१	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	३	३	२०	०	शुभ
रवि	०	११	१०	०	अशुभ
चंद्र	२	४	१०	०	शुभ
भौम	१	३	३	२०	अशुभ
संख्या	१७	०	०	०	०

शनीकीमहादशावर्ष १०
पूर्वाषाढा· उत्तराषाढा· अभि० श्रवण·

अंतर्दशा

ग्रह	व	मा	दि.	घ	फल
शनि	०	११	३	२०	अशुभ
गुरु	१	९	३	२०	शुभ
राहु	१	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	१	११	१०	०	शुभ
रवि	०	६	२०	०	अशुभ
चंद्र	१	४	२०	०	शुभ
मंगल	०	८	२६	४०	अशुभ
बुध	१	६	२६	४०	शुभ
संख्या	१०	०	०	०	०

गुरुकीमहादशावर्ष १९
धनिष्ठा शततारका पूर्वाभाद्रपदा

अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.	घ	फल
गुरु	३	४	३	२०	शुभ
राहु	२	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	३	८	१०	०	शुभ
रवि	१	०	२०	०	अशुभ
चंद्र	२	७	२०	०	शुभ
मंगल	१	४	२६	४०	अशुभ
बुध	२	११	२६	४०	शुभ
शनि	१	९	३	२०	अशुभ
संख्या	१९				

राहूकीदशावर्ष १२ उत्तराभाद्रपदा· रेवती· अश्विनी भरणी					
अंतर्दशा					
ग्रह	व·	मा·	दि·	घ·	फल
राहु	१	४	०	०	अशुभ
शुक्र	२	५	०	०	शुभ
रवि	०	८	०	०	अशुभ
चंद्र	१	८	०	०	शुभ
मंगल	०	१०	२०	०	अशुभ
बुध	१	१०	२०	०	शुभ
शनि	१	१	१०	०	अशुभ
गुरु	२	१	१०	०	शुभ
संख्या	१२	०	०	०	०

शुक्रकीदशावर्ष २१ कृत्तिका रोहिणी मृग·					
अंतर्दशा					
ग्रह	व·	मा·	दि·	घ·	फल
शुक्र	४	१	०	०	शुभ
रवि	१	२	०	०	अशुभ
चंद्र	२	११	०	०	शुभ
मंगल	१	६	२०	०	अशुभ
बुध	३	३	२०	०	शुभ
शनि	१	११	१०	०	अशुभ
गुरु	३	८	१०	०	शुभ
राहु	२	४	०	०	अशुभ
संख्या	२१	०	०	०	०

विंशोत्तरीमहादशा

पक्षोनजनुर्भमंकहृत्क्रमशोर्केंदुकुजागुरूरयः॥ श
निचंद्रजकेतुभार्गवाः परिशेषात्तुदशाधिपास्ततः॥९॥

टी॰ विंशोत्तरी दशाप्रकार जन्मनक्षत्रमे २ कमकरना ९ सेभागले ना शेष १ बचेतो सूर्यदशा २ बचेतो चंद्रदशा ३ बचेतो भौम दशा· ४ बचेतो राहुदशा· ५ बचेतोगुरुदशा ६ बचेतोशनिदशा ७ बचेतोबु धदशा ८ बचेतोकेतुदशा ० बचेतोशुक्रदशा औरअधिपतिजानना·

दशाकीवर्षसंख्या भोग्याभोग्य

ऋतुदिग्गिरयोधृतिर्नृपातिधृतीमेघहयोनखाःसमाः॥क्रम
तोह्यमना अथादिमाजनिभस्याघटिकाःसमाहताः॥१॥ भ
भोगेनभक्ताःफलंभक्तपाकस्तदूनादशासाभवेद्भोग्यसंज्ञा॥

टी॰ विंशोत्तरीदशाकीवर्षसंख्या ऋतुकहिये ६ दिक्क॰ १० गिरीक॰ ७ धृतिक॰ १८ नृपक॰ १६ अतिधृतिक॰ १९ मेघक॰ १७ हयक॰ ७ नखक॰ २० यहक्रमसेवर्षसंख्या सूर्यादिशुक्रांतनककोष्टकमेस्पष्टदेखना· आगेजन्मजिसनक्षत्रमेहोय उसनक्षत्रके पूर्वनक्षत्रकीजोघडीहोय उस्को ६० मेन्यूनकरना उस्मे इष्टकालजोडदेनातोभयातहोताहै नंतर जन्मनक्षत्रकीजोघडीहोयउस्कोपूर्व ६० मेन्यूनकियाजोघडी उस्मेजोड देनातोभभोगहोताहै भयातजोहोयउस्कोनक्षत्रपतीकेवर्षसेगुणदे

ना भभोगजोभोग्यघडीहोय उस्से भागलेना जोअंकआवे सोवर्षजान ना शेषजोरहेतिस्को १२ सेगुणदेना भोग्यसे भागलेना जोअंकआवे सोमास॰ शेषजोतिस्को ३० सेगुणदेना भोग्यसेभागलेना जोअंकआवेसोदिन॰ शेषजोतिस्को ६० सेगुणदेना भोग्यघडीसेभागलेना जोअंकआवेसोघडी इसप्रकारसे दशा स्थापना—

विंशोत्तरीक्रम॥ ॥ कृत्तिकादिक्रमेणैवज्ञेयाविंशोत्तरी
दशाः॥ अंतर्दशाग्रुनावर्षमासवासरवर्त्तिताः॥११॥ ॥

टी॰ कृत्तिकासे भरणीतक नक्षत्र और दशा अंतर्दशाके स्वामीके नाम औरवर्षसंख्या कोष्टकपरसे मालूमकरना—

अन्यमते॥ ॥स्वदशाशामगुणितातद्दशागुणिता
पुनः॥ स्वगुणेनहरेल्लब्धंवर्षमासदिनंभवेत् १२

टी॰ अपानीप्राप्तदशाकोनीन३सेगुणदेना तिस्की अंतर्दशास्थापनाहोय उसेव र्षसेगुणदेना नंतर ३० से भागलेनातो अंतर्दशावर्षमासदिन प्राप्तहोता है—

सूर्यकीमहादशावर्ष ६ कृत्तिका उत्तराफा॰ उत्तराषा			
अंतर्दशा			
ग्रह	व॰	मा॰	दि॰
रवि	०	३	१८
चन्द्र	०	६	०
मंगल	०	४	६
राहु	०	१०	२४
गुरु	०	९	१८
शनि	०	११	१२
बुध	०	१०	६
केतु	०	४	६
शुक्र	१	०	०

चन्द्रकीमहादशावर्ष १० रोहिणी हस्त श्रवण			
अंतर्दशा			
ग्रह	व॰	मा	दि॰
चन्द्र	०	१०	०
भौम	०	७	०
राहु	१	६	०
गुरु	१	४	०
शनि	१	७	०
बुध	१	५	०
केतु	०	७	०
शुक्र	१	८	०
रवि॰	०	६	०

भौमकीमहादशावर्ष ७ मृग चित्रा धनिष्ठा			
अंतर्दशा			
ग्रह	व॰	मा॰	दि॰
भौम	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
रवि॰	०	४	६
चन्द्र	०	७	०

राहुकीमहादशावर्ष १८ आर्द्रा स्वाती शततारका			
अंतर्दशा			
ग्रह	व॰	मा॰	दि॰
राहु	२	८	१२
गुरु	२	४	२४
शनि	२	१०	६
बुध	२	६	१८
केतु	१	०	१८
शुक्र	३	०	०
रवि	०	१०	२४
चन्द्र	१	६	०
मंगल	१	०	१८

गुरुकीमहादशावर्ष १६ पुनर्वसु विशाखा पूर्वाभा॰			
अंतर्दशा			
ग्रह	व॰	मा॰	दि॰
गुरु	२	१	१८
शनि	२	६	१२
बुध	२	३	६
केतु	०	११	६
शुक्र	२	८	०
रवि	०	९	१८
चन्द्र	१	४	०
मंगल	०	११	६
राहु	२	४	२४

शनीकीमहादशावर्ष १९ पुष्य अनुराधा उत्तराभा॰			
अंतर्दशा			
ग्रह	व॰	मा॰	दि॰ घ
शनि	३	०	३ ०
बुध	२	८	९ ०
केतु	१	१	९ ०
शुक्र	३	२	० ०
रवि	०	११	१२ ०
चन्द्र	१	७	० ०
मंगल	१	१	९ ०
राहु	२	१०	६ ०
गुरु	२	६	१२ ०

बुधकी महादशा वर्ष १७ अश्लेषा ज्येष्ठा रेवती				
अंतर्दशा				
ग्रह	व॰	मा॰	दि॰	घ॰
बुध	२	४	२७	०
केतु	०	११	२७	०
शुक्र	२	१०	०	०
रवि	०	१०	६	०
चंद्र	१	५	०	०
मंगल	०	११	२०	०
राहु	२	६	१८	०
गुरु	२	३	६	०
शनि	२	८	९	१७

केतुकी महादशा वर्ष ७ मघा॰ मूल॰ अश्विनी			
अंतर्दशा			
ग्रह	व॰	मा॰	दि॰
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
रवि	०	४	६
चंद्र	०	७	०
मंगल	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७

शुक्रकी महादशा वर्ष २० पू॰फा॰ पू॰षा॰ भरणी			
अंतर्दशा			
ग्रह	व॰	मा॰	दि॰
शुक्र	३	४	०
रवि	१	०	०
चंद्र	१	८	०
मंगल	१	२	०
राहु	३	०	०
गुरु	२	८	०
शनि	३	२	०
बुध	२	१०	०
केतु	१	२	०

महादशाअंतर्दशाकाफल

सूर्यकीदशा॥ ॥देशांतरंचनिजबंधुवियोगदुःखमुद्वेगरोगभयचोरभवाचपीडा॥पूर्वस्थितस्यनिखिलस्यधनस्यनाशोभानोर्दशाजननकालदशाभवंति॥११॥

टी॰ प्रवासमेगमनभाईलोगसेवियोग दुःख मनकोचिंता रोग भय चोरसेपीडा औरपूर्वकेद्रव्यकानाशयहसूर्यदशामेफलप्राप्तीजानना—

चंद्रकीदशा॥ ॥हेमादिभूनिवरवाहनपानलाभःशत्रुप्रतापबलवृद्धिपरंपरांच॥मिष्टान्नपानशयनासनभोजनानिनूनंसदाशशिदशागमनेभवंति १२

टी॰ सबऐश्वर्यसुवर्णघोडाहाथीयहसबवस्तूकालाभशत्रूकानाशबलकीवृद्धीमिष्टभोजनआसनउत्तमवस्तूकालाभ चंद्रकेदशामेप्राप्तीजानना—

भौमकीदशा॥ ॥भूपालचोरभयवन्हिकृताचपीडासर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिताच॥चिंताज्वरश्चबहुकष्टदरिद्रयुक्तःस्यात्सर्वदाकुजदशाजननेभवंति॥१३॥॥

टी॰ राजासेभयचोरसेभयअग्नीसेपीडा सबशरीरमेरोग भय बहुतदुःखीचिंतायुक्तज्वरयुक्त बहुतकष्टदरिद्रयुक्तयहमंगलकेदशामेफलप्राप्तीजानना

राहूकीदशा॥ ॥दीनोनरोभवतिबुद्धिविहीनचिंतासर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिताच॥पापानिबंधबहुकष्टदरिद्रयुक्तेराहोर्दशाजननकालदशाभवंति॥१४॥ ॥

टी॰ मनुष्यदीनहोय बुद्धिहीन चितायुक्त सर्वांगरोगी भयबहुतदुःखी

पापकर्मसेबंधन बहुतकष्ट दरिद्रयुक्त यहराहुदशामेफलप्राप्तीजानना

गुरुदशा॥ ॥राज्याधिकारपरिवर्द्धितचित्तवृत्तिं धर्माधिकारपरिपालनसिद्धिबुद्धिं॥ सद्विग्रहोपिधनधान्यसमृद्धिताचस्याद्देवतागुरुदशागमनेभवंति॥ १५॥

टी० राजाका अधिकार चित्तस्वस्थ धर्ममेउत्तम प्रकारकी बुद्धि शरीर आरोग्य सतविचारवान् धनधान्यकी समृद्धि यहफलगुरुदशामेजानना—

शनीकीदशा॥ ॥मिथ्यापवादवधबंधनमर्थहानिर्मित्रैचबंधुवचनेषुचयुद्धबुद्धिः॥सिद्धंचकार्यमपियत्रसदाविनष्टंस्यात्सर्वदाशनिदशागमनेभवंति॥ १६॥ ७॥

टी० मिथ्या अपवाद दूसरेका वधबंधन प्राप्तीद्रव्यनाशमित्र और बंधूसेकलह सिद्धकार्यकानाश यहशनिदशामे फलप्राप्तिजानना—

बुधकीदशा॥ ॥दिव्यांगनामदनसंगमकेलिसौख्यं नानाविलासमभिरामनोभिरामैः॥ हेमादिरत्नविभवागमकोशध्यानंस्यात्सदाबुधदशागमनेभवंति १७

टी० उत्तमस्त्री प्राप्ती रति सौख्य और नाना प्रकारका सौख्य विलास सुवर्णरत्न इत्यादि विभवयुक्त ईश्वरध्यान यहबुधकी दशामे प्राप्तीजानना

केतूकीदशा॥ ॥भार्यावियोगजनितंचशरीरदुःखंद्रव्यस्यहानिरतिकष्टपरंपराच॥रोगाश्चबंधुकलहश्चविदेशताचकेतोर्दशाजननकालदशाभवंति॥ १८॥

टी० स्त्रीवियोगसंबंधीशरीरकोदुःख द्रव्यनाश बहुतकष्ट रोगी बंधूसेवैर देशांतरवास यहकेतूके दशाकाफलजानना—

शुक्रकीदशा॥ ॥आरामवृद्धिपरिगर्वशरीरवृद्धिंसंतानपत्रधनधान्यसमाकुलंच॥ आयुःशरीरसुतपौत्रसुखंनराणां द्रव्यंचभार्गवदशागमनेभवंति॥ १९॥

टी० सुखस्थान बगैचा इत्यादिककीवृद्धी शरीरपुष्टछत्रप्राप्ती धनधान्य युक्त आयुष्यबहुतपुत्रादिकका सौख्य द्रव्यप्राप्ती यह फलशुक्रकेदशामेजानना.

अथयोगिनीदशा॥ ॥मंगलापिंगलाधान्याभ्रामरीभद्रिकापिच॥उल्कासिद्धासंकटाचयोगिन्योष्टौदशाःस्मृताः २०

टी॰ मंगला १ पिंगला २ धान्या ३ भ्रामरी ४ भद्रिका ५ उल्का ६ सिद्धा ७ संकटा ८ यह आठ योगिनी का दशाप्रकार आगे स्पष्ट है ऐसा जानना—

योगिनीस्वामी॥ ॥अथासामधीशाक्रमान्मंगलायाः शशी तीक्ष्णभानुर्गुरुर्भूमिसूनुः॥ बुधः सूर्यसूनुर्भृगुः सिंहिकायाः सुतः संकटायास्तथानेच केतुः॥ २१॥॥

टी॰ मंगलादिक दशाके स्वामी चंद्र सूर्य गुरु मंगल बुध शनी शुक्र राहु केतु संकटा दशाका स्वामी यह मंगलादिक दशाके क्रमसे स्वामी जानना—

योगिनीदशाक्रम॥ ॥स्वर्क्षैः पिनाकिनयनैः संयोज्यव सुधिर्भजेत्॥ योगिन्यष्टौ समाख्याता भूऽन्यपातेन संकटा २२

टी॰ दशास्याव नेका प्रकार जन्मनक्षत्र मे ३ युक्त करके ८ से भाग लेना जैसा जन्मनक्षत्र पुष्य ८ इसमें तीन जोड दिया तो ११ भया ८ से भाग लेना तो शेष ३ बचने से धान्यादशा आती है यह प्रकार से दशाक्रम जानना—

वर्षसंख्या॥ ॥एकद्वित्रीणि वेदाश्च पंचषड्सप्तमानि च॥ अष्टवर्षाणि हि भवेन्मंगलादावनुक्रमात्॥ २३॥

टी॰ आठो योगिनी की वर्षसंख्या मंगला व॰१ पिंगला व॰२ धान्या व॰३ भ्रामरी व॰४ भद्रिका व॰५ उल्का व॰६ सिद्धा व॰७ संकटा व॰८ इसप्रकार से वर्षसंख्या जानना॰

अंतर्दशा॥ अथांतर्दशायाः प्रकारं प्रवच्मि दशावार्षिकं स्वस्ववर्षेण गुण्यं॥ ततः षट्त्रिभिर्लब्धवर्षादिका सा सदा खेटविद्भिर्विधेया फलार्थी २४

टी॰ प्राप्तदशा से जिस दशा का अंतर करना होय उसके वर्षसंख्या से प्राप्तदशा को गुण देना उसमें ३६ का भाग लेने से अंतर्दशा होती है आगे चक्र में स्पष्ट मालूम होगा

मंगला व·१ चंद्र दिन ३६०		पिंगला व·२ सूर्य दिन ७२०		धन्या व·३ गुरु दिन १०८०		भ्रामरी व·४ मंगल दि· १४४०		भद्रिका व·५ बुध दि· १८००		उल्का व·६ शनि दि· २१६०		सिद्धा व·७ शुक्र दि· २५२०		संकटा व·८ रा· के दिन २८८०	
मं·	१०	पिं·	४०	धं·	९०	भ्रा	१६०	भ	२५०	उ	३६०	सि	४९०	सं·	६४०
पिंग·	२०	ध	६०	भ्रा	१२०	भ·	२००	उ	३००	सि	४२०	सं	५६०	मं	८०
धन्या	३०	भ्रा	८०	भ	१५०	उ	२४०	सि	३५०	सं	४८०	मं	७०	पिं	१६०
भ्राम	४०	भ	१००	उ	१८०	सि	२८०	सं	४००	मं	६०	पिं	१४०	ध·	२४०
भद्रि	५०	उ	१२०	सि	२१०	सं	३२०	मं	५०	पिं	१२०	ध·	२१०	भ्रा	३२०
उल्का	६०	सि	१५०	सं	२४०	मं	४०	पिं	१००	ध	१८०	भ्रा	२८०	भ	४००
सिद्धा	७०	सं	१६०	मं	३०	पिं	८०	ध	१५०	भ्रा	२४०	भ·	३५०	उ	४८०
संक	८०	मं	२०	पिं	६०	ध·	१२०	भ्रा	२००	भ	३००	उ·	४२०	सि·	५६०
वेरीज	३६०	०	७२०	०	१०८०	०	१४४०	०	१८००	०	२१६०	०	२५२०	०	२८८०

दशापरत्वे फलमाह

वैरिणांतुविपदाविनाशकावाहनादिवसुरत्नलाभदा॥
कामिनीसुतगृहादिलाभदामंगलासकलमंगलोदया २५

टी॰ शत्रूकेउपद्रवकानाश घोडाहाथीसुवर्णरत्न इत्यादिकोंकालाभस्त्रीपुत्रगृहादिककालाभ और मंगलकार्यकाउदय यह मंगलादशामे फलजानना—

पिंगलादशाकाफल

दुःखशोककुलरोगवर्धिताव्यग्रताचकलहःस्वजनैश्च॥
अंशभागकथितानाफलदासौपिंगलाचविदुषांसुखदाहि २६

टी॰ दुःखशोक कुलमेरोगवृद्धी चित्तमेव्याकुलता बंधुजनमेवैर पिंगला प्रथमसुखदेतीहै नंतरलिखाफल जानना—

धान्यादशाफल॥ ॥धनंधान्यवृद्धिंधरानाथमान्यंसदायुद्धभूमौजयंधैर्यवंतं॥कलत्रांगजानांसुखंचित्रवस्त्रैर्युतंधान्यकाधान्यवृद्धिंकरोति॥२७॥

टी॰ धनवृद्धि धान्यवृद्धि राजपूज्यसर्वकाल युद्धभूमीमेजय धैर्य युक्त स्त्रीपुत्रकासुख चित्रवस्त्र युक्त धान्यादशामे धान्यवृद्धिजानना—

भ्रामरीदशाफल॥ ॥विदेशेभ्रमंहानियुद्धेगतांश्च कलत्रांगपीडासुखैर्वर्जितंतं॥रिणंव्याधिवृद्धिर्जनानांप्रकोपंदशाभ्रामरीभ्रामयेत्सर्वदेशं॥२८॥

टी॰ विदेशमेभ्रमणयुद्धमेहानि स्त्रीकोपीडा सुखहीन रिणयुक्तरोगवृद्धि जनकाप्रकोप सर्वदेशमेभ्रमण यह भ्रामरीदशामे फलजानना—

भद्रिकादशाफल॥ ॥धनानंदवृद्धिर्गुणानांप्रकाशंसमीचीनस्थानागमंराजमान्यं॥अलंकारदिव्यांगनाभोगसौख्यंसदाभद्रिका भद्रकार्यंकरोति॥२९॥

टी॰ धनकीवृद्धि आनंदवृद्धि गुणकाप्रकाश उत्तमस्थानप्राप्ती राजमान्य भूषणकीप्राप्ती स्त्रीभोगादिककासौख्यकल्याण यह भद्रिकादशामे फलजानना—

उल्कादशाफल॥ ॥भ्रमंव्याधिकष्टंज्वराणांप्रकोपंधनादेशदारादिकानांवियोगः स्वगोत्रैर्विवादंसुहृद्भिर्श्च वैरंदशाचोल्किकानर्थकारीसदैव॥३०॥ ६॥

टी० भ्रमण रोग दुःख ज्वरका कोप धनवियोग देशवियोग स्त्रीवियोग गोत्र
मे कलह मित्र बंधु इनसे वैर और नाना प्रकारके अनर्थ यह उल्कादशामे फल जा०

सिद्धादशाफल॥ ॥राज्याभिमानं स्वजनादिसौख्यं
धान्यादिलाभं गुणकीर्त्तिसिद्धिं॥ राज्यादिलाभं सुत
वृद्धिसौख्यं सिद्धं च सिद्धा प्रकरोति पुंसां॥३१॥७॥

टी० राज्यप्राप्ति अभिमान अपने गोत्रमे सुख देना धान्यलाभ गुण
सिद्धि कीर्त्तिसिद्धि राज्यचिन्हका लाभ पुत्रवृद्धि सुख और सर्व का
र्यकी सिद्धि यह सिद्धादशामे फल जानना॥—

संकटादशाफल॥ ॥जनानां विवादं ज्वराणां प्र
कोपं कलत्रादिकष्टं पशूनां हि नाशं॥ गृहे स्वल्पवासं
प्रवासाभिलाषं दशा संकटा संकटं राजपक्षात्॥३२॥

टी० जनसे कलह ज्वरका कोप स्त्रियादिकका कष्ट पशुनाश घरमे थोडा बा
स प्रवासमे रुचि और राजपक्षसे संकट यह संकटादशामे फल जानना—

सूर्यादीनां दिनदशा॥ ॥रविदिन नखसंख्या चंद्रमा
व्योमबाणैः क्षितितनयगजाश्वी चंद्रजः षट्शराश्च॥ श
निरसगुणसंख्या वाक्पतिर्नागबाणैर्नयनयुगकराहुः सप्त
तिः शुक्रसंख्या॥३३॥ जन्मनाविंशतिः सूर्ये तृतीये दश चंद्र
माः॥ चतुर्थे भौमचाष्टौ च षष्ठे बुध चतुर्थके॥३४॥ सप्तमे द
श सौरिः स्यान्नवमे चाष्टमं गुरोः॥ दशमे राहुविंशत्या तदूर्ध्वं
तु भृगोर्दशा॥३५॥ फलं॥ पंथा भोगो नृतापश्च सौख्यं पी
डा धनं क्रमात्॥ नाशः शोकश्च सौख्यं च जन्मसूर्यदशाफलं ३६

टी० एक वर्षमे सूर्यादि नवग्रहका दशाप्रकार सूर्य जन्मस्थानसे द्वादश रा
शी भोग करता है उस्मे सब ग्रहकी दशा भोग होती है तिस्का प्रकार—
२० दिनकी सूर्यदशा जन्मस्थानसे जानना· फल रस्ता चलावे—
५० दिन चन्द्रकी दशा तृतीयस्थानके १० दिन सूर्य भोग करता है फल·
नाना प्रकारके उत्तम भोग— २८ दिन मंगलकी दशा चतुर्थस्था
नके ८ दिन सूर्य भोग करता है फल रोग और संताप— ५६ दिन बुध
की दशा षष्ठस्थानके ४ दिन सूर्य भोग करता है फल सौख्यकारक—

३६ दिनशनीकीदशाएकादशस्थानके १० दिनसूर्यभोगकरताहै फल पी
डाकारकजानना — ४८ दिनगुरूकीदशानवमस्थानके ८ दिनसूर्यभो
गकरताहै फल धनप्राप्ती — ४२ दिन राहूकीदशा दशमस्थानके २० दिन
सूर्यभोगकरताहै फल नानाप्रकारकाशोक ॥ — ७० दिनशुक्रकीदशा
द्वादशस्थान पूर्णसूर्यभोगकरताहै फल सर्वसौख्यप्राप्तीजानना —

नित्यदशाक्रम ॥ ॥तिथिवारं चनक्षत्रंनामाक्षरसमन्वितं ॥
नवभिस्तु हरेद्भागंशेषंदिनदशोच्यते ॥ ३७ ॥ रविचंद्रौभौमरा
हुगुरुमंदज्ञकेसिता ॥ क्रमेणैतादशाह्येषाःफलंपूर्वोक्तमेवहि ३८

टी० तिथीसंख्या वारकीसंख्या नक्षत्रकीसंख्या ऐसेसबकी अंकसं
ख्या एकत्रकरना उसमें अपनेनामके अक्षरकीसंख्यामिलावना ९सेभाग
लेना शेष १ रहेतोसूर्यदशा शेष २ रहेतोचंद्रदशा शेष ३ रहेतो मंगलकी
दशा शेष ४ रहेतोराहूकीदशा शेष ५ रहेतो गुरूकीदशा शेष ६ रहेतोश
नीकीदशा शेष ७ रहेतो बुधकीदशा शेष ८ रहेतोकेतूकीदशा शेष ० रहे
तोशुक्रकीदशा ऐसानित्यदशाक्रम फल पूर्वदशाके ऐसाजानना —

अन्यमत ॥ ॥जन्मताराचतुर्गुण्यंतिथिवारसमन्वितं ॥
नवभिस्तु हरेद्भागंशेषंदिनदशोच्यते ॥ ३९ ॥ रवितापो
कसंतापौशशांकेस्मलाभको ॥ भूमिपुत्रेतुमृत्युःस्या
द्बुधेप्रज्ञाविवर्द्धनं ॥ ४० ॥ गुरौवित्तंभृगौसौख्यंशनौपीडा
नसंशयः ॥ राहुणाघातपातौचकेतौमृत्युर्दशाफलं ॥ ४१ ॥

टी० जन्मनक्षत्रकोचतुर्गुणितकरना उसमें तिथीसंख्या वारसंख्या जोहोय
सोसबएकत्रकरना ९सेभागलेना शेष १ रहेतोसूर्यकीदशा फल शोक
संतापकारक शेषदोरहेतोचंद्रकीदशा फल कुशललाभ शेष ३ रहेतोमं
गलकीदशा फल मृत्युकारक शेष ४ रहेतोबुधकीदशा फल बुद्धिकीवृ
द्धि शेष ५ रहेतो गुरूकीदशा फल धनप्राप्ती शेष ६ रहेतोशुक्रकीदशा फल
सुखकारक शेष ७ रहेतोशनीकीदशा फल पीडाकारक शेष ८ रहेतोराहू
कीदशा फल घातऔरपात शेष पूर्णरहेतोकेतूकीदशा फल मृत्युकारक
इसप्रकारसेनित्यदशाफलजानना — इतिदशाप्रकरणम् ॥ ३ ॥

अथगोचरप्रकरणम् ॥

मांसंशुक्रबुधादित्याः सार्द्धमासंतु मंगलः ॥ त्रयोदशगुरुश्चैव सपादद्वेदिनेशशी ॥ ३ ॥ राहुरष्टादशान्मासान् त्रिंशन्मासान् शनैश्चरः ॥ राहुवत्केतुरुक्तस्तु राशिभोगाः प्रकीर्त्तिताः ॥ २ ॥ फल ॥ सूर्यः पंचदिनं शशी त्रिघटिका भौमोष्ट वै वासरं सप्तहं ह्युशनाबुधश्च दिनं मासद्वयं वै गुरोः ॥ षण्मासं रविजस्तथैव सततंस्वर्भानुमासद्वयं केनोश्चैव तथा फलं परिमितं त्वेषं ग्रहाणां फलं ॥ ४ ॥ राशिप्रवेशे सूर्यारौ मध्ये शुक्रबृहस्पती ॥ राहुश्चंद्रः शनिश्चांते सौम्यश्चैव सदाशुभं ॥ ५ ॥ ७ ॥ ॥

टी॰ सूर्यादिक नवग्रह बारराशी गोचरमे भोगकरते हैं तिसका फल आदि मध्य अंतमे होना है सो अनुक्रमसे दिनसंख्या सहित कहते हैं —

सूर्य १ एकराशी १ महिनेमे भोगकरता है सो आदि ५ दिन फल देता है·

चंद्र १ राशी २ दिनमे भोगकरता है सो अंतकी तीन घडी फल देता है

मंगल १ राशी १॥ महिने भोगकरता है सो आदि ८ दिन फल देता है·

बुध १ राशी १ महिने भोगकरता है सो अंतमे तीन दिन फल देता है·

गुरु १ राशी १३ महिने भोगकरता है सो मध्यभागमे २ महिना फल देता है·

शुक्र १ राशी १ महिने भोगकरता है सो मध्यभागमे ७ दिन फल देता है

शनि १ राशी ३० महिने भोगकरता है सो अंतके ६ महिनेमे फल देता है

राहु १ राशी १८ महिने भोगकरता है सो अंतके दो महिनेमे फल देता है

केतु का फल राहु के ऐसा जानना— स्थानपरत्वे फल ॥ ॥

सूर्यस्थान विनाशं भयं श्रियं मानहानिमथ दैन्यं ॥ विजयं मार्गे पीडां सुकृतं हंति सिद्धिमायमथ हानिं ॥ ६ ॥ चंद्रोन्नं च धनं सौख्यं रोगं कार्यं क्षितिं श्रियं ॥ श्रियं मृत्युं नृपभयं सुखमायव्ययं क्रमात् ॥ ७ ॥ भौमो रिभीतिं धननाशमर्थं भयं तथार्थक्षतिमर्थलाभं ॥ धनात्ययं शत्रुभयं च पीडां शोकं धनं हानिमनुक्रमेण ॥ ८ ॥ बुधस्तु बंधं धनमन्यभीतिं धनं रुजं स्थानमथो च पीडां ॥ अर्थं रुजं सौख्यमथात्म सौख्यं अर्थक्षतिं जन्मगृहात्करोति ॥ ९ ॥ गुरुर्भयं धनं क्लेशं धननाशं सुखं शुचिः ॥ मानं रोगं सुखं दैन्यं लाभं पीडां च जन्मभात् ॥ १० ॥ कविः शत्रुनाशं धनं सौ

व्ययमर्थं सुताप्तिं रिपोः साध्यसंशोकमर्थं ॥ स्वहद्रस्वला भंवि
पत्तिं धनाप्तिं धनाप्तिं नतोल्यात्मनो जन्मराशेः ॥ ११ ॥ शनिःस्
वैनाशं तथा वित्तनाशं धनं शत्रुवृद्धिं सुतादेः प्रवृद्धिं ॥ श्रियं
दोषसंधिं रिपुं द्रव्यनाशं तथा दौर्मनस्यं धनं बद्धनर्थं ॥ १२ ॥
राहुर्हानिं तथा नैस्वं धनं वैरं सुखं श्रियं ॥ कलिं वसु चतुरित्तं
वैरं सौख्यं सुखं क्रमात् ॥ १३ ॥ केतुः क्रमाद्रुजं वैरं सुखं भी
तिं सुखं धनं ॥ गतिं गदं दुःख्यातिं च शोककीर्तिं च शत्रुतां ॥ १४
टी० इस्का अर्थ कोष्टकमे स्पष्ट देखना ॥ गोचरचक्रम् ॥ ॥

राशी	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	नाश	अन्नप्रा	शत्रुभ	अधन	भय	शत्रुना·	सर्वना·	हानि	रोग
धन	भय·	धनप्रा·	धनप्रा·	धनप्रा	धनप्रा·	धनप्रा	धनना	धनक्षा	वैर·
सहज	लक्ष्मी	सुख	धनप्रा·	प्रीति	क्लेश	सौख्य	धनला	धनप्रा·	सुख
सुहृत	मानक्षा·	रोग	भय	धनप्रा	धनना	धनप्रा	शत्रुवृ·	वैर	भय
सुत	दीनता	कार्यक्ष·	अर्थश	रोग	स्वस्थ	शुभप्रा·	पुत्रप्रा	बुद्धि	बुद्धि
रिपु	विजय	लक्ष्मी	लाभ	स्थानला	शुचि	शत्रुभ·	धनप्रा·	लक्ष्मी	धनप्रा·
जाया	मार्ग	लक्ष्मी	खर्च	पीडा	मान	भय	दोष	कलह	मार्गके
मृत्यु	पीडा	मृत्यु	शत्रुभ·	अन्नप्रा	रोग ·	शोक	शत्रु	धनला	रोग
धर्म	पुण्य	राजभ·	पीडा	रोग	सुख	धनप्रा·	धनला·	पापक	दुष्टक
कर्म	सिद्धि	सुख	शोक	सौख्य	दीनता	महाव	सुखहा	वैर	शोक
आय	लाभ	लाभ	धनप्रा	सौख्य	लाभ	विपत्ती	धनप्रा	सौख्य	कीर्ति
व्यय	हानि	खर्च	हानि	नाश	पीडा	धनप्रा	धनना	बुद्धि	शत्रुना

वेधचक्रमाह ॥ ॥ सूर्यो रसांत्ये खयुगेऽपि नंदे शिवाक्ष
यो भौमशनीतमश्च ॥ रसांकयोर्लाभशरे गुणांत्ये चंद्रोंब
राब्धौ गुणनंदयोश्च ॥ १५ ॥ लाभाष्टमे चाद्यशरे रसांत्ये नग
ह्ययेन्त्रौ द्विशरेब्धिरामे ॥ रसांकयोर्नागविधौ खनागे लाभ
व्यये देवगुरुः शराब्धौ ॥ १६ ॥ द्यौ त्येनवांशे द्विगुणे शिवाहै
शुक्रः कुनागे द्विनगेग्निरूपे ॥ वेदांबरे पंचनिधौ गजेशो न
देशयोर्भानुरसे शिवाग्नौ ॥ १७ ॥ क्रमाच्चतुर्भो विद्धति ग्र
हस्थाः सितुः सुतस्यात्र न वेधमाहुः ॥ दुष्टोपि खेटो विप
रीतवेधाच्छुभो हि कोणे शुभदः सितेज्ञः ॥ १८ ॥ ९२ ॥

स्वजन्मराशेरिहवेधमाहुरन्येग्रहाधिष्टितराशितःस्तः
॥हिमाद्रिविंध्यांतरएववेधोनसर्वदेशेष्विति काश्यपोक्तिः १९

टी॰ जन्मराशीसे औरग्रहकेगतीसेगोचरका शुभाशुभफललिखेवे ध्रुवांकसे मालूमकरना जैसासूर्यजन्मस्थानसेषष्ठस्थानमेशुभजोद्वादशस्थानमे शुभग्रहहोय तोशुभ अशुभहोयतो अशुभ ऐसासबग्रहकावेधजानना परंतु पितापुत्र सूर्यशनि चंद्रबुध इनका परस्परवेध नहीहोता जन्मस्थानसे द्वादशस्थानमे सूर्यहोय और शनी षष्ठस्थानमेंहोय अन्यग्रहहोयतोविपरीतवेध शुभजानना· हिमाद्रि औरविंध्य इस्केअंतरमेयहवेध अन्यदेशमेनहीऐसाजानना कश्यपकहतेहैं·–

॥ वेधचक्रम् ॥

रवेः				मं	श·	रा		चंद्रस्य					बुधस्य		
६	१०	३	११	६	११	३	१०	३	११	१	६	७	२	४	६
१२	४	९	५	९	५	१२	४	९	८	५	१२	२	५	३	९

			गुरोः							शुक्रस्य						
८	१०	११	५	२	९	७	११	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
१	८	१२	४	१२	११	३	८	९	७	१	१०	९	११	११	६	३

तारामाह॥ ॥जन्माख्यसंपद्विपदक्षेमप्रत्यरिसाधकाः॥वधमैत्रातिमैत्राःस्युस्ताराना मसदृक्फलाः॥ २०॥

टी॰ जन्मतारा१ संपत्२ विपद३ क्षेम४ प्रत्यरि५ साधक६ वध७ मैत्र८ अतिमैत्र९ यहतारानव इनकानामके समान शुभाशुभफलजानना·

अन्यमत॥ ॥जन्मर्क्षंगणयेदादौदिनधिष्ण्यावधिक्रमात्॥ नवभिस्तुहरेद्भागंशेषंताराविनिर्दिशेत्॥ २१

टी॰ जन्मनक्षत्रसेदिननक्षत्रतकगिनना९ सेभागलेना शेषबचेसोताराजानना

अन्यमत॥ ॥जन्मताराद्वितीयाचतुर्थीषष्ठ्यष्टमी तथा॥नवमीषट्शुभाताराःशेषास्तिस्रोऽशुभावहाः २२

टी॰ जन्मतारा१ संपत्२ क्षेम४ साधक६ मैत्र८ अतिमैत्र९ यह६ताराशुभजानना औरविपद३ प्रत्यरि५ वध७ यह३तारा अशुभजा॰ इसमेकोईशुभकर्मकरनानही·

अन्यमते॥ ॥जन्मत्रिपंचसप्ताख्यातारानिष्टफलाः स्मृताः॥शाकंगुडंचलवणंसतिलंकांचनंक्रमात्॥ २३॥

टी॰ प्रथमतारा१ तृतीय३ पंचम५ सप्तम७ यह४तारा अशुभफलकर

तीहै इसवास्तेचारोताराकेदानप्रथमताराशमे शाककहियेतरकारीदानक रना तृतीयताराममेगुडदानकरना पंचमताराममेलवणकहियेनोनदानकरना सप्तमताराममेतिलऔरसुवर्णदानकरना अशुभमेदानकरनेसेशुभहोताहै

अन्यमत॥ ॥ऋक्षरन्ध्रतिथीरिक्ताचंद्रश्चाष्टमग स्तथा॥तत्सर्वंनाशयेत्ताराषट्चतुर्नवमीतथा॥२४॥

टी॰ दग्धनक्षत्र रिक्तातिथी अष्टमचंद्रमा ऐसेदुष्टयोगकानाश षष्ठ तारा चतुर्थतारा नवमतारा करतीहै—

चन्द्रबल॥ ॥द्विपंचनवमेशुक्लेश्रेष्ठ चन्द्रोहिउच्य ते॥अष्टमेद्वादशेकृष्णेचतुर्थेश्रेष्ठउच्यते॥२५॥

टी॰ शुक्लपक्षमेद्वितीय २ पंचम ५ नवम ९ चन्द्रमा श्रेष्ठहोताहै कृ ष्णपक्षमे अष्टम ८ द्वादश १२ चतुर्थ ४ श्रेष्ठहोताहै

अन्यमत॥ ॥शुक्लपक्षेबलीचंद्रोकृष्णेताराबली यसी॥यदिस्यात्सबलश्चंद्रोतथापिक्लेशदायिनी २६

टी॰ शुक्लपक्षमे चंद्रमा बलीहोताहै कृष्णपक्षमे ताराबलीहोतीहै प रंतु चंद्रमाबली होयतथापिताराक्लेशदायकहोतीहै-

॥अन्यमत॥ ॥येखेचरागोचरतोष्टवर्गोद्दशाक्रमाद्वाप्य शुभाभवंति॥दानादिनातेसुतरांप्रसन्नास्तेनाधुनादानविधिंप्रव (क्ष्ये २७)

टी॰ जोग्रहगोचरमे अथवाअष्टवर्गमे अथवादशामेजो अशुभहोयतो उसग्रहके दानद्रव्यसेदानविधीकहतेहै—

वारोकेदान॥ ॥भानुस्तांबूलदानात्पहरतिनृणांवैकृतंवा सरोत्थंसोमः श्रीखंडदानादवनिवरसुतोभोजनात्पुण्यदा नात्॥सौम्यःशास्त्रस्यमंत्राद्गुरुहरिभजनाद्भार्गवःशुभ्रव स्त्रात्तैलस्नानात्प्रभानेर्दिनकृतनयो ब्रह्मनत्यापरेच॥२८॥

टी॰ सूर्यादिकवारके दुष्टफलनाश होनेकेवास्ते दानसूर्यका तांबूल दान चंद्रमाका श्रीखंड चंदनदान मंगलका ब्राह्मणभोजन पुण्यदा न बुधका शास्त्रकेमन्त्रका दान गुरूका हरिभक्ति शुक्रकासपेदवस्त्र शनैश्चरकातैलस्नान और राहूकेतूकेवास्ते ब्राह्मणकोनमस्कारदान यहनवग्रहवारमेयथाक्रमसे पीडानाशहोनेकेवास्ते करना—

ग्रहोंकादान॥ सूर्य॥ माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुकौसुंभ
वासोगुडहेमताम्रं॥ आरक्तकंचंदनमंबुजंचवदंतिदानं
हिविरोचनाय॥३०॥ चंद्र॥ घृतकलशंसितवस्त्रंदधिशं
खमौक्तिकंसुवर्णंच॥ रजतंदद्याच्चंद्रारिष्टमतच्छांतये
त्वरितं॥३१॥ मंगल॥ प्रवालगोधूममसूरिकाश्ववृषंसु
ताम्रंकरवीरपुष्पं॥ आरक्तवस्त्रंगुडहेमताम्रंदुष्टायभौ
मायचरक्तचंदनं॥३२॥ बुध॥ नीलंवस्त्रंमुद्गहेमबुधाय
रत्नंपाचींदासिकांहेमसर्पिः॥ कांस्यंदंतंकुंजरस्याथमे
षोरौप्यंसस्यंपुष्पजात्यादिकंच॥३३॥ गुरु॥ अश्वःसुव
र्णमधुपीतवस्त्रंसपीतधान्यंलवणंसपुष्पं॥ सशर्करंत
द्रजनीप्रयुक्तंदुष्टायशांत्यैगुरवेप्रणीतं॥३४॥ शुक्र॥ चि
त्रवस्त्रमपिदानवार्चितेदुष्टगेमुनिवरैःप्रणोदितं॥ तंदु
लंघृतसुवर्णरौप्यकंवज्रकंपरिमलंधवलागौ॥३५॥ श
नि॥ माषाश्चतैलंविमलेंद्रनीलंतिलाःकुलित्थामहिषी
चलोहं॥ कृष्णाचधेनुःप्रवदंतिनूनंदुष्टायदानंरविनंद
नाय॥३६॥ राहु॥ गोमेदरत्नंचतुरंगमश्चसुनीलनैला
मलकंबलंच॥ तिलाश्चतैलंखलुलोहमिश्रंस्वर्भानवेदा
नमिदंवदंति॥३७॥ केतु॥ वैडूर्यरत्नंसतिलंचतैलंसुकंब
लाश्चापिमदोमृगस्य॥ शस्त्रंचकेतोःपरितोषहेतो१
च्छागस्यदानंकथितंमुनीन्द्रैः॥३८॥

टी॰ इसका अर्थ चक्रमें स्पष्ट है सो जानना —

ग्रहोंकीजपसंख्या॥ ॥रवेःसप्तसहस्राणिचंद्रस्यै
कादशैवतु॥ भौमेदशसहस्राणि बुधेचाष्टसहस्रकं
॥३९॥ एकोनविंशतिर्जीवेशुक्रेचैकादशैवतु॥ त्रयो
विंशतिमंदेचराहोरष्टादशैवतु॥४०॥ केतोःसप्तस
हस्राणिजपसंख्याप्रकीर्त्तिता॥४१॥ ९॥ ७॥

टी॰ सूर्यादिकग्रहकीजपसंख्याचक्रमेंस्पष्टदेखना —

नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
दानानि	माणिक	घृतकुं	मूंगा	नीलाव॰	घोडा	चित्रव॰	उडदी	गोमेद	वैडुर्य
०	गोहू	सफेदव॰	गोहू	मूग	सोना	चावल	तेल	रत्न	रत्न
०	धेनुसव	दहि	मसुरी	सोना	सहत	घृत	नीलम॰	घोडा	तिल
०	लालव	शंख	बैललाल	रत्नस॰	पीलाव	सोना	तिल	नीलम॰	तेल
०	गुड	मोती	कनैल	पन्ना	पीलाधा	चांदी	कुलथी	तेल	कंबल
०	सोना	सोना	लालव	दाशी	नोन	हीरा	भैंस	आवरा	कस्तूरी
०	तांबा	चांदी	गुड	घृत	फूल	सुगंध	लोह	कंबल	शस्त्र
०	रक्तचंदं	०	हेम	कांसा	चीनी	शुभ्रधेनु	कृष्णाधे	तिल	बकरा
०	कमल	०	तांबा	हाथीदांत	हरिद्रा	०	०	तेलसेपि भितलोह	०
जप	७०००	११०००	१००००	८०००	१९०००	१९०००	२३०००	१८०००	७०००

ग्रहपीडानिवारणार्थ॥ ॥देवब्राह्मणवंदनाद्गुरुवचःसंपाद नात्सत्यहंसाधूनामपिभाषणाच्छ्रुतिरवःश्रेयःकथाकार णात्॥होमाद्ध्वरदर्शनात्सुनिमनोभावाज्जपाद्दानतो नोकुर्वंतिकदाचिदेवपुरुषस्यैवंग्रहाःपीडनम्॥४२॥

टी॰ देवताको और ब्राह्मणको वदनकरना॰ गुरूकीआज्ञासंपादनकरना॰ साधुवोंके मुखसेश्रुतिस्मृति और उत्तमकथाश्रवण होमकरनेसे यज्ञके दर्शनसे शुद्धमनसे भावसे जपसे दानसे यहप्रकारसेकरना तो ग्रहपीडाकारकनहीहोते॥ ॥ इतिगोचरप्रकरणम्॥ ७॥

॥अथजातकर्म॥

जातेपुत्रेपिताकुर्यान्नांदीश्राद्धंविधानतः॥
जातकर्मततःकुर्यादन्यैरालंभनात्पुरा॥१॥

टी॰ पुत्रउत्पन्नहोनेहीपितानेजातकर्मकरना दूसरेनेबालककोस्पर्श करनेकेपहिले नांदीश्राद्धपूर्वकयथाविधीसेकर्मकरना—

अवकहडचक्रमिदं॥ ॥चूचेचोलाश्विनीप्रोक्तालीलू लेलोभरण्यपि॥आईऊएकृत्तिकास्याद्वोवावीवूतुरो हिणी॥२॥वेवोकाकीमृगशिरःकूघङछस्तथार्द्रका ॥केकोहाहीपुनर्भेस्याद्धहूहेहोडाचपुष्यभं॥३॥डीडू डेडोतुआश्लेषामामीमूमेमघास्मृता॥मोटाटीटूपूर्व

फल्गुटेटोपाप्यूत्तरं तथा ॥ ४ ॥ प्रोक्तः पूषाणढोहस्तः पे
पोरारी तु चित्रका ॥ रूरेरोतातथा स्वाती नीनूनेनो विशा
खिका ॥ ५ ॥ नानीनूनेनुराधर्क्षे नोयायीयूतु इंद्रभं ॥ येयो भा
भी मूलभे स्यात् पूर्वाषाढा बुधाफढा ॥ ६ ॥ भेभोजाज्युत्तरा
षाढा जूजेजो खाभिजिद्भवेत् ॥ खीखूखेखो श्रवणभं गागी
गूगे धनिष्ठिका ॥ ७ ॥ गोसासीसू शतभिषक् सेसोदादी तु पू
र्वभाक् ॥ उभा दूथाझञ ज्ञेयो देदोचाची तु रेवती ॥ ८ ॥
अथावकहडचक्रस्य कृत्तिकादित्वेपि अश्विन्यादीनां
मेषाद्यारंभकत्वेन चक्रस्य मेषादिराश्युपयोगित्वेन तत्
क्रमेण बालानां सुखबोधाय शीघ्रोपस्थितये चाश्विन्यादि
नक्षत्रपाद नामानि लिख्यंते ॥ तत्र अइउएओ इति पंचस्व
रयुक्तनामाद्यक्षराणां नियमः ॥ तत्रापि अइउए तेषां ह्रस्व
त्वदीर्घत्वानियमः ॥ एओ एतयोर्ह्रस्वत्वाभावेनार्थाद्दीर्घ
त्वमेव ॥ एवं नामाक्षराणां समविषमसंख्ययोरनियमः
॥ व्यावहारिके एव संख्यायाः समत्वविषमत्वयोर्नियम
मात् ॥ अन्यथा रौहिणः रैवतः आपभरणः एवं मासनाम
स्वपि उपेंद्रो यज्ञपुरुषः इत्यादि शिष्टप्रयोगाणां दुष्टत्वं स्यात्
टी० नामाक्षर के वास्ते नक्षत्र के चार चरण मे चार अक्षर चक्र मे देखना

चूचे चोला	अश्विनी	हूहे होडा	पुष्य	रूरे रोता	स्वाती	जूजे जोखा	अभिजित्
लीलू लेलो	भरणी	डीडू डेडो	आश्लेषा	तीतू तेतो	विशाखा	खीखू खेखो	श्रवण
आई ऊए	कृत्तिका	माभी मूमे	मघा	नानी नूने	अनुराधा	गागी गूगे	धनिष्ठा
वोवा वीवू	रोहिणी	मोटा टीटू	पूर्वा	नोया यीयू	ज्येष्ठा	गोसा सीसू	शततारका
वेवो काकी	मृगशिरा	टेटो पापी	उत्तरा	येयो भाभी	मूल	सेसो दादी	पूर्वाभाद्रप०
कूघ ङछ	आर्द्रा	पूष णाढा	हस्त	भूधा फाढा	पूर्वाषाढा	दूथा झञ	उत्तराभा०
केको हाही	पुनर्वसु	पेपो रारी	चित्रा	भेभो जाजी	उत्तराषा०	देदो चाची	रेवती

॥ अथनामानिलक्ष्यन्तेप्रतिनक्षत्रंपादनामाद्यक्षराणि

चूचेचोलाश्विनीचैव

१ चूडामणिः	१ चूडामणिः	
२ चेष्टेश्वरः	२ चेष्टेश्वरी	चेष्टाक्रिया
३ चोलेश्वरः	३ चोलेश्वरी	चोलोदेशविशेषः
४ लज्जायुक्तः	४ लज्जायुक्ता	

लीलूलेलोभरण्यथ

५ लीलायुक्	५ लीलायुक्	
६ लूताहरः	६ लूताहारिणी	लूतारोगविशेषः
७ लेखभक्तः	७ लेखभक्ता	लेखाअदितिनंदना
८ लोकमान्यः	८ लोकमान्या	इत्यमरः

आईऊएकृत्तिकास्यात्

९ आयुष्मान्	९ आयुष्मती	
१० ईश्वरः	१० ईश्वरी	
११ उत्तमः	११ उत्तमा	
१२ एकाकी	१२ एकाकिनी	

ओवावीवुतुरोहिणी

१३ ओग्रः	१३ ओग्रा	ईषदुग्रेत्यर्थः
१४ वामनः	१४ वामा	
१५ विद्याधरः	१५ विद्याधरी	
१६ वुन्नतज्ञः	१६ वुन्नंतज्ञा·	वुन्नस्यपोव्याकरणेप्रसिद्धः

वुन्नस्यपोताये शब्दास्तान् जानातीति। हंहाहुन्वैरमैथुनिकयो रित्यनेन सिद्धाः अश्वपद्दिषिकाअत्रिभरद्वाजिकेत्यादयः॥

वेवोकाकीमृगशिरः

१७ वेषवान्	१७ वेषवती	
१८ वोग्रः। क्वचिदुग्रःक्वचित्सौम्यः	१८ वोग्रा·	विकल्पेनोग्रा·
१९ कालज्ञः	१९ कालज्ञा	
२० कीलालदः। पयःकीलालममृतं	२० कीलालदा। कीलालममृतमितिनिघंटौ·	

कूघंङछाथआर्द्रकः

२१ कुलश्रेष्ठः	२१ कुलश्रेष्ठा	
२२ घनश्यामः	२२ घनश्यामप्रिया	
२३ ङःक्तिथीशः	२३ ङःक्तिथीशा·	

ङः नंमणपतिपश्चादित्यादौङःनमिजिनंतु एवंतमित्यर्थः॥ नेनम

णपतयेइतिसिध्यतितथाचङेप इस्यचतुर्थीबोधकत्ववत्तङ:सपद स्यापिषष्ठीबोधकत्वंतथैवद्वितीयादिसप्तम्यंतशब्दानांविभक्तिवाच कत्वंतिथिवाचकत्वंचप्रकृतेतुतिथिवाचकत्वेनङ:स्तिथिःषष्ठीतिथिः तस्याईशःग्रहःतिथीशावन्हिकौगौरीगणेशोऽहिर्गुहोरविरितिज्योतिषोक्तेः

२४ छायाकारी २४ छायाकारिणी

केकोहाहीपुनर्वसू

२५ केलिज्ञः २५ केलिज्ञा केलिःक्रीडा

२६ कोमलः २६ कोमला

२७ हरिः २७ हरिणी

२८ हितज्ञः २८ हितज्ञा

हूहेहोडाथपुष्यकः

२९ हूहूज्ञः (हाहाहूहूश्चैवमाद्या २९ हूहूज्ञा

३० हेलावित् (गंधर्वास्त्रिदिवौक ३० हेलावित्

३१ होता (सामित्यमरः ३१ होत्री· हवनकर्त्रीत्यर्थः

३२ डाकिनीशः ३२ डाकिनीज्ञा। डाकिनीदेवताविशे (षः

डीडूडेडोथआश्लेषा

३३ डिंभः ३३ डिंभा। पोतःपाकोऽर्भकोडिंभ इ (त्यमरः

३४ डुकृञ्धातुजज्ञः ३४ डुकृञ्धातुजज्ञा

डुकृञ्करणइतिधातोर्जाताये प्रयोगास्तान्जानातीति·

३५ डेंद्रयुक्।ध्वनियुक्तइत्यर्थःडकारोध्वनिरुच्यतेइत्येकाक्षरः

३५ डेंद्रयुक्

३६ डोच्चः ३६ डोच्चा· ध्वनिनाश्रेष्ठा

मामीमूमेमघातथा

३७ मानी ३७ मानिनी

३८ मीनाक्षीवित् ३८ मीनाक्षी

३९ मूर्खेतर· मूले·आदिवाचक ३९ मूर्खेतरा· चतुरेत्यर्थ

४० मेदिनीश· ४० मेदिनी

मोटाटी इत्तुपूर्वास्यात्

४१ मोमाभक्तः। माचउमाचमोमेतयो (र्भक्तः ४१ मोमाभक्ता

४२ टार्थज्ञः ४२ टार्थज्ञा

टोधरित्र्यांकटेचैवध्वनौचपरिकीर्तितइत्येकाक्षरः

४३ टीकाकृत् ४३ टीकाकृत्

४४ टुटुधातुजज्ञः ४४ टुटुधातुजज्ञा

दुदुधात्तोर्जातामेप्रयोगास्तान्जानातीति
हेदोपापीतुउत्तरा

५५ हेंद्रयुक्	५५ टेंद्रयुक्ता डंद्रवत्
५६ टोब्बः	५६ टोब्बा डोम्बवत्
५७ पाना	५७ पालुयित्री
५८ पीनः	५८ पीना।पुष्टेत्यर्थः

षूषणठाषहस्तःस्यात्

४९ पूज्यः	४९ पूज्या
५० षष्ठीभक्तः	५० षष्ठीभक्ता ॥जन्मदिनात्षष्ठदिने
५१ णार्ग्यवान्	५१ णार्ग्यवती (पूज्यदेवताविशेषःषष्ठी
५२ ढार्यत्तः	५२ ढार्यत्ता ढोमहेशःसमाख्यातइ (त्येकाक्षरः

पेपोरारीतुचित्रका

५३ पेष्ठा पेशलः	५३ पेष्ठी
५४ पोतः कः	५४ पोतवती
५५ राजा	५५ राज्ञी
५६ रीतिवित्	५६ रीतिवित् रीतिःसन्मार्गः

रूरेरोनातथास्वाती

५७ रूपवान्	५७ रूपवती
५८ रेवाभक्तः। रेवतीरमणः	५८ रेवा रेवानदी रेवती
५९ रोगहरः। रोहिणीशः	५९ रोगहरा
६० तारकः	६० तारका नक्षत्रता

तीतूतेतोविशाखका

६१ तीर्थभक्तः	६१ तीर्थभक्ता
६२ तुलाज्ञः	६२ तुलाज्ञा। तुला तोलनं तांजानाती (ति
६३ तेजस्करः तेजस्वी	६३ तेजस्करा
६४ तोयधरः	६४ तोयधरी। वाप्यादिः

नानीनूनेअनूराधा

६५ नागः। नरः। नायकः।	६५ नारी
६६ नीतिज्ञः	६६ नीतिज्ञा
६७ नूतनः	६७ नूतना
६८ नेमवान्	६८ नेमवती। अन्नवतीत्यर्थः निघंटौ नेमशब्दोऽन्नपर्यायः

ज्येष्ठानोयायियुः स्मृता

६९ नोनवीनः
७० यानयुक्
७१ यियासुः
७२ युद्धृत्तः

६९ नोनवीना· नोनिषेधेनवीनोना स्तिप्राचीना
७० यानयुक्
७१ यियासुः यातुमिच्छुरित्यर्थः
७२ युद्धृत्ता

येयोभाभीतुमूलंस्यात्

७३ येशः
७४ योद्धा· योगी
७५ भाग्यवान्· भगीरथः· भक्तः
७६ भीमः

७३ येशा। यानां यानानां यातॄणां वा ई
७४ योत्थी· योगिनी· शः। योनं यातीरि
७५ भाग्यवती पस्त्यागेइत्ये
७६ भीरुः· भीमाचा कास्तरः

भूधाफाढाचपूर्वास्यात्

७७ भूपः
७८ धरणीशः
७९ फाल्गुनः
८० ढाक्काप्रियः

७७ भूपप्रिया
७८ धरणिः
७९ फाल्गुनप्रिया· सुभद्रेस्यर्थः अ
८० ढक्काप्रिया र्जुनः फाल्गुनोजि ष्णुरिति

ढक्कावाद्यविशेषः॥ स्याद्यशाः पटहोढक्केत्यमरः

भेभोजाज्युत्तराषाढा

८१ भेशः
८२ भोक्ता
८३ जनकः
८४ जीवः। बृहस्पतिः

८१ भेशप्रिया (भानांनक्षत्राणामीशः न
८२ भोक्त्री· क्षत्र मृक्षंभं· नक्षत्रेशः
८३ जननी· क्षपाकर इत्यमरः
८४ जीविनी। जीवनकर्त्री त्यर्थः

जूजेजोखाभिजित्स्मृतः

८५ जुंगज्ञः
८६ जेता
८७ जोष्टा
८८ खनित्रज्ञः

८५ जुंगज्ञा· (जुंग औषधिविशेषः
८६ जेत्री जुंगोब्राह्मीत्त्वित्यम
८७ जोष्ट्री रः
८८ खनित्रज्ञा· खनतियेननतत्ख नित्रंतज्जानातीति

खिखूखेखोश्रवश्चैव

८९ खिलवित्
९० खुरभृत्यः
९१ खेदहा खेदोदुःखं
९२ खोज्वलः

८९ खिलवित्· खिलंपरिशिष्टं
९० खुरभृत्या· खुरंबिभ्रतीतिखुरभृतः ताम् गोमहिष्यादीन्यातीति
९१ खेदहारिणी
९२ खोज्वला· खे आकाशेउज्वलतीति सूर्यविद्युदादिः

गागीगूगेधनिष्ठका

९३ गणपतिः	९३ गणपतिप्रिया
९४ गीतः	९४ गीता· लोकैरितिशेषः
९५ गूढज्ञः	९५ गूढज्ञा·
९६ गेयः	९६ गेया· स्तुत्येत्यर्थः

गोसासीसूशततारा

९७ गोमान्	९७ गोमती
९८ साधुः	९८ साध्वी
९९ सीतावरः	९९ सीता
१०० सूज्ञः	१०० सुज्ञा

सेसोदादीचपूर्वभा·

१०१ सेव्यः	१०१ सेव्या
१०२ सोमः	१०२ सोमप्रिया
१०३ दाता	१०३ दात्री
१०४ दिवाकरः	१०४ दिवाकरप्रिया

दूथाझञ चोत्तराभा·

१०५ दूताभिज्ञः	१०५ दूताभिज्ञा
१०६ थार्थकृत्	१०६ थार्थकृत्· थकारः परिरक्षणे इत्येकाक्षरः
१०७ झषकेतुः	१०७ झषकेतुप्रिया· ब्रह्मस्तुर्झषकेतुःस्यादित्यमरः
१०८ ञकारार्थः	१०८ ञकारार्था· ञकारो गायकः प्रोक्त इत्येकाक्षरः

देदोचाचीरेवती

१०९ देवः	१०९ देवपत्नी
११० दोलारूढः	११० दोलारूढा
१११ चारुकांतिः	१११ चारुकांतिः
११२ चिरजीवी	११२ चिरजीविनी

जातकर्म॥ ॥ यस्मिन्जन्ममुहूर्तेपि सूतकांतेथ वाशिशोः॥ जातकर्मचकर्तव्यंपितृपूजनपूर्वकं॥१॥ द्विप्रेश्वरैर्भुवैर्मिश्रेद्वादशेप्रथमेन्हिवा॥ केंद्रेगुरौभृगौकार्यंजातकर्मसनातनम्॥२॥ ७॥ ७॥ ॥

टी० बालककाजन्ममुहूर्तमाप्तहो पलो अशौचव्याप्तीरहतेभीजातकर्म नांदीश्राद्धपूर्वक करना प्रथमदिनमेकरना· प्रथमदिननहो

यतो १२ दिनमेकरना क्षिप्रसंज्ञकनक्षत्रमे चरसंज्ञक नक्षत्रमे ध्रुवसंज्ञकनक्षत्रमे मिश्रसंज्ञकनक्षत्रमे और केंद्रमे गुरुशुक्र० होयतोजातकर्मकरनाशुभहै —

स्नानफल॥ ॥श्रुत्वाजातंपितापुत्रंसचैलंस्नानमाचरेत्॥उत्तराभिमुखोभूत्वानद्यांवादेवखानके॥३॥

टी० पितानेबालकका जन्मसुननेहीवस्त्रसहित उत्तरमुखहोयकोनदीमे अथवागुहामे स्नानकरना —

अन्यमत॥ ॥पुत्रजन्मनियज्ञेचनथासंक्रमणेरवेः॥राहोश्चदर्शनेकार्यंप्रशस्तंनान्यथानिशि॥४॥

टी० रात्रीमेस्नानकरनेकाकोई आचार्यनिषेधमानतेहै तो पुत्रजन्ममे यज्ञमे सूर्यसंक्रांतीमे ग्रहणमे इतनेस्थानमे रात्रीमे स्नानकरनाउत्तम अन्यथारात्रीस्नानमेनिषेधहै ऐसाआचार्यकहतेहै

अन्यमत॥ ॥दिवाचदाहृतंतोयंकृत्वास्वर्णयुतंनुतत्॥ रात्रौस्नानेतुसंप्राप्तेस्नायादनलसन्निधौ॥५॥

टी० दिनमेकूपसेजलउठायाहोय और रात्रीमे स्नानकरनेकाकामपडेतोजलसुवर्णयुक्तकरको अग्नीकेसमीपस्नानकरना —

अथनामकर्म

द्वादशेदिवसेवापिजन्मतोदिवसेशुभे॥ षोडशेविंशतौचैवद्वात्रिंशेवर्णतःक्रमात् ६

टी० आगेनामकर्मकोकालकहतेहै जन्मसे १२ दिनमेकरना अथवा शुभदिनमेकरना ब्राह्मणने १२ दिनमेकरना क्षत्रियमे १६ दिनमेकरना वैश्यने २० दिनमेकरना शूद्रने ३२ दिनमेकरना शुभ —

अन्यमत॥ ॥नामधेयंदशम्यांतुकेचिदिच्छंतिसूरयः॥अष्टादशेहनितथावदंत्यन्येमनीषिणः॥७॥

टी० कोईआचार्यकहतेहै नामकर्मदशमदिनमेकरना औरअन्यकहतेहैकि १८ दिनमेनामकरणशुभहोताहै —

नामकर्मणिनक्षत्रमाह

चरस्थिरमृदुक्षिप्रनक्षत्रेशुभवासरे॥

चन्द्रताराबलोपेते दिवसे च शिशोः पितुः ३

टी० चरनक्षत्रमे स्थिरनक्षत्रमे मृदुनक्षत्रमे क्षिप्रनक्षत्रमे शुभग्रहकेवारमे चंद्रकेबलमे ताराबलमे ताराशुद्धीमे पिताने पुत्रकानामकर्मकरनाशुभ—

अन्यमत॥ ॥पूर्वाण्हः श्रेष्ठ इत्युक्तो मध्यान्हो मध्यमः स्मृतः॥ अपराण्ह च रात्रिं च वर्जयेन्नामकर्मणि॥ ४॥

टी० नामकर्म प्रथमप्रहरमे शुभ द्वितीयप्रहरमे मध्यम तृतीयप्रहरमे और रात्री इसमे नामकर्म करना नही—

नामकर्मेषु दुष्टयोगाः॥ ॥सायान्हे दुष्टयोगे शुशनि भूमिज वारयोः॥ रिक्ता पर्वाष्टमी विष्टिः किंस्तुघ्नं तु विशेषतः॥५॥ एतैर्दोषैर्युते काले रात्रावपि न कारयेत्॥ ६॥ ७॥ ७॥ ७॥

टी० नामकर्मके दिन सायंकाल दुष्टयोग शनिवार मंगलवार रिक्तातिथी पर्व अष्टमी भद्रा किंस्तुघ्नकर्ण दिनमे इतने दोष युक्त काल होय तथापि रात्रीमे नामकर्म करना नही अशुभ—

अन्यमत॥ ॥शुभवारे च षड्वर्गे शुभानां नाम संपदे॥ राशयश्च स्थिराः श्रेष्ठा द्विस्वभावाश्शुभैर्युताः॥ ॥७॥ लग्नाद्व्याद्याष्टमे सर्वे न शुभा नामकर्मणि॥ ८॥

टी० शुभग्रहकेवारमे शुभग्रहके षड्वर्गमे और स्थिरराशीमे श्रेष्ठ द्विःस्वभावराशीमे शुभग्रह होयतो शुभ और लग्नसे द्वितीय एकादश अष्टम इसमे कोई ग्रह नही होयतो नामकर्ममे शुभ होता है—

अन्यमत॥ ॥एकादशेन्हि विप्राणां क्षत्रियाणां त्रयोदशे॥ वैश्यानां षोडशादिने मासांते शूद्र जन्मनः॥ ९॥

टी० ब्राह्मणको ११ दिन क्षत्रियको १३ दिन वैश्यको १६ दिन शूद्रको ३० दिनके अनंतर यथाक्रमसे नामकर्म चारोवर्णको उक्त है—

अन्यमत॥ ॥पुष्यार्केत्रयमैत्रभेतु मृगभे ज्येष्ठा धनिष्ठोत्तरादित्यास्वश्रुच नामकर्मे शुभदं योगे प्रशस्ते तिथौ॥ अन्हि द्वादशके तथान्यदिवसे शस्ते न चैकादशे

गोसिंहालिघटेषुत्स्यर्के बुधयोजीवेशशांकेपिच ॥ ११

टी० पुष्य हस्त चित्रा स्वाती अनुराधा मृग ज्येष्ठा धनिष्ठा उत्तरा३ पुनर्वसु इननक्षत्रोंमे नामकर्म शुभहोताहै शुभयोगमे शुभतिथीमे १२ दिन अथवा ११ दिन वृष सिंह वृश्चिक कुंभ इसलग्नमे शुभ रवि बुध गुरु चंद्रमा इनकेवारमे शुभ अथवा अन्यदिनमे करनाहोयतो पठित नक्षत्रमे करना तो शुभहोताहै—

मंचकारोहण॥ ॥शशितुरगधनिष्ठारेवतीपुष्यचित्रा शतभिषगनुराधात्र्युत्तरास्वातिहस्ताः॥बुधगुरुभृगुवारेसौम्यलग्ने भेकस्य निगदितमिहपूर्वैर्मंचकारोहणंतु १

टी० मृग अश्विनी धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शततारका अनुराधा तीनोउत्तरा३ स्वाती हस्त बुध गुरु शुक्र शुभग्रहके लग्नमे बालकको पलंगपर शयनकरावना शुभ—

दोलारोहण॥ ॥दोलारोहेऽर्कभात्पंचशरपंचेषु सप्तभैः॥नैरुज्यंमरणंकार्श्यंव्याधिःसौख्यंक्रमाच्छिशोः॥१

टी० बालकको पालनेमे देनेकाकाल सूर्यनक्षत्रसे प्रथम ५ नक्षत्रमे निरोगता नंतर ५ नक्षत्रमे मरण नंतर ५ नक्षत्रमे कृशता नंतर ५ नक्षत्रमे रोग नंतर ७ नक्षत्रमे सौख्य ऐसा दोलाचक्रमे जानना—



अन्यमत॥ ॥आंदोलशयनंपुंसांद्वादशेदिवसे शुभं॥त्रयोदशेतुकन्यायाननक्षत्रविचारणा॥२॥

टी० बालकको पालनेमे १२ दिनमे शुभ १३ दिन कन्याको पालनेमे शयन करावना नक्षत्रआदिकका विचार करनानही—

अन्यमत॥ ॥अभीष्टदिवसेपुण्येचंद्रेताराबलान्विते ॥योगशायिंहरिंध्यायन्प्राक्शीर्षविन्यसेच्छिशुं॥३

टी० शुभदिनमे चंद्रबल ताराबल सहित होय ऐसेदिनमे विष्णुका ध्यानकरको पूर्वकेतरफमस्तककरको पालनेमे शयनकरावना शुभहोताहै

जलपूजन॥ ॥कवीज्यास्तचैत्राधिमासेन पौषेजलं पूजयेत्सूतिकामासपूर्तौ॥बुधेंदूीज्यवारेविरिक्ते

नि यो हि स्र्क तीन्यादितीं हूर्के नैर्ऋत्यमैत्रैः॥१॥

टी० प्रसूतीकेनंतर १ माससे स्त्रीको जलपूजाकरावना बुध चंद्र गुरुइनकेवारमे श्रवण पुष्य पुनर्वसु मृगशिर हस्त मूल अनुराधा ऐसेशुभदिन करना परंतु शुक्र और गुरूका अस्त चैत्र अधिकमास पौष और रिक्ता तिथी इनका त्यागकरना शुभ —

दुग्धपानमुहूर्त्त॥ ॥एकत्रिंशद्दिनेचैवपयःशंखेनपाययेत्॥ अन्नप्राशननक्षत्रदिवसेदपराशिशुं॥१॥

टी० बालकको ३१ दिनमे अन्नप्राशनकेनक्षत्रमे जिसलग्नमेसूर्योदयहोयउसलग्नमे शंखसे दूधपिपावना शुभहोनाहै —

तांबूलभक्षण॥ ॥सार्द्धमास द्वये दद्यात्तांबूलंप्रथमंशिशोः॥ कर्पूरादिकसंमिश्रं विलासायहितायच॥१॥ मूलेन्दुचित्रांत्यतिष्यहरींद्रभेषुपौष्णेतथा मृगशिरेदितिवासरेषु॥ अर्केन्दुजीवभृगुबोधनवासरेषुतांबूलभक्षणविधिर्मुनिभिः प्रदिष्टः॥२॥ ॥

टी० बालकको प्रथमतांबूल २॥ महिनेमे कर्पूरादियुक्तकरके सुखसौख्य हितकेवास्ते देना पर मूल चित्रा हस्त पुष्य श्रवण ज्येष्ठा रेवती मृग पुनर्वसु रवि चन्द्र गुरु शुक्र बुध ऐसे शुभयोगमे बालकको तांबूलभक्षणकरावना ऐसा आचार्य कहतेहै —

सूर्यावलोकन॥ ॥हस्तः पुष्यपुनर्वसू हरियुगं मैत्रत्रयं रोहिणी रेवत्युत्तरफाल्गुनी मृगयुता षाढोत्तरा स्वातिभे॥ मासोतुर्ये तृतीयकौशनिकुजौत्यक्त्वा चरिक्तातिथिं सिंहादित्रयकुंभराशिसहितं निष्कासनं संस्थिते॥१॥

टी० हस्त पुष्य पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा मूल रोहिणी रेवती उत्तराफाल्गुनी मृग उत्तराषाढा स्वाती चतुर्थ तृतीयमहिना सिंह कन्या तुला कुंभ यह राशीके चंद्रमामे बालकको सूर्यावलोकन करावना परंतु शनि मंगल रिक्तातिथी ४।९।१४ का त्याग करना —

भूम्युपवेशन॥ पंचमेचतथामासि भूमौतमुपवेशयेत्॥ तत्रसर्वे ग्रहाः शस्ता भौमोप्यत्रविशेषतः॥१॥

उत्तरात्रितयंसौम्यं पुष्यर्क्षं शक्रदैवतं ॥ प्राजाप
त्यंचहस्तंचशस्तमाश्विनसौख्यदं ॥ २ ॥ ७ ॥

टी० पंचममासमेबालककोभूमीपरबैठावना वहकालमेसबग्रहशु
भहोयपरंतु मंगल विशेषकरकोबलवानहोय तीनोउत्तरा मृगपुष्य ज्ये
ष्ठा रोहिणी हस्त यहनक्षत्रशुभ और आश्विनमेकरनासुखदायकहोताहै

भूमिशोधन॥ ॥भूभागमुपलिप्याथकृत्वातत्र
तुमंडलम्॥ शंखपुण्याहशब्देनभूमौनमुपवेश
येत्॥ ३॥ वराहंपूजयेद्देवंपृथिवींचेतथाद्विजं॥
पूजनंपूर्वकंचात्रगुरुदेवद्विजन्मनां॥ ४ ॥ ७ ॥

टी० भूमी शुद्ध लीपना उसपर मंडलादिकशोभाकरना शंख बजाव
ना और भी नानाप्रकारकेवाद्यबजावना वाराहका पूजाकरना भू
मीका पूजाकरना ब्राह्मणकापूजाकरना गुरुदेव यहसबकी पू
जाकरके नंतरबालककोभूमीपर बैठावना शुभ—

प्रार्थनामंत्र॥ ॥मंत्रास्त्वात्रभवंतीमेतन्मेनिगदतः
शृणु॥ रक्षैनंवसुधेदेविसदासर्वगतंशुभे॥ ५॥ ॥

टी० भूमीपरबैठावनेकेसमयमे भूमीकीप्रार्थना स्वकुलाचारोक्तकरना
हे भूमियहबालककोसंरक्षणकरो औरसुखकोकरो ऐसीप्रार्थनाकरना·

तस्मिन्कालेस्थापयेत्तत्पुरस्ताद्वस्त्रंशस्त्रंपुस्तकंलेखनींच
॥ स्वर्णंरूप्यंयच्चगृह्णातिबालस्तैराजीवैस्तस्यवृत्तिःप्रदिष्टा ७

टी० उसकालमेबालककेआगेवस्त्रशस्त्रपुस्तकलेखनी सुवर्णरूपास्था
पनकरना जो पदार्थबालकग्रहणकरे वहवृत्तीसेजीवनहोयपहजानना·

कर्णवेध॥ ॥रोहिण्युत्तरमूलमैत्रमृगभेविष्णुत्र
येर्कत्रयेरेवत्यांचपुनर्वसुद्वयभगेकर्णस्यवेधःशु
भः॥ मीनेस्त्रीधनुमन्मथेषुचघटेवर्षेविपुग्मेतिथौ
सौम्येचेंदुगुरौरवौचशयनंत्यक्त्वाचविष्णोर्बुधैः॥ १॥

टी० रोहिणी उत्तरा मूल अनुराधा मृग श्रवण धनिष्ठा शततारका ह
स्त चित्रा स्वाती रेवती पुष्य पुनर्वसु पूर्वा इसनक्षत्रमे मीनकन्याध
न मिथुन कुंभ इसलग्नमे विषम वर्षमे विषमतिथीमे बुध चंद्र गुरु

रवि इनके वारमे बालकका कानछेदना शुभ परंतु निष्युग्मन कहिये बालु (शास्यकाला गकरना

अन्यमत॥ शुक्लपक्षेशुभेवारे चैत्रेपौषफाल्गु
ने॥ एकादश्यष्टमीपर्वरिक्तावर्ज्याशुभावहाः॥२॥

टी॰ शुक्लपक्षमे शुभवारमे चैत्र पौष फाल्गुन इन्हमे कर्णवेधकर
नाशुभ एकादशी अष्टमी पर्वरिक्तातिथी इनका कर्णवेधमेत्यागकरना

अन्यमत॥ ॥शिशोरजातदंतस्य मातुरुत्संगसर्पि
णः॥ सौचिकोवेधयेत्कर्णौ सूच्या हिरण्यसूत्रया ३

टी॰ दंतरहित बालकका कर्णछेद माताने गोदमेलेके सोनारसे
सुईसे दूना सूत्र लेके कर्णछेद करना शुभहै॰ —

अन्यमत॥ ॥मंदार्कारांशावाराः स्युर्वर्ज्याः कर्णस्य
वेधने॥ गुरुशुक्रेंदुजेवारे पूज्यावारांशकोदयात्॥४॥

टी॰ शनि रवि मंगल यहवारहोय वा इनके अंशहोयतो कर्णवेधमेवर्ज्य
जानना गुरु शुक्र बुध इनकेवारहोयवा इनके अंशहोयतो कर्णवेधकरनाशु (भ

अन्यमत॥ ॥शातकुंभमयीसूचीवेधनेतुशुभप्रदा
॥ राजतीचायसीवापियथाविभवतः शुभाः॥५॥॥

टी॰ सुवर्णके सुईसे कानछेदनाशुभ अथवा चांदीकी वा लोहेकी वा
जैसी शक्तिहोय वैसी करनाशुभ॰ —

अन्यमत॥ ॥सुभूमौप्रांतरेरम्येशुचौदेशेंबरेर
वौ॥ संस्थितेवेधयेत्कर्णौस्त्रीपुंसोर्वामदक्षिणौ॥६॥

टी॰ जनमभूमीमेवा रमणीयस्थानमेपवित्रनासेरूमशुद्धीमे १० स्थानमे
सूर्यहोयऐसेकालमेपुरुषका दक्षिणकर्णस्त्रीका वामकर्णछेदनाशुभ॰

अन्यमत॥ ॥शुक्लसूत्रसमायुक्तनाग्रसूच्याथवे
धयेत्॥ वेधात्तृतीयनक्षत्रे क्षालयेदुष्णवारिणा॥७॥

टी॰ सफेदसूतपोतावेकी सुईसेकर्णवेधकरना परंतु जिसनक्षत्रमे
वेधकियाहोय उससे तीसरे नक्षत्रमे गरमजलसेधोनाशुभ॰ —

कटिसूत्रबंधन॥ ॥अब्देनसौरेणशिशोःसमाने बालस्तुसंस्नाप्य
चजन्मधिष्ण्ये॥ कृत्वापुण्याहिकरंचकर्मतं धारयेच्छ्रीनसुवर्णसूत्रं

टी॰ बालककोसंक्रांतिमानसे एकवर्षमे उत्तमस्थान करावना और आ

पुष्यकीवृद्धीहोयऐसाशांतिकर्मकरकोजन्मनक्षत्रमे सुवर्णयुक्त कृ
तिसूत्रकंबरमेबांधना शुभ —

अथान्नप्राशन॥ ॥पूर्वार्द्राभरणीभुजंगवरुणंत्व
ष्ट्राकुजार्कीतथानंदापर्वचसप्तमीमपितथारिक्ताम
पिद्वादशीं॥षष्ठेमास्यथवान्नभक्षणविधिस्त्रीणामयु
क्पंचमेगोकन्याझषमन्मथेबुधबलेपक्षेचयोगेशुभे १

टी॰ पूर्वा ३ आर्द्रा भरणी आश्लेषा शततारका मंगल शनि नंदातिथि
पर्व सप्तमी रिक्तातिथि द्वादशी इतनेकात्यागकरना और पुत्रको
षष्ठमासमे अथवा अष्टममासमे कन्याको पंचम महिनेमे अथवा
विषममासमे वृषकन्या मीन मिथुन इसलग्नमे शुक्लपक्षमे शुभयो
गमे बालकको अन्नप्राशनकरावना —

अन्यमत॥ ॥जन्मर्क्षेश्रीक्षयंविंद्यात्कर्मर्क्षेचातिसौख्य
कृत्॥आधानर्क्षेचबालानांजायतेरोगनाशनम्॥२॥

टी॰ जन्मलग्नमे अन्नप्राशन करावनेसो लक्ष्मीक्षयजानना कदा
चित् दशमलग्नमे अन्नप्राशनहोयतो सुखकारक होय कदाचित
गर्भाधानलग्नमे होयतो रोगादिकनाशहोनाहै —

चौल॥ ॥रेवत्याश्वकरत्रयादितिमृगज्येष्ठासुविष्णुत्रये
पुष्येचोत्तरगेरवौगुरुकवींदुज्ञेषुपक्षेसितौ॥गोस्त्री
मन्मथचापकुंभमकरंहित्वाचरिक्तातिथिंषष्ठीपर्व
तथाष्टमीमपिसिनीवालींचचूडांशुभाम्॥१॥

टी॰ रेवती अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु मृग ज्येष्ठा श्रवण
धनिष्ठा शततारका पुष्य यहनक्षत्रोंमे उत्तरायण सूर्यमे गुरु शुक्र
चंद्र बुध इनके वारमे शुक्लपक्षमे चौलकरना शुभ और वृष कन्या
मिथुन धन कुंभमकर इसलग्नोंको त्यागकरना रिक्तातिथी षष्ठी पर्व
अष्टमी अमावास्या यह चूडाकर्ममेत्यागकरना —

अन्यमत॥ ॥जन्मतस्तुतृतीयेब्दे श्रेष्ठमिच्छंतिपंडि
ताः॥ पंचमेसप्तमेवापिजन्मतो मध्यमंभवेत्॥२॥

टी॰ कोई आचार्य कहतेहै कि तृतीयवर्षमे चौल श्रेष्ठ पंचम और

सप्तमवर्षमे मध्यमहोताहै ऐसाजानना—

चौलवारपरत्वे॥ ॥पापग्रहाणांवारादौविप्राणांशुभदं
रवेः॥क्षत्रियाणांधरासूनोर्विट्शूद्राणांशनेःशुभं॥३॥

टी॰ पापग्रहोंकेवारोंमेरविवार चह्णब्राह्मणको शुभ क्षत्रियको मंगल शुभ वैश्यऔर शूद्रइनकोशनिवारको चौल शुभजानना—

अन्यमत॥ ॥सूनोर्मातरिगर्भिण्यांचूडाकर्मनकारये
त्॥पंचाब्दात्प्रागथोर्ध्वंतुगर्भिण्यामपिकारयेत्॥४॥

टी॰ पुत्रकी माता गर्भिणीहोयतो चौलकरनानही परंतु पंचमवर्षके नंतर गर्भिणी होयतोभी करना शुभ·

विद्यारंभः॥ ॥रेवत्यांमृगपंचमेहरियुगेपूर्वासुहस्तत्र
येमूलेश्वेअभिजिच्चभानुभृगुजेसौम्येधनुर्जीवयोः॥अ
ब्देपंचमकेविहायनिखिलानध्यायषष्ठीयुतान्रिक्ता
सौम्यदिनेलथैवविबुधैःप्रोक्तोमुहूर्तःशुभः॥१॥ ७॥

टी॰ रेवती मृग आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा श्रवण धनिष्ठा पूर्वा हस्त चित्रा स्वाती मूल अश्विनी अभिजित् रवि शुक्र बुध गुरु इनके वारमे पंचम वर्षमे शुभदिनमे विद्यारंभकरना परंतु संपूर्णअनध्यायका त्यागकरना षष्ठी रिक्तातिथी इनकात्यागकरना—

अन्यमत॥ ॥अक्षरस्वीकृतिःप्रोक्ताप्राप्तेपंचमहाय
ने॥उत्तरायणगेसूर्येकुंभमासंविवर्जयेत्॥२॥

टी॰अक्षरग्रहणपंचमवर्षमेकरनाउत्तरायणसूर्यमेशुभ कुंभस्थसूर्यकात्याग करना

अन्यमत॥ ॥विद्यारंभेगुरुःश्रेष्ठोमध्यमौभृगुभास्क
रौ॥मरणंशनिभौमाभ्यामविद्याबुधचंद्रयोः॥३॥

टी॰ विद्यारंभ गुरुवारको शुभ शुक्ररवि इनमें मध्यम शनि मंगल इनमे मरण बुध और चंद्रमामे विद्याहीन ऐसाजानना—

मौंजीबंधनमुहूर्त॥ ॥पूर्वाषाढहरित्रयेश्विमृगभेह
स्तत्रयेरेवतीज्येष्ठापुष्यभगेषुचोत्तरगतेभानौचपक्षेसि
ते॥गोमीनप्रमदाधनुर्वृषनचरेशुक्रेकेजीवेतिथौपंच
म्यांदशमीत्रयेप्रतिपदश्रेष्ठंद्विजन्मद्रूये ॥१॥७॥

टी॰ पूर्वाषाढा श्रवण धनिष्ठा शततारका अश्विनी मृग हस्त चित्रा स्वाती रेवती ज्येष्ठा पुष्य पूर्वाफाल्गुनी यह नक्षत्र उत्तरायण सूर्य शुक्लपक्ष वृष मीन कन्या धन सिंह इसलग्नमे शुक्रवार रविवार गुरुवार पंचमी दशमी एकादशी द्वादशी प्रदोष वर्जित ऐसे शुभमुहूर्त्तमेब्राह्मणने मौंजीबंधनकरना शुभ॰

अन्यमत॥ ॥ब्रह्मवर्चसकामस्यकार्यंविप्रस्यपंचमे॥राज्ञोबलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येवार्थिनोष्टमे॥२॥

टी॰ ब्राह्मणको नपोबलकी इच्छा होयतो ५ वर्षमे मौंजी बंधनकरना क्षत्रियको बलकी इच्छा होयतो ६ वर्षमेकरना वैश्यको धनकी इच्छाहोयतो ८ वर्षमेकरना शुभ

अन्यमत॥ विप्राणामुपनयनंवसंतसमयेधराधिनाथानां ॥ग्रीष्मेर्तौ शरदिविशांमासाःसाधारणाश्चमाघाद्याः॥३॥

टी॰ ब्राह्मणने वसंतऋतूमे मौंजीबंधन करना क्षत्रियने ग्रीष्मऋतूमे करना वैश्यने शरदृतूमे करना माघादिकमासमे करना शुभ॰

वर्षसंख्या॥ ॥गर्भाष्टमेष्टमेवाब्देपंचमेसप्तमेपिवा ॥द्विजत्वंप्राप्नुयाद्विप्रोवर्षेत्वेकादशेनृपः॥४॥ ७ ॥

टी॰ ब्राह्मणको गर्भसे ८ वर्षमे अथवाजन्मसे ८ वर्षमेवा पंचममेवा सप्तमवर्षमे जनेउ ब्राह्मणकोउक्त है और ११ वर्षमेक्षत्रियकोउक्त जानना —

मौंजीबंधननक्षत्र॥ ॥वेदक्रमाच्छशिशिवाहिकरत्रिमूलपूर्वासुपौष्णाकरमैत्रमृगादितीज्ये॥ध्रौवेषुचाश्विवसुपुष्यकरोत्तरेशकर्णे मृगांत्यलघुमैत्रधनादितौसत॥५॥

टी॰ चारोवेदपरत्वसे मौंजी बंधननक्षत्रलिखेहुये चक्रपरसेस्पष्टदेखना॥

वेदपरत्वेनक्षत्रचक्र

ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद
मृग	रेवती	अश्विनी	मृग
आर्द्रा	हस्त	धनिष्ठा	रेवती
आश्लेषा	अनुरा	पुष्य	हस्त
हस्त	मृग	हस्त	अश्विनी
चित्रा	पुनर्वसु	उत्तरा	पुष्य
स्वाती	पुष्य	आर्द्रा	अनुराध
मूल	उत्तरा	श्रवण॰	धनिष्ठा
पूर्वाषा	रोहिणी	०	पुनर्वसु

वर्ज्यनक्षत्र

मघाचभरणीज्येष्ठाविशाखा
चैवकृत्तिका॥नक्षत्रपंचकंप्रा
ज्ञैर्नग्राह्यंव्रतबंधने॥६॥

टी॰ मघा भरणी ज्येष्ठा विशाखा कृत्तिका यह ५ नक्षत्र मौंजीबंधनमे त्यागकरना शुभ॰ —

राजसेवी वैश्यवृत्तिः शास्त्रवृत्तिश्च पाठकः॥
प्राज्ञोऽर्थवान् म्लेच्छसेवी केंद्रे सूर्यादिखेचरैः॥७॥

टी० केन्द्रमे सूर्य होयतो राजसेवी चंद्रमा होयतो वैश्यकाकामकरे मंगल होयतो शस्त्रसेजीवन बुध होयतो पठनकरे गुरु होयतो बहुत बुद्धिवान् शुक्र होयतो धनयुक्त शनी होयतो नीचकी सेवाकरे ऐसा जानना.

मौंजीमेलग्नशुद्धि॥ ॥चंद्रः क्रूरा विलग्ने शशिसिततनुपाः षष्ठगे हे सितोऽस्ये सर्वे रंध्रे वदुर्भाः क्वचतनुगइनः श्रेष्ठ उच्चेंदुरेके॥ विद्यां मौंज्युक्तकाले स्थिरचरहरिजश्रुत्तर ब्राह्म्यहीने मौंज्या ऊर्ध्वं गणेशं गिरमपि विधिवत्पूजयित्वाऽऽरभेत॥७॥

टी० मौंजी मेलग्नशुद्धी देखनेका प्रकार चंद्र क्रूर ग्रह लग्नमे नहोय चंद्र शुक्र लग्नपती यह ६ स्थानमेनहोय शुक्र १२ स्थानमे नहोय ८ स्थानमे कोई ग्रह नहोय कोई आचार्य कहते हैंकि लग्नमे सूर्य श्रेष्ठ कोई कहते हैंकि उच्चका चंद्रमा लग्नमे श्रेष्ठ ऐसे लग्न शुद्धीमे मौंजी शुभ जो काल मौंजीमे कथन किया उसमे विद्याका आरंभ करना स्थिर नक्षत्र चर नक्षत्र श्रवण तीनो उत्तरा रोहिणी इनका त्याग करना मौंजीके अंतर गणेशका सरस्वतीका विधीसे पूजा करके आरंभ करना शुभ —

अन्यमत॥ ॥शुद्धिर्न विद्यते यस्य वर्षे प्राप्तेऽष्टमे यदि॥ चैत्रे मीनगते भानौ तस्योपनयनं शुभम्॥८॥

टी० बालकको अष्टमवर्ष प्राप्त भया और मौंजीको काल शुद्धि न होयतो चैत्रमे मीनके सूर्यमे करना शुभ —

अन्यमत॥ ॥वर्णाधिपे बलोपेते उपनीतक्रिया हिता॥ सर्वेषां च गुरौ सूर्ये चंद्रे च बलशालिनि॥९॥

टी० वर्णपति बलवान् होयतो मौंजी बंधन श्रेष्ठ सबको गुरुबल सूर्यबल चंद्रबल होयतो करना शुभ.

अन्यमत॥ ॥शुभदो बलवान् भानुर्लग्नगो दशमस्तथा॥ सर्वशाखाधिपो यस्मात्तेषां व्रतबंधने १०

टी० सूर्य बलवान् लग्नमे १० स्थानमे होयतो शुभ सब शाखाका अधिपती सूर्य है इसकारते १।१० होयतो व्रतबंध करना शुभ —

गुरुबल॥ ॥ झषचापकुलीरस्थोजीवोप्यशुभो वरः॥अतिशोभनताद्द्याद्विवाहोपनयादिषु॥११॥
टी॰ मीन धन कर्क इस राशीका गुरु अशुभहोय तथापि विवाह और मौंजी इसमे बहुत शुभजानना·—

गलग्रहयोगः॥ ॥त्रयोदश्यादिचत्वारिसप्तम्यादिदिन त्रयम्॥चतुर्थीकृष्णपक्षस्य अष्टावेतेगलग्रहाः॥१२॥
टी॰ त्रयोदशी चतुर्दशी पौर्णिमा अमावास्या प्रतिपदा सप्तमी अष्टमी नवमीकृष्णपक्षकीचतुर्थीयहआठतिथीको गलग्रह संज्ञा सोशुभकर्ममेत्यागकरना

शूद्राणांव्रतबंधसंस्कारमाह॥ ॥मूलार्द्राश्रवणद्विदैवत सुभेपुष्येतथाचाश्विभेरेवत्यांमृगरोहिणीदितिकरेमैत्रेत थावारुणे॥चित्रास्वातिमघोत्तराभृगुसुतेभौमेतथाचांद्रजे शूद्राणांतुबुधैः शुभंहिकथितंसंस्कारकर्मोत्तमम्॥१३॥
टी॰ मूलआर्द्रा श्रवण विशाखा धनिष्ठा पुष्य अश्विनी रेवती मृगरोहिणी पुनर्वसु हस्त अनुराधा शततारका चित्रा स्वाती तीनोउत्तरा३यहनक्षत्रोंमे और शुक्र मंगल बुध यह वारोमे शूद्रको संस्कार करना शुभ·—

अन्यमत॥ ॥शूद्राणांराजपुत्राणां मौंज्यभावेस्त्र बंधनं॥मौंजीबंधोक्ततिथ्यादौकार्यंभौमदिनंविना॥१४॥
टी॰ राजपुत्रको शूद्रको मौंजी बंधन केस्थानमेशस्त्र बंधनकरावना परंतु मौंजी बंधनमे तिथी वार नक्षत्र जोकहाहै उसमे करना परंतु मंगलवारका त्यागकरना यह शुभ·—

अन्यमत॥ ॥जीवेशुक्रेचभूपुत्रेचंद्रताराबलान्विते॥मौंजीबंधर्क्षतिथिषुकुजवर्जितवासरे॥१५॥॥
टी॰ गुरुवार शुक्रवार मंगलवार चंद्रबल ताराबल मेंमौंजी बंधनमे जो नक्षत्र तिथीवार जोकहाहै उसमे शूद्रको संस्कारकरना शुभ- परंतु मंगलवारकात्यागकरना शुभ·

अन्यमत॥ ॥केशांतंषोडशेवर्षेब्राह्मणस्यविधीयते॥राजन्यबंधोर्द्वाविंशेवैश्यस्यद्व्यधिकेततः॥१६॥
टी॰ केशांत कहिये दाढीबनावना ब्राह्मणने१६वर्षमे राजाने२२ वर्ष

मे वैश्यने २४ वर्षमे करना — शुभ —

विवाहप्रकर्ण

तत्रादौ दैवज्ञपूजन॥ ॥ दैवज्ञं पूजयेदादौ फलतांबूलपूर्वकं॥ निवेदयेत्सुमनसा स्वकन्योद्वाहनादिकं॥ १

टी० प्रथमसे ज्योतिषीकी यथाशक्ति फलतांबूल पूर्वक पूजा करनानंतर पिताने कन्याके विवाहका शुभाशुभ प्रश्न करना —

विवाहप्रश्नमाह॥ ॥ विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ नतु गृहं बलिनौ यदि पश्यतः॥ स्वयुवतीवरलाभमिमौ यदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ॥ २॥

टी० प्रश्नकालमे चंद्र शुक्र यह विषमराशीमे वा अंशमे होय और दूनो बली होयके लग्नको देखे तो कन्याको पतीप्राप्ति और समराशीमे वो अंशमे चंद्र शुक्र होयतो पुरुषको स्त्रीप्राप्ति कहना शुभ —

प्रश्नसमये अशुभानि॥ ॥ प्रश्नर्विलग्नात्सबलः शशांकः शत्रुस्थितो मृत्युगृहस्थितो वा॥ ययष्टमाब्दात्सरतो विवाहात्करोति मृत्युं वरकन्ययोश्च॥ ३॥

टी० प्रश्नलग्नसे बलवान् चंद्रमा षष्ठ अथवा अष्टमस्थानमे होयतो विवाहसे अष्टमवर्षमे दूनो स्त्री पुरुषको अरिष्ट जानना

अन्ययोगाः॥ ॥ यद्युदयस्थश्चंद्रस्तस्माद्यदि सप्तमो भवेद्भौमः॥ समाष्टकं स जीवति विवाहकालात्परं पुरुषः॥ ४॥

टी० प्रश्नलग्नमे चंद्रमा होय और चंद्रमासे सप्तमस्थानमे मंगल होयतो विवाहसे अष्टमवर्षमे पतीको अरिष्ट जानना —

अन्ययोगाः॥ ॥ स्वनीचगः शत्रुदृष्टः पापः पंचमगो यदा॥ मृतपुत्रां करोत्येव कुलटां वा न संशयः॥ ५॥

टी० प्रश्नकालमे पापग्रह अपने नीचस्थानमे होय अथवा शत्रुग्रहदेखनेहोय वा पापग्रह पंचमस्थानमे होयतो संतानका नाश और वेश्या होय ऐसा जानना

प्रश्नसमये शुभान्याह॥ ॥ मिथुनमिथुनदस्कुंभः शयनासनपादुकासुभंगो वा॥ प्रश्नसमये पि यस्यास्तस्या वै धन्यमादेश्य॥ ६॥

टी० विवाहप्रश्नकालमे अकस्मात् जलकुंभका भंगहोय अथवा निद्रानाश आसनभंग पादुकाभंग ऐसाजिसकन्याकेविवाहप्रश्नसमयमेहोयउस्कोविधवायोग जानना·

स्त्रीणांकुयोगाः॥ ॥मूलजाच गुणंहंतिव्यालजाकुलटांगना॥विशाखजादेवरघ्नीज्येष्ठजाज्येष्ठनाशका॥७

टी० कन्या जन्म मूलनक्षत्रमे होयतो गुणनाश आश्लेषा नक्षत्रमे होयतो वेश्याहोय विशाखामे होयतो पतीकेछोटे भाईका नाश ज्येष्ठा नक्षत्रमेहोयतोपतीके बडे भाईकानाशजानना· —

अन्यमत॥ ॥अज्येष्ठाकन्यकायत्रज्येष्ठपुत्रोवरोयदि॥व्यत्ययोवातयोस्तत्रज्येष्ठोमासःशुभप्रदः॥८॥

टी० कन्याज्येष्ठनहोयपुरुषज्येष्ठहोयऐसादूनोकाभेदहोयतोज्येष्ठमासमेकरना शुभ

वर्षप्रमाणमाह॥ षडब्दमध्येनोद्वाह्याकन्यावर्षद्वयंततः॥सोमोभुंक्तेततस्तद्वद्गंधर्वश्चतथानलः॥९॥

टी० प्रथम ६ वर्ष कन्याका विवाह करनानही कारण प्रथम २ वर्ष चंद्रमा भोगकरताहै नंतर दो वर्ष गंधर्व भोग करतेहै नंतर दोवर्ष अग्नी भोगकरताहै नंतर विवाहको शुद्धजानना· —

वर्षप्रमाण॥ ॥अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षातुरोहिणी॥दशवर्षाभवेत्कन्याद्वादशेवृषलीमता॥१०॥गौरीदानान्नागलोकंवैकुंठंरोहिणीदद‌त्॥कन्यादानाद्ब्रह्मलोकंरौरवंतुरजस्वला॥११॥ छ॥

टी० आठ ८ वर्षकी कन्याहोयतबउस्का नाम गौरी नववर्षकी होयतब रोहिणीनाम दसवर्षकी होयतब कन्या उस्कानाम बार वर्षकी होयतबवृषली नामजानना इसकाफल गौरीदानसेनागलोकप्राप्ती रोहिणीदानसे वैकुंठप्राप्ति कन्यादानसे ब्रह्मलोकप्राप्ती वृषलीदानसे घोरनरकप्राप्ती ऐसा यहदानफल जानना· —

अन्यमत॥ ॥विवाहोजन्मतःस्त्रीणांयुग्मेब्देपुत्रपौत्रदः॥अयुग्मश्रीप्रदंपुंसांविपरीतेतुमृत्युदः॥१२

टी० स्त्रीको विवाहकालजन्मसे समवर्षमे करनातोपुत्रपौत्रप्राप्ती उ पुरुषकोजन्मसेविषमवर्षमे विवाह होयतो लक्ष्मीप्राप्ती इस्से विपरीत

होयतो मृत्युप्राप्तीजानना.—

अन्यमत॥ ॥कन्याद्वादशवर्षाणि यामदत्तावसेद्गृ
हे॥ब्रह्महत्यापितुस्तस्याः साकन्यावरयेत्स्वयं॥१३॥

टी॰ कन्या बार १२ वर्षकी होय और पिताके घरमे रहे तो पिताको ब्रह्महत्या प्राप्तहोतीहै अनंतर कन्याने अपने इच्छासे पतीकरना ऐसा आचार्य कहते हैं

मंगलविचार॥ ॥लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे॥पत्नीहंति स्वभर्तारं भर्तुर्भार्याविनाशयेत्॥१४

टी॰ स्त्रीको वा पुरुषको मंगल रहनाहै तिस्का प्रकार १।१२।४।७।८ इतनेस्थानमे मंगलहोयतो स्त्री मंगली कहावतीहै तो मंगलसे मंगलहोयतो करना अथवा पुरुषके ग्रह बलवान होयतो करना शुभ—

भौमपरिहार॥ ॥अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे॥ नक्रे द्वादशके चैव भौमदोषो न विद्यते॥१५॥

टी॰ स्त्रीको वा पुरुषके ४।७।८।१२ इतनेस्थानमे शनी होयतो मंगलका दोष नही ऐसा जानना—

ज्येष्ठविचार॥ ॥मूलज्येष्ठोयज्येष्ठोवा ज्येष्ठा वा कन्ज्येष्ठः शुभावहः॥ज्येष्ठत्रयं न कुर्वीत विवाहे सर्वसंमतं॥१६

टी॰ पुरुषज्येष्ठ वा कन्याज्येष्ठ होय अथवा ज्येष्ठ मास होय ऐसा कोई २ ज्येष्ठमे करना अथवा १ एक ज्येष्ठमे करना शुभ और पुरुषज्येष्ठ १ स्त्रीज्येष्ठ मासज्येष्ठ ऐसा तीनो ज्येष्ठ होयतो विवाह करना नही—

अन्यमत॥ ॥ज्येष्ठायाः कन्यकायाश्च ज्येष्ठपुत्रस्यैव मिथः॥विवाहो नैव कर्त्तव्यो यदि स्याद्विधनं तयोः १७

टी॰ प्रथम गर्भमे जो होय उस्को ज्येष्ठ कहना सो पुरुष ज्येष्ठ होय और कन्याभी ज्येष्ठ होयतो करना नही दुःखदायक होताहै

अन्यमत॥ ॥दशवर्षव्यतिक्रांता कन्या शुद्धिविवर्जिता॥तस्यास्तारेंदुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥१८॥

टी॰ दशवर्षके अनंतर कन्या शुद्धीसे रहित होतीहै तो तारा शुद्धी चंद्रशुद्धी लग्नशुद्धी देखके विवाह करना शुभ—

कन्यालक्षणमाह॥ ॥हंसस्वरां मेघवर्णां मधुपिंगल

लोचनां॥ तादृशीं वरयेत्कन्यां गृहस्थः सुखमेधते १८
टी० स्त्रीलक्षण स्त्रीका बोलना हंसके ऐसा होय मेघके ऐसा वर्ण होय नेत्रका वर्ण सहतके ऐसा होय वा पिंगल कहिये कुछ सफेद कुछ काला होय ऐसे कन्यासे विवाह करे तो गृहस्थ सुख पावना है ऐसा जानना —

वरलक्षणमाह॥ ॥जातिविद्यावयःशीलमारोग्यं बहुपक्षता॥ अर्थित्वं वित्तसंपत्तिरष्टावेते वरे गुणाः॥१९
टी० पुरुषलक्षण जातीमे उत्तम होय विद्यायुक्त होय वयमे वृद्ध न होय स्वभाव अच्छा होय निरोगी होय परिवार बहुत होय स्त्रीकी इच्छा होय द्रव्य संपती होय ऐसा आठ लक्षणसे युक्त वर होय पतो कन्या देना —

वरदोषमाह॥ ॥दूरस्थानामविद्यानां मोक्षधर्मानुवर्तिनां॥ शूराणां निर्धनानां च न देया कन्यका बुधैः॥२०॥
टी० पुरुषके दोष दूर रहनेवालेको कन्या देना नही मूर्खको देना नही १ मोक्षधर्म जो योगभ्यासादिक करे उसको देना नही शूरको देना नही १ दरिद्रीको देना नही ऐसा पंडित लोक कहते हैं —

वर्णाद्यष्टगुणनाम॥ ॥वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकं॥ गणमैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः २१
टी० वर्णसेलेको नाडीतक गुणके ज्ञानके वास्ते यथाक्रमसे चक्रमे स्पष्ट देखना

वर्ण	वश्य	तारा	योनि
१	२	३	४
ग्रहमै०	गणमै	भकूट	नाडी
५	६	७	८

वर्ण॥ मीनालिकर्कटा विप्रा नृपाः सिंहाजधन्विनः॥ कन्यानक्रवृषा वैश्याः शूद्रा युग्मतुलाघटाः २२
टी० ब्राह्मणादिक वर्णज्ञानके वास्ते चक्रमे लिखे परसे चारो वर्ण जानना —

वर्णज्ञानार्थचक्रम्॥

ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
मीन	मेष	वृषभ	मिथुन
वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ
कर्क	सिंह	कन्या	तुला

वश्य॥ ॥द्विपदा चाप घट कन्यका तुला मान वा अजवृषो चतुष्पदाः॥ कर्कमीनमकरा जलोद्भवा केसरी वनचरालिकीटकाः॥२३॥
टी० बारहो राशीमे मनुष्य चतुष्पद जलचर वनचर इसका ज्ञान लिखे चक्रपरसे मालूम होगा —

मानव	चतुष्पद	जलचर	वनचर
मिथुन	मेष	कर्क	सिंह
धन	वृषभ	मीन	०
कुंभ	०	मकर	वृश्चिक
कन्या	०	०	वृश्चिक
तुला	०	०	०

वश्यावश्यमाह॥

हित्वा मृगेंद्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्च भक्ष्याः॥ सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत्॥२४॥

टी० सिंहको छोड़कर मनुष्यको सब चतुष्पद वश्य हैं और मनुष्यके जलचर भक्ष्य हैं और सिंहको वृश्चिक छोड़के सब वश्य है शेष लोकव्यवहारसे वश्य और भक्ष्य इनका विचार करके करना योग्य है॥

तारावल॥ ॥कन्यर्क्षाद्वरभं यावत्कन्याभं वरभादपि॥ गणयेन्नवभिः शेषे त्रिपञ्चसप्तभमसत्स्मृतम्॥२५॥

टी० कन्याके नक्षत्रसे वरनक्षत्र तक गिनना जो अंक होवे सो ९ का भाग देना शेष ३ पंचम ५ सप्तम ७ आवे तो अशुभ जानना कदाचित् वरसे गिने तो भी शेष आवे तो वरसे भाग देना ऐसा ही वरके नक्षत्रसे कन्याका नक्षत्र गिनके पूर्वोक्त क्रमसे जानना॥

१	५	७	१२	१४	१९
२७	२५	२४	०	०	०

वरनक्षत्रसे लिखे अंक में दोष कन्यासे भी ऐसे ही कन्याके नक्षत्रसे भी दोष कुछ कथित है सो जानना॥

योनि॥ ॥अश्वेभमेषसर्पौ सर्पश्वानौ बिडालकाः॥ मेषो बिडालकश्चैव मूषको मूषकश्च गौः॥२६॥ महिषी च न तो व्याघ्रो महिषो व्याघ्रकं कमात्॥ मृगो मृगश्च श्वा च कपिर्नकुलश्च॥२७॥ नकुलो वानरः सिंहोऽश्वो मृगराट् पशुः॥ अथो देवाऽश्विन्याद्यं योनयः॥२८॥ वैर योनि॥ ॥गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं श्वैणं च बभ्रूरगं वैरं वानरमेषयोश्च सुमहत्तद्विडालोन्दुरम्॥ लोकानां व्यवहारतोऽन्यदपि च ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं दंपत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदा वर्ज्यं शुभं स्यादिति॥२९॥

टी० अश्विनी नक्षत्रसे इनकी क्रमसे योनी जानना चक्रमें देखना आगे इनका महावैर समान वैर उदासी नमैत्री अतिमैत्री चक्रपरसे मथा कूटसे देखना —

अश्विनी	घोड़ा	मघा	मूसा	मूल	कुक्कुर
भरणी	हाथी	पूर्वा	मूसा	पूर्वाषाढा	बानर
कृत्तिका	मेढा	उत्तरा	गौ	उत्तराषाढा	नेउर
रोहिणी	सर्प	हस्त	भैंस	अभिजित्	नेउर
मृग	सर्प	चित्रा	सेर	श्रवण	बानर
आर्द्रा	कुत्ता	स्वाती	तेंदुवा	धनिष्ठा	सिंह
पुनर्वसु	बिलार	विशाखा	बाघ	शततारका	अश्व
पुष्य	मेढा	अनुराधा	हरिन्	पूर्वाभाद्रपदा	सिंह
आश्लेषा	बिलैया	ज्येष्ठा	हरिन्	उत्तराभा·रेव·	गो·गज

महावैरचक्रम्॥		समानवैर	
गो·	बाघ	कुक्कुर	बिलाई
हाथी	सिंह	उदासीन	
घोड़ा	भैंस	घोड़ा	मेढा
कुत्ता	हरिन्	मैत्री	
नेउर	सर्प	गो·	मेढा
बांदर	मेढा	अतिमैत्री	
बिलार	मूसा	हाथी	हाथी

ग्रहमैत्री॥ ॥मित्राणिद्युमणेः कुजेज्य शशिनः शुक्रार्क
जोवैरिणौ सौम्यश्चास्यसमोविधोर्बुधरवीमित्रेनचास्य
द्विषत्॥ शेषाश्चास्यसमाःकुजस्यसुहृदश्चंद्रेज्यसूर्या
बुधः शत्रुः शुक्रशनीसमौचशशभृत्सूनोः सिताहस्क
रौ॥३०॥मित्रेचास्यरिपुःशशीगुरुशनिक्ष्माजाः स
माःगीष्पतेर्मित्राण्यर्ककुजेंदवोबुधसितौशत्रूसमः सूर्य
जः॥मित्रेसौम्यशनीकवेःशशिरवीशत्रूकुजेज्यौसमौ ।
मित्रेशुक्रबुधौशनेरविशशिक्ष्माजाद्विषोऽन्यः समः॥३१॥

टी॰ सूर्यादिग्रहकामित्रसमशत्रुज्ञानकेवास्तेचक्रमेदेखना· मैत्रीचक्रम्

ग्रहा·	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चं·मं·गु	रवि·बुध	गु·चं·र·	रवि·शुक्र	र·चं·मं	बुध·शनि	बुध·शुक्र
सम	बुध	मं·गु·शु·श	शुक्र·शनि	मं·गु·श	शनि	मं·गुरु	गुरु
शत्रु	श·शुक्र	०	बु	चंद्र	बुध·शु·	रवि·चं·	र·चं·मं

गण॥ ॥हस्तादितीन्द्युमृगमैत्रकरानिलाख्यं स्वातीश्रवणाश्विनिरेवतीदेवगणाः प्रदिष्टाः॥ पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमाहरीनराख्यधिष्ण्यानिमानुषगणो यतयः प्रदिष्टः॥ अथापि नृक्षद्वैवाख्यादिशानेन्द्रमूलवस्वाह्निविश्वर्क्षगणो सुराख्यः ॥ देवासुराणां मनुजासुराणां वैरं महाक्लेशमथो नरेषु॥ ९२

टी० अश्विनी आदि लेके सत्ताईस नक्षत्र में देवगण मनुष्यगण राक्षसगण यह तीनो गण का ज्ञान चक्रपरसे मालूम करना आगे देवगण का और राक्षसगण का बैर मनुष्यगण का और राक्षसगण का बैर इससे विपरीत न होय तो मैत्री जानना — ॥ गणचक्रमिदं॥ ॥

अश्विनी	देवगण	पूर्वा	मनुष्यगण	आश्लेषा	राक्षसगण
मृग	देवगण	पूर्वाषाढा	मनुष्यगण	शततारका	राक्षसगण
अनुराधा	देवगण	पूर्वाभाद्रप	मनुष्यगण	मूल	राक्षसगण
श्रवण	देवगण	रोहिणी	मनुष्यगण	विशाखा	राक्षसगण
पुनर्वसु	देवगण	उत्तरा	मनुष्यगण	कृत्तिका	राक्षसगण
पुष्य	देवगण	उत्तराषाढा	मनुष्यगण	चित्रा	राक्षसगण
स्वाती	देवगण	उत्तराभा०	मनुष्यगण	ज्येष्ठा	राक्षसगण
हस्त	देवगण	आर्द्रा	मनुष्यगण	धनिष्ठा	राक्षसगण
रेवती	देवगण	भरणी	मनुष्यगण	मघा	राक्षसगण

अथ दुष्टनवपंचक॥ ॥मीनेलिभ्यां तुलेनो हे कुंभे मिथुन संयुते॥ मकरे कन्यका युक्ते न कुर्यान्नवपंचकं॥ ९३॥

टी० मीनसे नवम वृश्चिक वृश्चिकसे मीन पंचम राशी होती है और कर्क से मीन नवम मीन से कर्क पंचम तो यह नवम पंचम और कुंभ मिथुन और मकर कन्या यह नवम पंचम त्याग करना इनका मंगल कार्य में त्याग करना। टी०

मृत्युषडाष्टक॥ ॥मेषकन्याकपोरैचतुलामीनके वोलसा॥ युग्मालयोस्तु वृषेर्जो पौ मृत्युर्वै नक्रसिंह वोः॥ ९४॥ कुंभकर्कटयो नैव कुर्यादेवं न पोष्ट या॥

टी० मेष कन्या वृश्चिक परस्पर षडष्ट आठवां वृषभ और तुला मीन मिथुन वृश्चिक मकर सिंह कुंभ कर्क धन वृषभ यह हो राशी षडाष्टक है इनका त्याग करना

प्रीतिषडाष्टक॥ ॥सिंहोमीनयुतश्चैवतुलावृषयुत
स्तथा॥धनुःकर्कयुतंचैवकुंभकन्यकयोस्तथा॥३६
॥नक्रस्यमिथुनेप्रीतिरजाल्योःप्रीतिरुत्तमा॥५॥

टी॰ सिंह मीन तुला वृष धन कर्क कुंभ कन्या मकर मिथुन मेष वृ
श्चिक यह दो२ राशी प्रीतिषडाष्टक है सोशुभजानना —

द्विर्द्वादश॥ ॥मेषझषौवृषमिथुनौकर्कहरीतुलकन्य
के॥अलिधनुषीमकरकुंभावेतौद्विर्द्वादशेराशी॥३७॥

टी॰ मेष मीन वृष मिथुन कर्क सिंह तुला कन्या वृश्चिक धन मकर
कुंभ यह दो२ राशी द्विर्द्वादश आवे तो शुभजानना इस्से अन्यराशी
केद्विर्द्वादशहोय तोदारिद्यकारकजानना —

अन्यमत॥ ॥वरस्य पंचमेकन्याकन्याथांनवमेवरः॥
एतत्त्रिकोणकंयात्स्थंपुत्रपौत्रसुखावहं॥ ३८ ॥

टी॰ वरसे पंचम कन्याहोय कन्यासेनवमवरहोयतो यह नवपंचम
लेना पुत्रपौत्रसुखदायक होताहै

अन्यमत॥ ॥चतुर्थंदशमश्चैवतृतीयैकादशःशुभः
॥उभयःसप्तमःसाम्यमेकर्क्षंशुभमुच्यते॥३९॥

टी॰ वरकन्याकीराशी परस्पर चतुर्थ दशम अथवा तृतीय एकादश हो
यतो शुभ दूनोसप्तमहोयतोसम शुभजानना वरकेवाकन्याकेराशी
पतीएकहोयतो शुभजानना

नाडी॥ ॥अंत्यनाडी॥ कृत्तिकारोहिणीस्वातीमघा
श्लेषारेवती॥श्रवणश्चोत्तराषाढाविशाखाअंत्यनाडि
का॥४०॥मध्यनाडी॥ पूर्वाफाल्गुनिचित्राचधनिष्ठाभर
णीमृगाः॥पूर्वाषाढानुराधाचपुष्याहिर्बुध्न्यमेवच॥
॥४१॥आद्यनाडी॥पूर्वाभाद्रपदामूलंज्येष्ठाहस्तःपुनर्व
सुः॥अश्विन्यार्द्राशतभिषाचोत्तरात्वेकनाडिका॥४२॥

टी॰ अश्विन्यादिक्रमसे आद्यनाडी मध्यनाडी अंत्यनाडी जैसा अ
श्विनी भरणी कृत्तिका यहक्रमसे तीनोनाडीजानना —

॥नाडीचक्रम्॥

पूर्वाभाद्रप०	आद्यनाड़ी	पूर्वाफाल्गुनी	मध्यनाड़ी	कृत्तिका	अंत्यनाड़ी
मूल	आद्यनाड़ी	चित्रा	मध्यनाड़ी	रोहिणी	अंत्यनाड़ी
ज्येष्ठा	आद्यनाड़ी	धनिष्ठा	मध्यनाड़ी	स्वाती	अंत्यनाड़ी
हस्त	आद्यनाड़ी	भरणी	मध्यनाड़ी	मघा	अंत्यनाड़ी
पुनर्वसु	आद्यनाड़ी	मृग	मध्यनाड़ी	आश्लेषा	अंत्यनाड़ी
अश्विनी	आद्यनाड़ी	पूर्वाषाढ़ा	मध्यनाड़ी	रेवती	अंत्यनाड़ी
आर्द्रा	आद्यनाड़ी	अनुराधा	मध्यनाड़ी	श्रवण	अंत्यनाड़ी
शततारका	आद्यनाड़ी	पुष्य	मध्यनाड़ी	उत्तराषाढ़ा	अंत्यनाड़ी
उत्तराफा०	आद्यनाड़ी	उत्तराभा०	मध्यनाड़ी	विशाखा	अंत्यनाड़ी

नक्षत्रचरणज्ञान॥ ॥अश्विनी भरणी कृत्तिकापादं मेषः॥ कृत्तिकात्रयो रोहिणी मृगशिरार्द्धं वृषभः॥ मृगशिरार्द्धं आर्द्रा पुनर्वसुत्रयो मिथुनः॥ पुनर्वसोः पादं पुष्य आश्लेषांतं कर्कटकः॥ मघा पूर्वा उत्तरा पादं सिंहः॥ उत्तरात्रयं हस्त चित्रार्द्धं कन्या॥ चित्रार्द्धं स्वाती विशाखात्रयं तुला॥ विशाखापादं अनुराधा ज्येष्ठांतं वृश्चिकः॥ मूल पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ाः पादं धनुः॥ उत्तराषाढ़ात्रयं श्रवण धनिष्ठार्द्धं मकरः॥ धनिष्ठार्द्धं शततारका पूर्वाभाद्रपदात्रयं कुंभः॥ पूर्वाभाद्रपदापादं उत्तराभाद्रपदा रेवत्यं तं मीनः॥

टी० एक एक नक्षत्र के चार चरण सो ९ चरण मे एक राशी होती है तिसका प्रकार चक्र मे स्पष्ट लिखा है —

अश्वि०	चरण	४	कृत्ति०	चरण	३	मृग	चरण	२
भरणी	चरण	४	रोहि०	चरण	४	आर्द्रा	चरण	४
कृत्तिका	चरण	१	मृग	चरण	२	पुनर्व०	चरण	३
	मेष			वृषभ			मिथुन	
पुनर्व०	चरण	१	मघा	चरण	४	उत्तरा	चरण	३
पुष्य	चरण	४	पूर्वा	चरण	४	हस्त	चरण	४
आश्ले०	चरण	४	उत्तरा	चरण	१	चित्रा	चरण	२
	कर्क			सिंह			कन्या	

चित्रा	चरण	२	विशाखा	चरण	१	मूल	चरण	४
स्वाती	चरण	४	अनुरा॰	चरण	४	पूर्वाषा॰	चरण	४
विशाखा	चरण	३	ज्येष्ठा	चरण	४	उत्तराषा	चरण	१
तुला				वृश्चिक			धन	
उत्तरा	चरण	३	धनिष्ठा	चरण	२	पूर्वाभा	चरण	१
श्रवण	चरण	४	शततारा	चरण	४	उत्तराभा	चरण	४
धनिष्ठा	चरण	२	पूर्वाभा॰	चरण	३	रेवती	चरण	४
	मकर			कुंभ			मीन	

अन्यदपि॥ ॥एकराशौपृथग्धिष्ण्येष्युत्तमंपाणि
पीडनं॥एकधिष्ण्येपृथग्राशौसर्वेऽन्येपिचमृत्युदं॥५३

टी॰ स्त्रीपुरुषकी एकराशीहोय नक्षत्रकाभेद होयतो विवाह शुभ और एकनक्षत्रहोय राशीमे भेदहोय और चरण एकहोयतोमृत्यु कारकहोनाहै इस्सेविवाहकरनानही

गुणमेलनप्रकार

वर्णकागुण १

स्त्रीपुरुषकाएकवर्णहोयतोगुण १
अथवापुरुषकाउच्चवर्णहोयतो १
इस्सेविपरीतहोयतो गुण ०

वर्णकागुण					
		ब्रा	क्ष	वै	शू
स्त्रीकावर्ण	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

वश्यकागुण २

वैरभक्ष्येगुणाभावोद्वौ:सख्येगुणद्वयं॥वश्यवैरेगुणश्चैकोवश्यभक्ष्येगुणार्धकं॥१॥

टी॰ शत्रुभक्ष्यहोयतोगुण० दूनोसमानजाजीहोयतो गुण २ वश्यशत्रुहोयतोगुण१ वश्यभक्ष्यहोयतो गुण ॥आधाजानना॰ —

	च	म	ज	व	की
चतुष्पद	२	॥	१	०	२
मानव	॥	२	०	०	०
जलचर	१	०	२	२	२
नवचर	०	०	२	२	०
कीटक	१	०	१	०	२

ताराकेगुण

एकतोलभतेताराशुभाचेवाशुभान्यतः॥तदासार्द्धौगुणश्चैवताराशुध्याप्रियस्त्रयः॥४४॥उभयोर्नैशुभानारास्तदाशून्यंसमादिशेत्

टी॰ स्त्रीवापुरुषकिसीकाशुभतारा औरकिसीकाअशुभहोयतोगुण१॥

जानना औरदूनोंका एकसा राश्यधिप शुभ नहोहै पतो ५ गुणजान ना औरदूनोंका अशुभ नहोहोपतो ० गुणशून्य जानना॥

सू	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	१	२	१॥	३	१॥	१	१॥	२	१
२	१	३	१॥	३	१॥	१	१॥	१	१
३	१॥	१॥	०	०॥	०	१॥	०	१॥	०॥
४	२	२	१॥	२	१॥	१	१॥	१	१
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	१	२	१॥	२	१॥	२	१॥	२	१
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	१	२	१॥	१	१॥	२	१॥	२	१
९	१	२	१॥	२	१॥	१	१॥	१	[illegible]

योनीकेगुण॥ ॥ महावैरेचवैरेचस्वस्वभावेयथाक्र
मं॥ मैत्रेवैरातिमैत्रेचस्वेद्वित्रिचतुर्गुणाः॥ ४५॥

टी० स्त्रीपुरुषमेंदूनोंमेंएकसेमहावैरहोयतोगुणशून्य दूनोंमेंवैर शत्रुत्वहोयतोगुण१ दूनोंकास्वभावएकहोयतोगुण२ दूनोंकासामान्यमित्रहोयतो गुण३ दूनोंकाबहुतमित्रनाहोयतोगुण४ दूनोंएकजातीहोयतोगुण४ जानना

	अ॰	ग॰	मे॰	स॰	श्वा	मा॰	मू	गौ	म॰	व्या	ह॰	वा	न॰	सिं
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	२	१	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेष	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	१	२	४	०	२	२	१	३	३	२	१
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	१	२
गौ	१	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	१	२	२	२	३	४	१	२	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	१
हरिण	३	२	२	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	१
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नेउल	२	२	३	०	१	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	२	१	२	१	१	२	२	४

ग्रहमैत्रीकागुण॥ नैकाधिपत्वेपिमित्रत्वेगुणापंचकाः॥ च
त्वारःसमभित्रत्वेद्वैकोसाम्येन्यगोगुणाः॥ ४६॥ मित्रवैरेगुणमे
कोसमवैरेगुणार्द्धकं॥ परस्परंवैरवैरेगुणाःशून्यंविनिर्दिशेत्॥

टी० ग्रहमैत्रीमेंगुणविचारदूनोंकेराशिस्वामीएकहोय अथवामित्रहोय तोगुण५ दूनोंमेंसमऔरमित्रहोयतोगुण४ दूनोंसमहोयतोगुण३ दूनोंमेंमित्रश त्रुहोयतोगुण१ दूनोंमेंसमशत्रुहोयतो॥ गुणआधा दूनोंमेंशत्रुहोयतोगुणशू न्यजानना॥ गणकेगुण॥ ॥ पुरुषस्त्रीमेंदूनोंकाएकगणहोयतोगुण६ अथवा पुरुषदेवगणकन्यामनुष्यगणहोयतोगुण६ दूनोंमेंमनुष्यराक्षसमेंहै

२गुणशून्य दूनोमेदेवराक्षसहोयतो वैरगुण १ दूनोमेदेवमनुष्यहो यतोगुण ६ यहरीतसेगणकेगुणजानना· —

कन्या \ वर	दे·	म·	रा·
देव	६	५	१
मनु·	६	६	०
राक्ष·	१	०	६

कन्या \ वर	र	चं	मं	बु	वृ	शु	श
र	५	५	५	३	५	०	०
चं	५	५	४	१	४	॥	॥
मं	५	४	५	॥	५	३	॥
बु	३	१	॥	५	॥	५	४
वृ	५	४	५	॥	५	॥	३
शु	५	॥	३	५	॥	५	५
श	०	॥	॥	४	३	५	५

भकूटकेगुण

टी० एकराशीहोय नक्षत्रभिन्नहोय अथवा १ नक्षत्रहोय चरणभि न्नहोयतोगुण ७ दूनोसमसप्तहोयतो गुण ७ तृतीयएकादशहोय तोगुण ७ चतुर्थदशमहोयतोगुण ७ भिन्नराशी १ नक्षत्रहोयतोगुण ५ प्रीतिषडाष्टकऔरद्विर्द्वादश नवपंचम इस्मेपरस्पर योनीशत्रुताहो यतोभकूटगुण६जानना शुभ दूनोका परस्परनक्षत्र १ औरचरणभी १ होयतोगुणशून्यजानना· —

	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृषभ	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

॥ नाडीकेगुण ॥

टी० दूनोंकीभिन्ननाडीहोयतोगुण ८ एकनाडीहोयतोगुणशून्यजा
नना इसप्रकारसे अठारहगुणआवेतोशुभ इससेन्यून आवेतोअशु
भ१८सेअधिकआवेतोउत्तमजानना —

कन्याकेगुण	वरकेगुण		
	आ	म	अं
आ.	०	८	८
मध्य	८	०	८
अंत्य	८	८	०

॥ वर्णफल ॥

वर्णज्येष्ठातुयानारीवर्णहीन
स्तुयःपुमान्॥विवाहंयदिकु
र्वीतनस्याभर्त्तोचिरंक्षिति ४८

टी० वर्णमेस्त्रीश्रेष्ठहोय और पुरुषहीनवर्णहोय कदाचित विवा
हहोयतोपतीनाशकारकजानना —

योनीफल

टी० घोडा और भैसा ऐसे वैरयोनी परस्पर दूनोंकीहोय और राजा से
वक्रमेभी ऐसावैर होयतो त्याज्य[illegible] अशुभ·

गणफल

स्वगणाच्चोत्तमाप्रीतिर्मध्यमानरदेवयोः॥
कलहोदेवदैत्यानांमृत्युर्मानवराक्षसः॥४९॥

टी० स्त्रीपुरुषकाएक[illegible]गणहोयतोउत्तमप्रीति मनुष्यदेवहोयतो म
ध्यम देवदैत्यहोयतोकलह मनुष्यराक्षसहोयतोमृत्युकारकहोताहै·

कूटफलमाह॥ ॥षडाष्टकेमृत्युःपंचमनवमेनपत्य
नाशःस्यात्॥द्विर्द्वादशेनिर्धनताशेषेषुमध्यमनाशेज्ञेया॥५०

टी० स्त्रीपुरुषकाषडाष्टकमृत्युकारकऔर नवमपंचम संतानकानाशका
रकऔरद्विर्द्वादशदरिद्रकारक शेषजोराशी उसेशुभ —

नाडीफल॥ ॥अग्रनाडीवधेद्भर्तामध्यनाडीनधे
हयं॥पृष्ठनाडीवधेत्कन्याश्रिषतेनात्रसंशयः॥५१॥

टी० स्त्रीपुरुषकी आद्यनाडीहोयतोपतीको अशुभ और दूनोंकी मध्यना
डीहोयतोदूनोंकोअशुभ और दूनोंकीअंत्यनाडीहोयतोकन्याकोअशुभजा
नना —

असत्कूट

टी० स्त्रीनक्षत्रसे पुरुषनक्षत्र नजीक होय तो अशुभ और पुरुष नक्षत्रसे स्त्रीनक्षत्र दूर होय तो शुभ जो एक नक्षत्र अथवा दूनोके एक स्वामी होय तो शुभ जानना. —

नक्षत्रमेलन॥ ॥जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभं॥ व्यत्ययेन यदा योज्यं दंपत्योर्निधनप्रदं॥५२॥

टी० पुरुषका जन्म नक्षत्र होय तो स्त्रीके जन्मनक्षत्रसे मेलन करना और पुरुषका नाम नक्षत्र होय तो स्त्रीके नाम नक्षत्रसे मेलन करना शुभ इस्से विपरीत होय तो मृत्युकारक होता है. —

वर्णपरत्वेमेलन॥ ॥ग्रहमैत्रं ब्राह्मणानां क्षत्रियाणां गणस्तथा॥ वैश्यानां राशिकूटं हि शूद्राणां योनिरुत्तमा ५३

टी० ब्राह्मणको ग्रहमैत्री और क्षत्रियको गणविचार वैश्यको राशिकूट शूद्रको योनी विचारकरना शुभ—

अन्यमत॥ ॥नजन्ममासे जन्मर्क्षे नजन्मदिवसेपि च॥ आद्यगर्भसुतस्याथ दुहितुर्वाकरग्रहः॥५४॥

टी० प्रथमगर्भमे जो होय उस्का विवाह जन्ममहिनेमे वा जन्मराशीमे वा जन्मदिनमे करना नही स्त्री होय अथवा पुरुष होय —

स्त्रीपुरुषका एकत्र गुण जाननेका चक्र.

		रा	मे	मे	मे	वृ	वृ	वृ	मि	मि	मि	क	क	क	सिं	सिं	सिं	क	क
		आ	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	।॥	।	१	१	१	१	।	॥।	१
राशि	पा	नक्ष	अश्व	भ	कृ	कृ	रो	मृ	मृ	आ	पुन	पुन	पु	आ	म	पू	उ	उ	ह
मेष	१	अ	२६	३३	३२	२४	२१	२१	२७	२९	१९	२५॥	२१॥	२९	२७॥	२७॥	२२	१३	१२
मेष	१	भ	३४	३६	३४	३१	२२॥	१४॥	१९	३६	२७	१९॥	३१॥	१५॥	[illegible]	२७॥	२२॥	२१॥	२०
मेष	।	कृ	२४॥	२२	२६	३३	१०	१६॥	२७	२२	२७	२५	२३॥	२२॥	[illegible]	१६॥	२६॥	१४॥	१५
वृषभ	॥।	कृ	१९॥	१४॥	३६	३६	३४	१२॥	२४॥	२४॥	२४॥	२२	२४	२०	३८	२३॥	३७॥	२९	२९
वृषभ	१	रो	२४॥	२४॥	१२	३४	३६	१७॥	१५॥	३२	२७	२६॥	२८	१२	१०	३४	२७॥	३४	३४
वृषभ	॥	मृ	२४	११	११॥	३४॥	३६	३६	३५	३३	२४॥	२६	२०	२१	१८	१४	२५	३१	३४
मिथुन	॥	मृ	२०	२९	२३॥	२७॥	३५	३६	३६	३४	३१	२०॥	१२॥	१७॥	२२॥	१८	२०॥	३१॥	३४
मिथुन	१	आ	२७	१८	२३	३३॥	३२॥	३४	३३	३४	३४	२३	२३॥	१५॥	२३॥	१७	३१	२४	२४
मिथुन	॥।	पुन	३०	२७	२३	२४॥	३७॥	३१॥	३४॥	३४	३४	३४	२३	१६॥	२३॥	२२॥	२७॥	२२	२४॥
कर्क	।	पुन	३२॥	२९॥	२५॥	२२	२४	२६	३०॥	१२	१९	३४	३५	३१॥	२२	२६	२१	१८॥	१८॥
कर्क	१	पु	३४॥	२४	२७	२४	२१	१९	३३॥	२७	२३	२४	३६	३४	२५	२१	३१	१२॥	१६॥
कर्क	१	आ	२६	२६	२२॥	१३	११	२०	२४॥	१४॥	१४॥	३२	३४	३५	२०॥	२१	१४	२४॥	२४॥
सिंह	१	म	३२	१८॥	३१	१७	१०	१८	२३॥	२२॥	२०॥	२२	२४	२४॥	३६	३६	३३	१८॥	१४॥
सिंह	१	पू	२९	२४॥	२७॥	२०	२४	१६	[illegible]	२८	२५॥	२९	३३	१९	३६	३६	३४	१०	२४॥
सिंह	।	उ	१७	१२	३२	२०	२६	१५	[illegible]	३०॥	२०॥	२२॥	३१	३१	३२	३४	३६	३३	१९
कन्या	॥।	उ	१२	११	१६	३४	१७॥	१६॥	१९॥	२३॥	२४॥	२०	२८	२२॥	२०॥	३१	२४	३४	३३
कन्या	१	ह	१३	२०	२१॥	२८	३३	२४	३३	२२॥	२३॥	२०॥	१८॥	१२॥	२४॥	२८॥	२९	३४	३६
कन्या	॥	चि	१४	७	२२	३१	२९	२०	१९	२६	२६॥	२१॥	१२॥	२०॥	२२॥	१०॥	१४॥	१०	३३
तुला	॥	चि	२३॥	१६	१९॥	२४॥	२१	१३	२०	२४	३०॥	३२	१३	२७	२५	१९॥	१७॥	१८॥	३४
तुला	१	स्वा	२०॥	२०॥	११॥	१२॥	१६॥	१७	२६	३३	३४॥	२३॥	२८	१४	२३॥	२८॥	२४॥	२८॥	३४
तुला	॥।	वि	२२॥	२४॥	२९॥	११॥	१७॥	७॥	३४॥	२०॥	२१	२२॥	२२॥	१४॥	१०॥	१३॥	१३॥	१६॥	२३॥
वृश्चिक	।	वि	१२॥	२४॥	१५॥	२६	१५	१३	१३	१३॥	१३॥	२०	२०	१५॥	१३॥	२३॥	१३॥	१८॥	१९
वृश्चिक	१	अ	२१॥	१९॥	१२॥	२४॥	२८॥	२१॥	११	१६	२०॥	१७	१९	२१	२६	२०	१९	३१	३१
वृश्चिक	१	ज्ये	१२	१७॥	२४॥	२०॥	२३॥	२२॥		२	४	१४॥	२१	२६	२३	१०॥	१४॥	११	१९
धन	१	मू	२८	२८	३३	२०	१६	१६	२१	१२	१३	१०॥	१०॥	२६	२३॥	२३॥	१७	१६॥	२३
धन	१	पू	३४	२६	३४॥	१४	२०	१२	१९	२७	२७	२४॥	१९॥	२०॥	३३॥	३४॥	३३	३१॥	३०
धन	।	उ	११	३३	३४	३६	११॥	२८	२४	२७	२७	२४॥	२८॥	१४॥	२३	२४॥	२१॥	११	१४॥
मकर	॥।	उ	२८	२०॥	१४॥	२६	२३	२६॥	२९॥	२२॥	२९॥	२८	२८	१४	१६	२०॥	२४॥	२७	२७
मकर	१	श्र	२८	२७	३४	३१	२१	३६	२४	२२॥	२८॥	१८	२८	१४	१२	१७	१७॥	३६	२७
मकर	॥	ध	२१	१२	२६	३१	२८	२०	१६	१८	१४॥	२०	३१	२६	२८	१४	१२	१०॥	२०
कुम्भ	॥	ध	२७	१२	२६	३१॥	२८	२०	१२	१९	१०॥	१८	१६	२०	२४	१४॥	१८॥	२३॥	२९
कुम्भ	१	श	१६	२२	२८	२३॥	३३॥	२८	२०	१२	१२	८॥	१४	२७	२४॥	१९॥	१९॥	७॥	१४॥
कुम्भ	॥।	पू	१९	२६	२०	३४	१३॥	१२॥	१२॥	१७	१७	११॥	१२॥	१३॥	१२॥	१२॥	१२॥	१०॥	११
मीन	।	पू	२१॥	२१॥	२२॥	३१॥	७	७	१९	२७	१०	१७	३१	७॥	३४	३३	१४	१०॥	१९
मीन	१	उ	३१॥	२४॥	३१॥	३१॥	२७	७	१०	२७	२८	२६	१४	२०	२०	३०॥	२४	२९	२९
मीन	१	रे	३२	३०	१२॥	१०॥	१८	२७	२४	२६	३३	२४॥	३३	१३	१०॥	२३	१७	२६	३३

क	तु	तु	तु	वृ	वृ	वृ	ध	ध	ध	म	म	म	कुं	कुं	कुं	मी	मी	मी	०
॥	॥	१	।॥	।	१	१	१	१	।	।॥	१	॥	॥	१	।॥	।	१	१	०
चि	चि	स्वा	वि	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	उ	श्र	ध	ध	श	पू	पू	उ	रे	०
२४	२२॥	२१	२३॥	१०॥	२४	१५	२१	३३	३१	३६	२७	२१	२१	१६	१०	२२	३१	३४	१
५	१३॥	१०॥	२२॥	१८॥	३५॥	१२॥	३४	२६	३४	२८॥	२७॥	११	११	२७	२५	३०॥	२४	३२	२
१०॥	२७॥	१५॥	१०॥	१६॥	१८॥	२५॥	३३॥	२८	२०	१४॥	२४	२५	२६	२७	२०	२५॥	२५॥	१०॥	३
२८	२०	७॥	१२॥	२०॥	१६॥	३०॥	२२॥	२३॥	९॥	१४	२०॥	३१॥	३०॥	३२॥	२६॥	२३॥	२३॥	१४	४
३४	१७	१३॥	६॥	१४	२९॥	२४॥	१५	३१	१२॥	१८	२६	३४॥	३३	३१॥	३१	२८	२८	३०	५
२१	१०	२३	१५॥	२३॥	२१॥	१५॥	१६	१२	१८	२३॥	३४	२१	२०	२८	२०॥	२७	२९	२८	६
२१	२१	३४	३४॥	२४	११	१५॥	२३	१०	१८	२१॥	२६	१३	१४	२९	२४॥	२७	२९	२८	७
३४	३४	३४	३४	२१॥	१७	४	१४	२८	२८	२४॥	२०	१०	२०	१३	८	२१॥	२८	२८	८
२७॥	२७॥	३४	२९	१६॥	२१॥	७	१४	२७	२७	२३॥	२४॥	१८	१०॥	१४	१०	१०	२८	२८	९
२२॥	२२	२८	२३	२१	२६	११॥	१०॥	२३॥	२६	२६	२७	२१	१४	८॥	११॥	२०	३६	२५	१०
१२॥	१२	२७	२२॥	२१	१८	११	१०॥	१४॥	२२॥	२६	२७	२३	६	१५	१०॥	८	१८	२७	११
२७	२७	६	१०	१६॥	२०	२६	२५	१७॥	९॥	२३	२३	२६	९	२०	१३	२४	३१	१३	१२
२८॥	२४॥	१०	१९	३२॥	२४॥	३२	३२॥	१६॥	१७॥	४	४	१९	२५॥	२६॥	१०	१८	१८	११॥	१३
१४	१६॥	१४॥	१८॥	२४॥	२२॥	३०॥	३२॥	२४॥	३२॥	१९॥	१८	५	९॥	१८॥	२४॥	२४	१६	२४	१४
१९॥	१५॥	२५॥	१५	२१॥	३०॥	२५॥	२२	३२॥	३२॥	१०॥	१९	१२	१६॥	१०॥	१०॥	१५	२६	२४	१५
३०	२०॥	३०॥	२३॥	१८	२७	१२	२८	२९॥	२९॥	२६	२६	१८	१६	९॥	११	१८	३०	२८	१६
३३	२६	३२॥	२४॥	२०	२७	१४	१४	२७	२५॥	२५	२६	२१	१७	१५॥	१३	१८	३०	२८	१७
३४	३३	२६	३०॥	२७	११	२५	२६	१२	१२	१०॥	१०	१८	१९	२२॥	१७	२०	१२	२२	१८
३४	३४	३२॥	३२॥	२२॥	७॥	९॥	२१	१२	२२	२६॥	२६	२४	२४	३०॥	२६	२४	५	५	१९
२८	३३	३६	३३	२३	२०	२७॥	२३	२७	१८	२३॥	२४	२७	२७	२८	३४	२०	२१	१३	२०
३२॥	३२॥	३३	३४	२६	१७॥	२१॥	२६	२०	१४	१८॥	१६॥	३०	३०	३१	२०	१५॥	१४॥	७	२१
२६	१०॥	२६॥	२६	३२	३३	३१॥	२८॥	२३	१७॥	१३	१५॥	२४॥	२४॥	२५॥	१३॥	२६	२५	१९॥	२२
१२	८	३२	१८	३३	३६	३६	२४॥	३२॥	३०॥	२६	३१	१६	११	२१	२४॥	३१	२५	३४	२३
२५	२१॥	१६॥	२१॥	२३॥	३६	३६	२२	२५	२५	२७॥	२५॥	२०॥	२४॥	२६	१०॥	१६॥	२८	२८	२४
२७	२७	२६	२७	३२॥	१४॥	२४	३४	३५	३२॥	२३॥	२६॥	३०॥	२७	२०॥	१३॥	१६	२६	२८	२५
१२	१८	१९	२६	३१॥	१४॥	३२॥	३४	३६	३४	२५	३४	१६॥	१३॥	२३॥	२४	३०॥	१७॥	३२॥	२६
२१	२७	१९	१९	२३॥	३२	३२॥	३२॥	२४	३६	३५	२६	३२॥	३३	२२॥	२७॥	३२	३२	२५	२७
१७	३१॥	३१॥	२३॥	१९॥	२७॥	२२	२८॥	२४	३३	३६	३६	३२	३१॥	१७॥	३१॥	३०	३०	२२	२८
२०	२७	२२॥	३०॥	१४	२७	२३	१२॥	२८	२७	३४	३६	३३	३६	१०॥	१०॥	२७	२०॥	३२॥	२९
१७	२४	२९	३०॥	२७	१३	१४	२४॥	९॥	१८	१२	२७	३४	३२	२४	२५	२४	१४	२२॥	३०
१७	२५	२७	३१॥	२६	१२	२६	१२॥	१५॥	२४	२६॥	१९	३१	३४	३३	३२	१७॥	८	१५॥	३१
२५	३३	२८	२३	२७	२१	१९	३२॥	२४	२४	२६	१८॥	२५	३३॥	३६	३२	१८	१०॥	२७॥	३२
१७॥	३१	३३	३३	२७॥	२७॥	३४	१६॥	१९॥	३०॥	३२॥	२३॥	१८॥	३२॥	३३	३४	३४	३४	२१॥	३३
२०	१३	२०॥	१४॥	२७	२६	२३	२३॥	३०॥	३१	२९॥	३०॥	३१	१७॥	१०	१७॥	३४	३३	३०॥	३४
११	५	२१	१३॥	२६	१९	३४	२१॥	२३॥	३४॥	२९॥	२१॥	२२	८॥	१७॥	२०	३३	३६	३४	३५
२२	१८	१२	८	१८॥	२७	२९	२८	३०	२३॥	२०॥	२३॥	१९॥	२५॥	१७॥	२०॥	३०॥	३४	३४	३६

वर्गज्ञानमाह॥ ॥अकचटतपयशावर्गाः खगेशमार्जा
रसिंहश्वानां॥सर्पाखुमृगावीणांनिजपंचमवैरिणोनशैः ॥५५
टी० वर्गमेंत्रीकेवर्गस्वामी ॥ानकेनामसे चक्रपरसेदेखना औरगरुडसे
पंचमसर्पतोइससेमहावैरकहासो अशुभ—

अ	क	च	ट	त	प	य	श	वर्गाः
१६	५	५	५	५	५	४	४	०
गरुड	मार्जार	सिंह	कुक्कुर	सर्प	चूहा	हरिण	हरिण	०

अन्यमत॥ ॥स्ववर्गात्पंचमःशत्रुश्चतुर्थोमित्रएव
च॥उदासीनस्तृतीयोपिवर्गभेदस्त्रिधोच्यते॥५६॥
टी० अपनेवर्गसेपंचमशत्रु औरचतुर्थ मित्रतृतीयउदासीनऐसी
यहवर्गमेंभीतीनप्रकारकीजानना—
प्रीतिज्ञान॥ ॥स्ववर्गे परमाप्रीतिर्मित्रेप्रीतिश्च म
ध्यते॥उदासीनेप्रीतिरल्पाशत्रुवर्गेमृतिभवेत्॥५७॥
टी० स्त्रीपुरुषकासमानवर्गमेंजैसे सिंह सिंहहोयतोमहाप्रीतिमित्र
होयतोसमानप्रीति औरउदासीनमेंथाडीप्रीति औरशत्रुवर्गमेंहोयतो
मृत्युकारकजानना— ॥ दुष्टकूटदान ॥
षडाष्टकेगोमिथुनंप्रदद्यात्कांस्यंसरूप्यंनवपंचमेत्र
॥नाड्यांसुधेन्वान्नसुवर्णवस्त्रंद्विर्द्वादशेब्राह्मणतर्पणंच॥५८
टी० बहुतसंकटप्राप्तहोयतोषडाष्टकमेंगौदानदेना भृभवनवमपंचमहोयतो
कांस्यपात्रऔरचांदीदानदेना एकनाडीहोयतोधेनू औरअन्नसुवर्णवस्त्रदा
नदेनाद्विर्द्वादशहोयतोब्राह्मणभोजनकरनाइससेदुष्टकूटकानाशहोताहै
स्वयंवरकाल॥ ॥पितापितामहोभ्राताभालाबंधुर्वे
दानहि॥ऋतौवर्षत्रयात्पूर्ध्वंकन्याकुर्यात्स्वयंवरं ५९
टी० कन्या अपाने मातापिता भाई औरभी बंधुजनसे ही नहोय औ
र विवाहकदाचित् नहोयतो ऋतुप्राप्तीकेअनंतर तीनवर्षसे अपाने इ
च्छासेपतीकरना ऐसास्वयंवरकालकहतेहैं—
विवाहकेनक्षत्र॥ ॥मूलमैत्रकरस्वातीमघापौष्णाभ्यु
मेंदवः॥एतैर्निर्वेधभैःस्त्रीणांविवाहःशुभदःस्मृतः॥६०

टी० मूल अनुराधा हस्त स्वाती मघा रेवती रोहिणी तीनोउत्तरा मृग यह नक्षत्र दोषसे वर्जितहोयतो विवाह करना स्त्रीकोशुभ·

इकईसमहादोष॥ ॥पंचांगशुद्धिरहितोदोषस्त्वाद्यः
प्रकीर्त्तितः॥उदयास्तशुद्धिरहितोद्वितीयः सूर्यसंक्रमः
॥६१॥ तृतीयः पापषड्वर्गो भृगुः षष्ठः कुजोऽष्टमः॥गंडांतं
कर्त्तरीरिःफषड्ष्टेंदुश्चसंग्रहः॥६२॥ दंपत्योरष्टमंलग्नं
राशीविषघटीतथा॥ दुर्मुहूर्त्तोवारदोषखार्जूरीकस
मांघ्रिभं॥६३॥ग्रहणोत्पातभंक्रूरविद्धर्क्षंक्रूरसंयुतं॥
कुनवांशोमहापातोवैधृतिश्चैकविंशतिः॥६४॥ ७॥

टी० विवाहमे इकईस महादोषका त्यागकरना पंचांगशुद्धीरहित १ उदयास्त २ सूर्यसंक्रांति ३ पापग्रहकावर्ग ४ षष्ठशुक्र ५ अष्टम मंगल ६ गंडांत ७ कर्त्तरी ८ चंद्रमा १२।८।६।९ स्त्रीपुरुषका अष्टमलग्न १० लग्नमे चंद्रमापापग्रहनहोय ११ विषघटी १२ दुष्टमुहूर्त्त १३ वारदोष १४ लत्ता १५ ग्रहणनक्षत्र १६ उत्पातनक्षत्र १७ पापग्रहकावेध १८ पापग्रहयुक्त १९ पापग्रहका अंश २० महापात २१ वैधृतियहयोगकात्यागकरना·—

अस्तोदयकाल॥ ॥यमशरभुजवासरवज्रिणो
दिशिद्विसप्तसिनास्तमनंतथा॥ गगनवाणयमैर्दि
शिपश्चिमेनवदिनास्तमनंतुभृगोर्बुधैः॥६५॥ ७॥

टी० शुक्रका अस्तपूर्वमे २५२ दिनपरहोनाहै तिसका उदय ७२ दिनमे पश्चिममेहोनाहै और २५० दिनपरपश्चिममे अस्तहोताहै सो ९ दिनमे पूर्वमेउदयहोताहै सोविचारकरकोजानना·—

अवस्थाविचार॥ ॥प्रागुद्गतः शिशुरहस्त्रितयंसितः स्यात्
पश्चाद्दशाहमिह पंचदिनानिवृद्धः॥प्राक्पसमेवगदितो
त्रवसिष्ठमुख्यैर्जीवस्तुपक्षमपिवृद्धशिशुर्विवर्ज्यः॥६६

टी० पूर्वदिशामे शुक्रका उदयहोयतो बालत्वतीनदिनहोताहै पश्चिममे अस्तकेपहिले १५ दिन वृद्धरहताहै वैसापश्चिममेउदयहोयतब ५ दिनबालत्वऔर १० दिन वृद्धरहताहै सोशुभकर्ममेत्यागकरना औरगुरूकी उदय अस्तमे १५ दिनबालत्व १५ दिनवृद्धरहताहैसोशुभकर्ममेत्यागकरना·—

अस्तमेवर्ज्यकर्म ॥ ॥ वापीकूपतडागयागगमनं क्षौ
रं प्रतिष्ठाव्रतं विद्यारंभविभूषणे धनमहादानं गुरोः से
वनं ॥ तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनं मंत्रोपदेशं शुभं दू
रेणैव जिजीविषुः परिहरेदस्ते गुरौ भार्गवे ॥ ६७ ॥ ॥

टी० गुरु शुक्रास्तमे इतनेकाम करनानही बावली कूवा तलाव यज्ञ या
त्रा क्षौर देवतास्थापन मौंजीबंधन विद्यारंभ घरकागहनेदान महादा
न गुरुसेवा तीर्थस्नान विवाह काम्यनिक होम मंत्रका उपदेश शुभ यह स
बकर्म जिसको जीवनेकी इच्छा होय उन्होंने गुरुशुक्रका अस्त त्याग करना

गुरुविचार ॥ ॥ नष्टात्मजा धनवती विधवा कुशीला पुत्रा
न्विता हतधवा सुभगा विपुत्रा ॥ स्वामिप्रिया विगतपुत्र
धवा धनाढ्या वंध्या भवेत्सुरगुरौ क्रमशोऽभिजन्म ॥ ६८ ॥

टी० कन्याको गुरु विचार विवाहकालमें जन्मस्थ गुरु होय तो संतान नाशक
रे द्वितीय होय तो धनयुक्त तृतीय होय तो पतिहीन चतुर्थ होय तो जारकर्मी
पंचम होय तो पुत्रयुक्त षष्ठ होय तो पतिहीन सप्तम होय तो सुख अष्टम होय
तो पुत्रहीन नवम होय तो पतिप्रिय दशम होय तो पुत्रपतीहीन एकादश होय
तो धनयुक्त द्वादश होय तो वंध्या ऐसा क्रमसे बारह स्थानका फल जानना

अन्यमत ॥ ॥ जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदो गु
रुः ॥ विवाहे च चतुर्थाष्टद्वादशस्थो मृतिप्रदः ॥ ६९ ॥ ॥

टी० विवाहकालमें जन्मस्थ तृतीय दशम षष्ठ यह गुरु पूजा करने
से शुभ और चतुर्थ अष्टम द्वादश यह मृत्युकारक होता है —

दोषलक्षण ॥ लग्नाच्चंद्राद्वा यदि स्युः पापखेटो व्ययाष्टमे ॥ कर्त्त
रीदोषो विवाहे पंचत्वादिषु ॥ ७० ॥ नहि कर्तरि दोषः स्यात्
सौम्ये द्विजायते ॥ शुभग्रहयुते लग्ने क्रूरयोनोस्ति कर्तरी ॥ ७१ ॥

टी० लग्नसे वा चंद्रमासे १२ स्थानमें २ स्थानमें पाप ग्रह होय तो कर्तरी होती है
सो विवाह और अनेक कर्मको त्यागकर अशुभ और शुभ ग्रह बीचमें होय तो दो
षरहीत लग्नमें शुभ ग्रह होय और क्रूर ग्रहकी भी कर्तरी होय तो दोष नही

अष्टमलग्न ॥ ॥ वरस्य चौर्वैलो अपि जन्मराशेर्यलग्न
तः ॥ न्यायमष्टमलग्नं यत्र स्याद्विवाहं तत्र वर्जयेत् ॥ ७२ ॥

टी॰ स्त्रीपुरुष और बटु इनके जन्मराशीसे अथवा जन्मलग्नसे अशुभलग्नका विवाह जनेउ इसमेत्याग करना —

दुष्टमुहूर्त्त॥ ॥तिथ्यंशोदिनमानस्यरात्रिमानस्य चैवहि॥मुहूर्त्तःकथितस्तेषुदुर्मुहूर्त्तंशुभेत्यजेत्॥७३

टी॰ दिनका १५ वा भाग और रात्रीका १५ वा भाग दुष्टमुहूर्त्त होतेहै सो त्याग करना

यामार्ध॥ ॥सूर्याद्यामदलंदिवैवनिगमाग्र्यश्वीषुनाग त्रिषट्संख्याकंकुलिकंदिवेंद्रविद्दिङ्नागर्तुवेदद्विकं॥ ज्येकेंतनिशिषोडशांशमपरेतिथ्यंशमुज्झंतिनैःकाल कंटकमैनिघंटमभरेज्यज्ञास्फुजिज्ज्युक्रमात्॥७४॥

टी॰ दिनमे रविवारसे अर्द्धयामके अंकहै सो निवृत्ती और प्रवृत्तीके अंक भी कोष्टकमेहै यथाक्रमसे देखना। शुभकर्ममे त्यागकरना दिनमे रविवार सेदिनके सोलवे भागमे कुलिक अंक चक्रमे देखना शुभकर्ममे त्याग करना कोई आचार्य कहते है कि रात्रीमे सोलवा भाग कुलिक नही १५ वा भाग है सो त्याग करना गुरुवारसे काल दोष बुधवारसे कंटकयोग शुक्रवारसे ऐनिघंट योग यह यथाक्रमसे चक्रमे देखना शुभकर्ममे त्याग करना एक दिनमे आठ अर्द्धयाम ८ कुलिकादि सोलह ऐसे वारपरत्वसे जानना परंतु जो वारपरत्वसे त्याग सो चक्रमे देखना — यामार्द्धचक्रम्

वार	यामार्द्धघटिका संख्या	प्रवृत्ति	निवृत्ति	कुलिक घ॰ २	काल घ॰ २	कंटक घ॰ २	ऐनिघंट घ॰ २
रवि	४	१२	१६	१४	८	६	१०
चंद्र	७	२४	२८	१२	६	४	८
मंगल	२	४	८	१०	४	२	६
बुध	५	१६	२०	८	२	१४	४
गुरु	८	२८	३२	६	१४	१२	२
शुक्र	३	८	१२	४	१२	१०	१४
शनि	६	२०	२४	२	१०	८	१२

चंद्रविचार॥ ॥चंद्रेसूर्यादिसंयुक्तेदारिद्र्यंमरणं शुभं॥सौख्यंसापत्न्यवैराग्येपापद्वययुतेमृतिः॥७५

टी॰ चंद्रमा सूर्यादिकग्रहके साथ होय तिसका फल चक्रमे देखना परंतु दोपापग्रहसे युक्त होय तो मृत्युकारक होता है —

सनक्षत्रवीदिचक्र					
बु	मं	गु	शु	सू	श
चं.	चं.	चं.	चं.	चं.	चं.
रा.के.	मं.गु	सू.भ	शि.	शब	बी

ग्रहणउत्पातनक्षत्रदोष॥ ॥यस्मिन्धिष्ण्येभवेद्भूतोत्पातोग्रहणमथवापि॥ तस्मिन्धिष्ण्येशुभंकर्मषण्मासंवर्जयेद्बुधः

टी॰ जिसनक्षत्रमेंउत्पातहोय भूकंपादिक औरजिसनक्षत्रपरग्रहण होयसोनक्षत्रकात्याग ६ महिनेतकशुभकर्ममेंकरना —

लत्तादोष॥ ॥तराहुपूर्णेंदुसितास्वपृष्ठेभसप्तगो९जाति
३२शारैपूर्मितैर्हि॥संलत्तयंतेऽर्कशनीज्यभौमसूर्यो१२९८
नक्रोद्विभिमितंपुरस्तात्॥ ॥

टी॰ बुधजिसनक्षत्रपरहोयउसनक्षत्रसेपीछेसप्तमनक्षत्रपरलत्तादोष राहुजिसनक्षत्रपरहोयउस्सेपीछेनवमनक्षत्रलत्ता॥पूर्णचंद्रमाजिसनक्षत्रपरहोयउस्सेपीछे२२वेंनक्षत्रपरलत्ता शुक्रजिसनक्षत्रपरहोयउस्सेपीछे५वेंनक्षत्रपरलत्ता यहपृष्ठलत्ता आगेअग्रलत्ता सूर्यजिसनक्षत्रपरहोयउसनक्षत्रसेआगे१२वेंनक्षत्रलत्तादोष शनीजिसनक्षत्रपरहोयउसे८वेंनक्षत्रपरलत्ता गुरुजिसनक्षत्रपरहोयउसे६नक्षत्रपरलत्ता॥मंगलजिसनक्षत्रपरहोयउसे३नक्षत्रपरलत्ता यहअग्रलत्ताजानना सोशुभकर्ममेंत्यागकरना

वेधमाह

चक्रेसप्तशलाकाख्येभेषः
हार्वेकरेखस्थः॥त्याज्यएकवेधवशा
हेनतथैवंपंचरेखकैः॥७४॥

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

टी॰ विवाहमे सप्तशलाका और पंचशलाका देखना परंतु पंचशलाका मौंजी बंधनमे कथित है सप्तशलाका सर्वकर्म मे कथित है परंतु विवाहमे वेध अवश्य देखना

पंचशलाका॥ ॥रेखास्त्वोर्ध्वाः पंचतिर्यक्च पंच द्वे द्वे रेखे कोणयोरत्र चक्रे॥ नाड्योन्यस्येच्छंभुकोणे द्वितीये रेखायां भान्यग्निभात्साभिजिद्धि॥७९॥

टी॰ पंचशलाकाचक्र खड़ी ५ रेखा करना उसपर आड़ी ५ रेखा करना और कोनेमे दो २ रेखा तिरछी करना परंतु ईशान्यके कोनेमे दूसरी रेखासे कृत्तिका आदि लेके अठ्ठाईस नक्षत्रका न्यास करना

सप्तशलाका॥ ॥सप्तसप्त विनिपात्य रेखिकास्तिर्यगूर्ध्वमथ कृत्तिकादिकं॥ लेखयेदभिजिता समन्वितं चैकरेखगमनेन विध्यते॥८०॥ छ॥

टी॰ सप्तशलाकाचक्र ७ रेखा सूधी करना और उसपर ७ रेखा आड़ी करना और अभिजितके सहित नक्षत्रका न्यास करना परंतु १ रेखामे होय तो वेध होता है जैसा एक ग्रह रोहिणीपर है और दूसरा ग्रह अभिजितपर होय तो वेध होता है सो वेध शुभग्रहका होय तो शुभ अशुभ ग्रहका होय तो अशुभ परंतु वेधित जो होय तो करना नहीं·—

पंचशलाकाचक्रं — सप्तशलाकाचक्रम्

अन्यमत॥ ॥चक्रे तस्मिन्नेकरेखास्थितेन नत द्विद्वर्क्षे खेचरेणाप्रदिष्टं॥ क्रूरैर्विद्धं सर्वधिष्ण्यं विवर्ज्यं सौम्यैर्विद्धं नाखिलं पादमेव ८१

टी॰ सप्तशलाकाचक्रमे २ ग्रह एक रेखामे होय तो वेध होता है सो पापग्रहसे वेधित नक्षत्रका संपूर्ण त्याग करना और शुभग्रहसे वेधित होय तो जि

स चरणमेवेधहोयउस्कात्यागकरना —

वेधनक्षत्रमाह॥ ॥श्रुत्यग्नि भे भिजि द्वाहये वेधं च सुदर्शं तुरुद्रभे॥ मूलादित्येन पुष्येन्द्रे पैत्र्याद्वे विशाखनेत्र अरय भाग्यर्यमौत्येव च हस्तो हिर्बुध्न्य भे तथा॥ चित्रा स्वातिरपो न तौ वारुणेन च परस्परं॥ ८३॥ हि दैवे वा स भेत्तदुद्देशः स तथा॥ कजः॥ त्याज्यः पापोद्भवो यत्नाच्छुभं बाधो दिवसे शुभ ८४

टी॰ वेधजाननेका प्रकार श्रवण कृत्तिका इनका वेध इसी प्रकारसे अभिजित् रोहिणी उत्तराषाढा मृग पूर्वाषाढा आर्द्रा मूल पुनर्वसु पुष्य ज्येष्ठा अनुराध आश्लेषा मघा भरणी अश्विनी पूफा उफा रेवती हस्त उभा चित्रा पूभा स्वाती शतभिषा विशाखा धनिष्ठा ऐसा दोनसत्रमे वेधजाननासो मौंजीविवाहादिमे अवश्यत्यागकरना —

अन्यमते॥ ॥धिष्ण्यं सौम्यग्रहै र्विद्धं पादमात्रं परित्यजेत्॥ क्रूरैस्तु सकलं त्याज्यमिति वेधविनिश्चयं ८५

टी॰ नक्षत्र शुभग्रहसे वेधित होयतो जिसचरणमें वेधितहोय उस्का त्याग करना और पापग्रहसे वेधितहोय तो वह सब नक्षत्र त्यागकरना शुभ —

वेधप्रकार॥ ॥वेधमाद्यंतयो र्ज्ञेयो ह्यन्योन्यं हि तृतीयगौ॥ क्रूरैरपि त्यजेत्पादं केचिद्बुध शुभं ग्रहैः॥ ८६॥

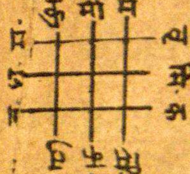
टी॰ वेधप्रथमचरण और चतुर्थचरणसे और द्वितीयतृतीयचरणसे वेध है ताहि कोई ऋषिलोक कहतेहैंकि क्रूरग्रहसे वेध होयतो भीपादत्याग करना

क्रांतिसाम्य॥ ॥युग्मे धनुः कर्किमृगौ च युग्मे कन्या च मीनं च धनं च युग्मे॥ मेषं च सिंहे च पदे तुला च कुंभे तैन साम्यं क्रांतिर्नृमृगौ च मीनं

टी॰ मिथुन धन ऐसे राशीपर चंद्रसूर्य होय तो क्रांतिसाम्य होताहै इसीरीतसे कर्क वृश्चिक कन्या मीन वृषभ मकर मेष सिंह तुला कुंभ हो यह क्रांतिसाम्य अशुभ मे त्यागकरना —

चक्रज्ञानम्॥ ॥कर्ध्वरेखा च पंचैव तिर्यग्रेखा तथैव च पा ॥क्रांति साम्यं तु वैधृतं च भाष्ये पीड्यंते तु पीडकं॥ ८७॥

टी॰ क्रांतिसाम्यका प्रकार तीनिरेखा उर्ध्व और तीनि तिरछा और मध्यके रेखापर मीन के मध्ये व्यापक करना ऐसा रेखा तिर्यक् सूर्य चंद्र क्रांति साम्य है



एकार्गल॥ ॥लिखेदूर्ध्वगतामेकांतिर्यग्रेखास्त्रयोदश।।यत्रखार्जूरिकेचक्रेकथितंमूर्ध्निविन्यसेत् ८९

टी० एकरेखासूधीकरना उसपर१३रेखाआडीकरनतबयहखार्जूरचक्रहोताहै उसपरअश्विनीनक्षत्रसेन्यासकरना —

अन्यमत॥ ॥तत्रैकरेखागतयोःसूर्यचंद्रमसोर्मिथः॥एकार्गलोदृष्टिपातश्चाभिजिद्वर्जितानिवै ९०

टी० यहचक्रमेएकरेखापरसूर्य औरचंद्रमाहोयतो एकार्गलदृष्टिपातहोताहै परंतुअभिजित्कादृष्टिमेत्यागकरना —

अन्यमत॥ ॥व्याघातगंडव्यतिपातपूर्वमूलांत्यवज्रेपरिघातिगंडे॥एकार्गलाख्योह्यभिजित्समेतोदोषःशशीचेद्विषमर्क्षगोऽर्कात्॥९१॥ ९२॥ ॥

खर्जूरैकार्गल चक्रम्

	१
२७	२
२६	३
२५	४
२४	५
२३	६
२२	७
२१	८
२०	९
१९	१०
१८	११
१७	१२
१६	१३
१५	१४

टी० व्याघातगंड व्यतीपात इस्केपूर्वमेपात शुभ अंत्यमेअशुभ शूल वैधृति परिघ वज्र अतिगंडइस्केअंत्यमेपात होताहै सो अशुभएकार्गलहोताहै परंतु अभिजित्सहित सूर्यसेचंद्रमाविषमराशीमे होयतोदोषितहोताहै व्याघातादिदुष्टयोगकेदिन सूर्यनक्षत्रसेदिननक्षत्र अभिजित् सहितविषमसंख्याहोयतोदोषएकार्गलजानना — —

अन्यमत॥ विरुद्धनामयोगेषुसाभिजिद्विषमर्क्षगः॥अर्कादिंदुस्तदायोगोनिंद्यएकार्गलाभिधः॥

टी० दुष्टनामयोगमे अभिजित्सहितचंद्रमासूर्यसेविषमहोयतोनिंदितएकार्गलहोताहैसोशुभकर्ममेत्यागकरना इसयोगकेअंतमेजोनक्षत्रसोपातसंज्ञकहोताहै —

जामित्रदोष॥ ॥लग्नेंद्वोर्नास्तगःपापस्तत्तुल्यांशेयदिस्थितः॥ तदाजामित्रदोषःस्यान्नहिन्यूनाधिकांशके॥९३॥क्रूरोवायदिवासौम्योलग्नाच्चंद्राच्चखेचरः